द्वितीय अध्यायः

1. भट्टिकाव्यम् के कृत-प्रत्ययान्त शब्दों का संख्या निर्धारण, वर्गीकरण, अर्थ निर्धारण एवं व्युत्पत्ति प्रदर्शन

प्रथम सर्ग

अभून्नृपः .... स्वयम्।।1।।

1. **विबुधसखः** –विबुध्यन्त इति विबुधाः। (वि–बुध्+क) 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः'[1] सूत्र से 'वि' उपगर्सपूर्वक 'बुध्' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।
2. **परन्तपः** –परांस्तापयतीति परन्तपः। (पर–ताप्+खच्) 'द्विषत्परयोस्तापे'[2] सूत्र से 'पर' उपसर्गपूर्वक 'ताप्' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'खच्' प्रत्यय।
3. **नृपः**–नृन् पातोति। (नृ + पा + क) 'आतोऽनुपसर्गे कः'[3] सूत्र से 'नृ' शब्द से 'पा रक्षणे' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।
4. **वरः**–ब्रियते इति। (वृञ् + अप्) 'ग्रहवृद्दनिश्चिगमश्च'[4] सूत्र से 'वृञ् वरणे' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय।
5. **श्रुतः**–श्रूयन्त इति श्रुतानि वेदादिशास्त्राणि। (श्रु + क्त) 'निष्ठा'[5] सूत्र से 'श्रु' धातु से 'कर्म' अर्थ में क्त प्रत्यय।
6. **अन्वितः**–(अनु–इण्+क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में विद्यमान 'अनु' उपसर्गपूर्वक 'इण' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

सोऽध्यैष्ट .... न्यवधीदरींश्च।।2।।

7. **वेदान्**–विदन्ति एभिधर्ममिति वेदास्तान्। (विद् + घञ्) 'हलश्च'[6] सूत्र से 'विद् ज्ञाने' धातु से 'करण' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।
8. **समूलघातम्**–समूलं हत्वा इति। (समूल–हन् + णमुल्) 'समूलाऽकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः'[7] सूत्र से 'हन हिंसागत्याः' धातु से 'कर्त्तां अर्थ में 'णमुल्' प्रत्यय। '
9. **गुणैः**–गुण्यन्ते इति गुणाः। (गुण् + घञ्) 'अकर्तरि च कारकेऽसंज्ञायाम्'[8] सूत्र से 'गुण आमन्त्रणे' धातु से 'भाव/संज्ञा' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

वसूनि .... निरास्थत् ।।3।।

10. **गोत्रम्**–गां (पृथ्वीं) त्रायन्ते इति गोत्रम्। (गो + त्रा + क) 'आतोऽनुपसर्गे कः'[9] सूत्र से 'गो' पद पूर्व में रहने पर 'त्रैङ् पालने' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'क' प्रत्यय।

11. **गोत्रभिदा**–गोत्रान् भिनत्तीत गोत्रभित् 'सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिद्जिनी राजाम्पसर्गेऽपिक्विप्'[10] (गोत्र + शस्, भिद् + क्विप्) सूत्र से 'भिद्' 'धातु से' 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्विप्' प्रत्यय का सर्वापहारी लोप। प्रातिपदिक के कारण 'टा' विभक्ति।

12. **सर्वेषुभृतां**–इषून्बिभ्रतीति इषुभृतः। (इषु + डुभृञ् , तुक् + क्विप्) 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्त'[11] सूत्र से 'इषु' उपपद पूर्वक 'डुभृञ् धारणपोषणयो' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्विप्' प्रत्यय।

पुण्यो .... वह्निरभिप्रवीतः।।4।।

13. **पुण्यः**–पुनातीति पुण्यः। (पूञ् + णुक् + यत्) औणादिक यत् प्रत्यय 'पुञ् पवने' धातु से करने पर। णुक् आगम और ह्रस्व।

14. **महाब्रह्मसमूहजुष्ट**–महाब्रह्माणां समूहः (महाब्रह्मसमूहः), तेन जुष्टः। (जुष् + क्त) 'निष्ठा' सूत्र से 'जुषी प्रीतिसेवनयोः' धातु से 'भाव' और कर्म अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

स पुण्यकीर्तिः .... ब्रह्मभिरिद्धबोधेः।।5 ।।

15. **प्रतिमा**–तुल्यते इति प्रतिमा। (प्रति + माङ् + क) 'आतश्चोपसर्गे'[12] सूत्र से 'प्रति' उपसर्गपूर्वक 'माङ् माने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

16. **पुण्यम्**–पूयतेऽनेनेति। (पू + यत्) 'पूङो यण्णुग्घ्रस्वश्च'[13] सूत्र से 'पूञ् पवने' धातु से करण अर्थ में 'यत्' प्रत्यय एवं णुगागम तथा धातु को ह्रस्व।

17. **लोकः**–(लोक् + घञ्)। 'अकर्तरि च कारकेऽसंज्ञायाम्'[14] सूत्र से 'लोकृ' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

18. **स्थितः**–(स्था + इट् + क्त)।'गत्यार्थकर्मक-श्लिष-शीङ-स्था-ऽऽस-वस-जन-रुह जीर्यतिभ्यश्च'[15] सूत्र से भूतकाल अर्थ में विद्यमान 'स्था' धातु से 'कर्त्ता/भाव/कर्म अर्थ में' 'क्त' प्रत्यय।

19. **नाकसदां**–नाके सीदन्तीति, नाकसदस्तेषाम्। (नाक + षद्लृ + क्विप्) 'सत्सूद्विष-दुहदुहयुजविदभिदच्छिद्जिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्'[16] सूत्र से 'षद्लृ' विशरणगत्यवसादनेषु इस अर्थ में 'षदलृ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्विप्' प्रत्यय।

20. **सन्तपर्णः**–सन्तर्पयति प्रीणयतीति। (सम् – तृप् + ल्युट्) सूत्र से 'तृप्' धातु से 'भाव' अर्थ में 'ल्युट्'[17] प्रत्यय। 'युवोरनाकौ'[18] सूत्र से 'यु' को 'अन्' आदेश, 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से गण।

21. **वरेण्यः**–ब्रियते इति। (वृञ् + एण्यः) 'वृञ् एण्य' सूत्र से 'वृञ् वरणे' धातु से 'एण्य' प्रत्यय।

22. **सुखाम्**–सुखायतीति सुखा। (सुख + अच् + टाप्) 'नन्दिग्रहिपचादिभ्योः ल्युणिन्यचः'[19] सूत्र से 'सुख तत्क्रियायाम्' धातु से पचादि अर्थ होने पर 'कर्त्ता' अर्थ मं 'अच्' प्रत्यय। 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय।

निर्माणदक्षस्य .... मघोनः ।।6 ।।

23. **निर्माण**–(निर् + मा + क्त)। 'ल्युट च' सूत्र से 'निर्' उपसर्गपूर्वक करण अर्थ में विद्यमान 'मा' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय।

24. **स्फुरन**–(स्फुर + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[20] सूत्र से 'स्फुर्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

25. **स्थिता**–विद्यमाना इव भाति। (स्था + इट् + क्त) 'गत्यार्थाकर्मक-श्लिष-शीङ.-स्या-ऽऽस-वस-जन-सह-जीर्यतिभ्यश्च'[21] सूत्र से भूतकाल अर्थ में विद्यमान स्था धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय। 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय।

26. **पुरम्**–नगरीम्। (पृ + क) 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः[22] कः' सूत्र से पृ धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

सद्रत्नमुक्ताफलवज्रभाञ्जि .... यस्याम्।।7।।

27. **भाञ्जि**–(भज्+ण्वि)। 'भजो ण्विः'[23] सूत्र से 'कर्ता' अर्थ में 'ण्वि' प्रत्यय।

28. **गृहाणि**–गृह्णाति धान्यादिकमिति। (ग्रह् + क) 'गेहे कः' सूत्र से 'ग्रह उपादाने' इस अर्थ में 'ग्रह' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

अन्तर्निविष्टोज्ज्वलरत्नभासो .... गृहेभ्यः।।8।।

29. **अभिनिष्पतन्त्यः**–अभिनिष्पतन्तीति। (अभि + निस् + पत् + शतृ) 'लट्ः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[24] सूत्र से ' 'कर्त्ता' अर्थ में शतृ प्रत्यय। स्त्रीलिंग में 'उगितश्च'[25] सूत्र से ङीप् (ई) प्रत्यय। प्रथमा बहुवचन।

30. **गङ्गा**–गमयति = प्रापयति ज्ञापयति वा भगवत्पदं या शक्तिः। यद्वा गम्यते प्राप्यते ज्ञाप्यते मोक्षर्थिभिर्या। (गम्लृ गतौ + गन् + टाप्) 'गन् गम्यद्योः' सूत्र से 'गन्' प्रत्यय। 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से स्त्रीत्व विवक्षा से 'टाप्' प्रत्यय।

31. **प्रतिमा**–तुल्यते इति प्रतिमा। (प्रति + माङ् + क) 'आतश्चोपसर्गेक'[26] सूत्र से प्रति उपसर्गपूर्वक 'माङ् माने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

32. **गृहेभ्यः**–गृह्णाति धान्यादिकमिति। (ग्रह् + क) 'गेहे कः'[27] सूत्र से 'ग्रह उपादाने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

धर्म्यासु .... तिसृषूत्तमासु।।9।।

33. **यशस्करीषु**– (यशः + कृ + ट)। 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु'[28] सूत्र से 'कर्म' उपपदपूर्वक 'कृञ्' धातु से 'हेतु' अर्थ में 'ट' प्रत्यय। 'टिड-ढाणञ्-द्वयसज-दध्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः' सूत्र से स्त्रीत्व में ङीप् प्रत्यय।

34. **लोकः**– (लोकृ + घञ्)। 'अकर्तरि च कारकेऽसंज्ञायाम्' सूत्र से 'लोकृ' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

35. **विद्यासु**–विदन्त्याभिधर्माऽधर्मो इति (विद् + क्यप् + टाप्) 'संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ्शीङ्भृञिणतः'[29] सूत्र के 'करण' अर्थ में 'क्यप्' प्रत्यय।

36. **विद्वान्**–वेत्तीति विद्वान्। (विद+शतृ < वसु) 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[30] सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय। 'विदेः शतुर्वसुः' सूत्र से 'शतृ' को 'वसु' आदेश। विकल्प से।

पुत्रीयता .... पुरमृष्यशृङ्गः ।। 10 ।।

37. **पुत्रीयता**–आत्मनः पुत्रम् इच्छित पुत्रीयति। पुत्रीयतीति पुत्रीयन् तेन। (पुत्र + क्यच् + शतृ + टा) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

38. **विद्वान्**–वेत्तीति विद्वान्। (विद + शतृ – वसु) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय। 'विदेः शतुर्वसुः' सूत्र से 'शतृ' को 'वसु' आदेश।

39. **पुरम्**–(पुर् + क)। 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः'[31] सूत्र से पृ धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

40. **विपक्त्रिमः**–विपाकेन निवृत्तम। (वि + पच् + क्त्रि) 'ड्वितः क्त्रिः'[32] सूत्र से 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'डुपचष् पाके' धातु से 'भाव' अर्थ में 'क्त्रि' प्रत्यय। 'क्त्रेर्मम्नित्यम्' सूत्र से 'मप्' प्रत्यय।

41. **ज्ञान**–(ज्ञा + ल्युट्)। 'ल्युट् च' सूत्र से 'ज्ञा' धातु से 'भाव' अर्थ में 'ल्युट्' प्रत्यय।

42. **मान्यः**–माननीयः (मानाऽर्ह इत्यर्थः)। (मन् + ण्यत्) 'अर्हे कृत्यतृचश्च' सूत्र से मन् शब्द से 'अर्हार्थ' में 'ऋहलोर्ण्यत्'[33] सूत्र से भाव और कर्म अर्थ में 'ण्यत्' प्रत्यय। 'अत उपधायाः सूत्र से वृद्धि।'

ऐहिष्ट .... सुताऽनुबन्धम् ।। 11 ।।

43. **कारयितुम्**–सम्पादयितुम्। (कृ + णिच् + तुमुन्)। 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्'[34] सूत्र से 'भविष्यतकाल' में 'कृ' धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय।

44. **कृतः**–(कृ + क्त)। 'निष्ठा'[35] सूत्र से भूतकाल अर्थ में विद्यमान 'कृ' धातु से कर्म अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

45. **नृपः**–नृन् पातीति। (नृ + पा + क)

46. **ज्ञातम्**– (ज्ञा + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में विद्यमान 'ज्ञा' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

47. **सुतानुबन्धम्**–सुताननुबध्नातीति। (सुताऽनुबन्ध् + अण्) 'कर्मण्यणम्'[36] सूत्र से 'कर्म' अर्थ में अण् प्रत्यय।

रक्षांसि .... नृपतेरमार्गीत् ।। 12 ।।

48. **वरम्**–ब्रियते इति। (वृञ् + अप्) 'ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च'[37] सूत्र से 'वृञ् वरणे' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय।

निष्ठां गते ....सुपुत्रान्।।13।।

49. **दत्त्रिमः**-दानेन निवृतम्। (दा + क्त्रि + मप्) 'ड्वितःक्त्रिः'[38] सूत्र से 'डुदाञ् दाने' धातु 'भाव' अर्थ में 'क्त्रिः' प्रत्यय, 'क्त्रेमम्नित्यम्'[39] सूत्र से मप् प्रत्यय।

50. **विहित्रिमे**-विशिष्टपूर्वकेण निर्वृत्तम्। (वि + क्त्रि + मप्) 'ड्वितः क्त्रि' और 'क्त्रेर्मम्नित्यम्'[40] सूत्र से 'भाव' अर्थ में क्रमशः 'क्त्रि' और 'मप्' प्रत्यय।

51. **कर्मणि**-क्रियते यत् तत् कर्म। (कृ + मनिन्) 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' सूत्र से 'कृ' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'मनिन्' प्रत्यय।

52. **निष्ठाम्**-समाप्तिम्। (नि + स्था + क) योग विभाग वाले 'सुपि च'[41] सूत्र से 'नि' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु से परे 'क' प्रत्यय। 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से स्त्रीत्व विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय।

53. **गते**-गम् + क्त। 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में विद्यमान 'गम्' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

54. **प्रसोतुम्**-प्रसवितुम् (जनयितुम्)। (प्र + षूङ् + तुमुन्) 'समानकर्तृकेषु तुमुन'[42] सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'षूङ् प्राणिगर्भविमोचने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ मं 'तुमुन्' प्रत्यय।

आर्चीद् .... वरिष्ठः ।।15।।

55. **उदेजयान्** -उदेजयन्तीति। (उत् + एज् (णिच्) + श)। 'अनुपसर्गाल्लिम्यविन्द-धारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च'[43] सूत्र से 'एजृ कम्पने' धातु से कर्ता अर्थ में 'श' प्रत्यय।

56. **विन्दान्**-विन्दन्तीति विन्दाः। (विद् + श) 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्द-धारिपारि-वेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च'[44] सूत्र से 'विद्लृ लाभे' धातु से कर्ता अर्थ में 'श' प्रत्यय। 'शे मुचादीनाम्' सूत्र से 'नुम्' आगम।

वदोऽङ्गवास्तैरखिलोऽध्यगायि .... अध्यवात्सुः।।16।।

57. **वेदः**- (विद् + घञ्)।'हलश्च' सूत्र से 'विद् ज्ञाने' धातु से 'करण' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

58. **जित्वराणि**-जयन्ति तच्छिलानि इति। (जि (तुक्) + क्वरप्) 'जि जये' धातु से ताच्छिल्य अर्थ में 'इण्नरजिसर्तिभ्यः क्वरप्' सूत्र से 'क्वरप्'[45] प्रत्यय।

ततोऽभ्यगाद् .... मधुपर्कपाणि ।।17।।

59. **वरीतुम्**-स्वीकृतुं गृहीतुम् वा। (वृञ् + तुमुन्) 'वृञ् वरणे' धातु से 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्'[46] सूत्र से भविष्यतकाल अर्थ में 'तुमुन्' प्रत्यय।

कौसल्ययाऽसावि .... लक्ष्मणेन।। 14।।

60. **रामः**-रमन्ते योगिनः अस्मिन्निति रामः। (रम् + घञ्) 'हलश्च'[47] सूत्र से 'रमु क्रीडायाम्' धातु से अधिकार अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

61. **शत्रुघ्नः**–शत्रून् हन्तीति शत्रुघ्नः। (शत्रु – हन् + क) 'कप्रकरणे–मूलविभुजादिभ्यः उपसंख्यानम्' सूत्र से 'शत्रु' उपपदपूर्वक 'हन्' धातु से 'क' प्रत्यय।

ऐषीः .... नृपस्तच्छिवमित्यवादीत्।। 18।।

62. **जन्मः**–जायते इति जन्मः। (जन् + मनिन्) 'सार्वधातुभ्योमनिन्' सूत्र से 'कर्म' अर्थ में 'जन्' धातु से 'मनिन्' प्रत्यय।

63. **नृपः**–नृन् पातीति। (नृ + पा + क) 'आतोऽनुपसर्गे कः'[48] सूत्र से 'नृ' शब्द से 'पा रक्षणे' धातु से 'क' प्रत्यय।

आख्यन्मुनिस्तस्य .... लक्ष्मणेन।। 19।।

64. **रामः**–रमन्ते योगिनः अस्मिन्निति रामः। (रम् + घञ्) 'हलश्च' सूत्र से 'रमु क्रीडायाम्' धातु से 'भाव' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

65. **निराकरिष्णुः**–निराकरणशीलः। (निराकृ + इष्णुच्) 'अलङ्कृञ् निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरूच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच्'[49] सूत्र से 'कृ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'इष्णुच्' प्रत्यय।

स शुश्रुवांस्तद्वचनं .... वचस्तापसकुञ्जरेण।। 20।।

66. **असहिष्णु**–न सहिष्णु। (नञ् + सह् + इष्णुच्) 'अलङकृञ् निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरूच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच्'[50] सूत्र से 'सह्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'इष्णुच्' प्रत्यय।

67. **क्षितिपः**–क्षितिं पतीति क्षितिपः। (क्षितिम् + पा + क) 'आतोऽनुपसर्गे कः'[51] सूत्र से 'पा रक्षणे' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

68. **शुश्रुवान्**–श्रुतवान् (सन्)। (श्रु + क्वसु) 'भाषायां सदवसश्रुवः'[52] सूत्र से 'श्रु श्रवणे' धातु को विकल्प से 'लिट्' (परोक्षभूत) के स्थान में 'क्वसु' आदेश।

मया .... स्वसूनुम्।। 21।।

69. **धर्मेषु**–धरति लोकान् ध्रियते पुण्यात्मभिरिति वा। (धृ + मन्) 'अतिस्तुहुम्रिति मन्' सूत्र से 'कर्ता' अथवा 'कम' अर्थ में मनन् प्रत्यय। तेषु धर्मेषु।

70. **भयेषु**–भीतिषु। (भी + अच्) 'भयादीनामुपसंख्यानम्' सूत्र से 'भी' धातु से 'भाव' अर्थ में अच् प्रत्यय। तेषु भयेषु।

घानिष्यते .... भारमग्रयम्।। 22।

71. **भारम्**– (भृ + घञ्)। 'भावे'[53] सूत्र से 'भृ' धातु से 'घञ्' प्रत्यय।

क्रुध्यन्कुलं .... सुतस्य।। 23।।

72. **क्रुध्यन्**-क्रोधं कुर्वन्। (क्रुध् + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमा- समानाधिकरणे'[54] सूत्र से 'क्रुध क्रोधे' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

73. **यास्यन्**-गमिष्यन् (या + (स्य) + शतृ) 'तौ सत्'[55] सूत्र से 'या प्रापणे' धातु से 'लृट' लकार अर्थ में 'लृटः सद्वा'[56] सूत्र से 'क्रियार्थक क्रिया' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय तथा 'स्यतासी लृलुटोः'[57] सूत्र से स्य आगम।

74. **नृपः**-'**नृन् पातीति नृपः**'। (नृप् + ङस्) 'आतोऽनुपसर्गे कः' सूत्र से नृप् कर्म उपपद रहते 'पा' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

आशीर्भिरभ्यर्च्य .... कुमारः ।। 24 ।।

75. **अभ्यर्च्य**-पूजयित्वा (सत्कृत्येत्यर्थः) (अभि + अर्च + क्त्वा < ल्यप्) 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले'[58] सूत्र से 'अर्च' धातु से 'भाव' अर्थ मं क्त्वा प्रत्यय। 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से समास के पश्चात् क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय।

76. **प्रीतः**- (प्री + क्तः)। 'निष्ठा' सूत्र से 'भूतकाल' अर्थ में 'प्री' धातु से 'कर्म' अर्थ में क्त प्रत्यय।

77. **प्रष्ठम्**-प्रतिष्ठते अग्र इति प्रष्ठः। (प्र-स्था + क) 'सुपि स्थः'[59] सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय। 'पृष्ठोग्रगामिनि' सूत्र से 'सकार' को मूर्धन्य आदेश।

प्रयाष्यतः .... लक्ष्मणोऽभूत् ।।25 ।।

78. **जिष्णोः**-जयशीलो जिष्णुस्तस्य। (जि + ग्स्नुः) 'ग्लाजिथश्च ग्स्नुः'[60] सूत्र से 'जि जये' धातु स 'कर्त्ता' अर्थ में 'ग्स्नु' प्रत्यय

79. **रोचिष्णुमुखस्य**-रोचनशीलं रोचिष्णु तत् मुखं यस्य स। (रुच् + इष्णुच्) 'अलङ्कृञ् निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच्'[61] सूत्र से 'रूच्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'इष्णुच्' प्रत्यय।

80. **धृष्णुः**-धृष्णोतीति। (धृष् + क्नु) 'त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः'[62] सूत्र से ' 'धृष् धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्नु' प्रत्यय।

81. **सध्र्यङ्**-सहाऽञ्चतीति सध्र्यङ्। (सह् + अञ्च् + क्विन्) 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च'[63] सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में 'अञ्चू' धातु से 'क्विन्' प्रत्यय। 'सहस्य सध्रिः' सूत्र से 'सह' को 'सध्रि' आदेश।

82. **रतः**- (रम् + क्त)। 'गत्यार्थाकर्मक-श्लिष-शीङ्-स्था-ऽऽस-वस-जन-रूह-जीर्यतिभ्यश्च'[64] सूत्र से 'रम्' धातु से 'कर्त्ता/भाव/कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

83. **श्रेयसि**-श्रि + यत्। 'अचोयत्' सूत्र से 'श्रि' धातु से कर्म/भाव अर्थ में 'यत्' प्रत्यय।

इषुमति .... रूदन्माङ्गलिक्यः ।। 26 ।।

84. **दन्दशूकान्**–गर्हितं दशन्तीति। (दश् + ऊक्) 'यजजपदशां यङ्ः'[65] सूत्र से दश् धातु से 'ताच्छीत्य' अर्थ में 'ऊक्' प्रत्यय करने पर।

85. **जिघांसौ**–हन्तुमिच्छुः जिघांसुः। (हन् + (सन्) + उ) 'सनाशंसभिक्ष उः'[66] सूत्र से हन् धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'उ' प्रत्यय।

86. **असह्यम्**– (असहनीयम् न सह्यम्) (न + सह् + यत्) 'शकिसहोश्च'[67] सूत्र से सह धातु से कर्म/ भाव अर्थ में 'यत्' प्रत्यय।

87. **मुष्ठिपीडम्**–मुष्टया मुष्टिना वा पीड़ा यस्मिन् कर्मणि तद्। 'सप्तम्यां चोपपीड–रूधकर्षः'[68] सूत्र से 'पीड अवग्राहने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'णमुल्' प्रत्यय।

88. **दधाने**–धारयति। (धा + शानच्) 'लट शतृशानचावप्रथमा– समानाधिकरणे'[69] सूत्र से 'डुधाञ् धारण–पोषणयोः' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय।

89. **व्रजति**–व्रजतीति व्रजन् तस्मिन्। (व्रज् + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाऽधिकरणे' सूत्र से 'व्रज गतौ' धातु से 'शतृ' प्रत्यय।

अथ .... पक्षिणश्चाऽनुकूलाः ।। 27 ।।

90. **अभिमतफलशंसी**–अभिमतं फलं शंसति तच्छीलः। (अभिमतफल–शंस् + णिनि) 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये'[70] सूत्र से 'सुबंत' उपपदपूर्वक 'शंस्' धातु से 'ताच्छील्य' अर्थ में 'णिनि' प्रत्यय।

द्वितीयः सर्ग

वनस्पतीनां .... शरदं ददर्श।।1 ।।

91. **कान्तिभृतम्**–कान्तिं बिभ्रतीति। (कान्तिभृत् + क्विप्) 'क्विप्[71] च' सूत्र से 'कान्ति' उपपदपूर्वक 'भृ' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'क्विप्' प्रत्यय।

92. **निर्याय**–निर्गत्य। (निर् + या् + क्त्वा < ल्यप्) 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले'[72] सूत्र से 'निर्' उपसर्गपूर्वक भाव अर्थ में 'या' धातु से क्त्वा' प्रत्यय। 'समासऽनञ्पूर्वक क्त्वो ल्यप्' सूत्र से क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय।

93. **श्रियम्**–श्रयति हरिं तच्छीलेति श्रीः। (श्रिञ् सेवायाम्) (श्रि + क्विप्) 'क्विब् वचि–प्रच्छ्या–यतस्तु–कटप्रु–जु–श्रीणां दीर्घोऽसम्प्रसारणं च' वार्तिक द्वारा 'क्विप्' प्रत्यय। तं श्रियम्।

94. **दधानाम्**–धारयन्तीम्। (धा + शानच्) 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[73] सूत्र से 'डुधाञ् धारण–पोषणयोः' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में शानच् प्रत्यय। 'अजाद्यतष्टाप्'[9] सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय, अम् कार्य।

तरङ्गसङ्गाञ्चपलैः .... रेजुस्ताम्रोत्पलान्याकुलषट्पदानि।।2 ।।

95. **तरङ्गसङ्गात्**-तरङ्गाणां सङ्गः। (सम् + गम् + क्त) 'गत्यर्थाकर्मक-श्लिष-शीङ्-स्था-ऽऽस-वस-जन-रूह-जीर्यतिभ्यश्च'[74] सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'गम्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में क्त प्रत्यय।

96. **ज्वाला**-(ज्वल् + ण)। 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः'[75] सूत्र से 'ज्वलदीप्तौ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'ण' प्रत्यय। 'अत उपधाया' सूत्र से उपधा वृद्धि। टाप् प्रत्यय।

97. **दधन्ति**-धारयन्ति। (धा + शत्) 'लटः शतृशानचावप्रथमसमानाधिकरणे' सूत्र से 'डुधाञ् धारण पोषणयोः' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

98. **दीप्तः**-ज्वलितः। (दीप् + क्त) 'निष्ठा'[76] सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'दीप्' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

बिम्बागतैस्तीरवनैः .... स्थलपद्महासैः।। 3।।

99. **समृद्धिम्**-सम्यक् ऋद्धिः। (सम् + ऋतु + क्तिन्) 'स्त्रियां क्तिन्'[77] सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक ऋतु धातु से स्त्रीलिंग 'भाव' अर्थ में क्तिन् प्रत्यय।

100. **उपहृताम्**-अहरत् (उप + हृ + क्त)। उप उपसर्ग पूर्वक हृ धातु से भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय। षष्ठी बहुवचन।

101. **विलोक्य**-वीक्ष्य। (वि + लोकृ (दर्शने) + क्त्वा < ल्यप्) 'समासऽनञ्पूर्वेक्त्वो ल्यप्'[78] सूत्र से 'वि' उपसर्गपूर्वक 'लोकृ दर्शने' धातु से 'भाव' अर्थ में 'क्त्वा' के स्थान में 'ल्यप्' प्रत्यय।

102. **सरोजम्**-सरसि जातम्। (सरस् - ङि, जन् + ड) 'सप्तम्यां जनेर्डः'[79] सूत्र से 'जन्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'ड' प्रत्यय।

वनानि .... लक्ष्मीमालोकयाञ्चक्रुरिवादरेण।। 5।।

103. **नेत्रम्**- (नी + ष्ट्रन)। 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसि-चमिहपतदशनहः करणे'[80] सूत्र से 'करण' अर्थ में 'नी' धातु से 'ष्ट्रन' प्रत्यय।

प्रभातवाताहतिकम्पिताकृतिः .... सङ्गमम्।। 6।।

104. **कम्पिताः**- (कम्प् + इट् + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'कम्प्' धातु से में 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

105. **आकृतिः-(आङ् + कृ + क्तिन्)**। 'स्त्रियां क्तिन'[81] सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक, 'कृ' धातु से स्त्रीलिङ्ग विवक्षा में 'भाव' अर्थ में 'क्तिन्' प्रत्यय।

106. **विग्रहम्- (वि + ग्रह् + अप्)** 'गृहवृदृनिश्चिगमश्च'[82] सूत्र से व्युपसर्गपूर्वक 'ग्रह्' धातु से अधिकरण अर्थ में अप् प्रत्यय।

107. **कुपिताः इव**-क्रुद्धा इव। (कुप् + क्त + टाप्) 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'कुप्' धातु से कर्म अर्थ में 'क्त' प्रत्यय। 'अजाद्यतस्टाप्' सूत्र से स्त्रीत्व विवक्षा में टाप प्रत्यय।

108. **सङ्गमम्** –अन्य संगमम्। (सम् – गम् + अप्)। 'ग्रहवृद्निश्चिगमश्च'[83] सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'गम्' धातु से 'अधिकरण' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय।

दत्तावधानं .... मृगावित् ।। 7 ।।

109. **दत्तम्** – (दा + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से विद्यमान 'दा' धातु से 'कर्म' अर्थ में क्त प्रत्यय।

110. **मधुलेहिनः**–मधु लिहन्तीति। (मधु – लिह् + णिनि) 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये'[84] सूत्र से 'मधु' उपपदपूर्वक 'लिह् आस्वादने' धातु से 'ताच्छील्य' अर्थ में 'णिनि' प्रत्यय।

111. **गीतः**–गानम् (गीयते यत् तत् गानम्)। (गै + क्त) 'निष्ठा'[७] सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'गै' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

112. **जिंघासु**–हन्तुमिच्छुः जिघांसुः। (हन् + सन् + उ) 'सनाशंसभिक्ष उः'[85] सूत्र से सन्नत 'हन्' धातु से कर्ता (ताच्छील्य) अर्थ में 'उ' प्रत्यय।

113. **आकर्णयन्**–शृण्वन्। (तदासक्तचित्तत्वादिति भावः)। (आङ् – कर्ण + शतृ) 'लक्षणहित्वोः क्रियायाः'[86] सूत्र से आङ् उपसर्गपूर्वक 'कर्ण' शब्द से 'हेतु' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

114. **मृगावित्**–मृगान् विध्यतीति (व्याधः)। (मृग् – व्यध् + क्विप्) 'क्विप् च'[87] सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में उपपदपूर्वक 'व्यध् ताडने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्विप्' प्रत्यय। क्विप् का सर्वापहारिलोप।

115. **समाधि** – (सम् + आङ् + धा + कि)। सम्, व आङ् उपसर्गपूर्वक 'धा' धातु से 'उपसर्ग धो किः'[88] सूत्र से 'कि' प्रत्यय।

गिरेनितम्बे .... लक्ष्मीम्।। 8 ।।

116. **विभिन्नम्**–विस्तारितम्। (वि – भिद् + क्त) 'निष्ठा'[ॅ] सूत्र से भूतकाल अर्थ में व्युपसर्गपूर्वक 'भिदिर् द्वैधीकरणे' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

117. **सरित्** –सरति इति सरित्। (सृ + इति) 'हृसृरूहियुधिभ्यः[89] इति' सूत्र से 'सृ गतौ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'इति' प्रत्यय।

118. **आदधानम्**–(आङ् – धा + शानच्) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[90] सूत्र से आङ् उपसर्गपूर्वक 'डुधाञ् घारण–पोषणयोः' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय।

गर्जन् .... प्रतर्कयन्नन्यमृगेन्द्रनादान्।। 9 ।।

119. **गर्जन**–शब्दं कुर्वन्। (गर्ज् + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'गर्ज्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

120. **निशम्य** –शमित्वा। (नि – शम् + क्त्वा < ल्यप्) 'समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वो ल्यप्'[91] सूत्र से 'नि' उपसर्गपूर्वक 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय।

121. **क्रमितुम्**–उत्पतितुम्। (क्रम् (इट्) + तुमुन्) 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्'[92] सूत्र से 'क्रम्' धातु से 'भविष्यतकाल के' अर्थ में 'तुमुन्' प्रत्यय।

122. **प्रतर्कयन्**–(प्र + तर्क् + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[93] सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'तर्क्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

अदृक्षताऽम्भांसि .... सुगन्धस्तेनाऽरविन्दव्यतिषङ्गवांस्च ।। 10 ।।

123. **वान्**–वातीति वान्। (वा + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'वा गति गन्धनयोः' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

124. **गन्धवहः**–वहतीति वहः। (वह् + अच्) 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से 'वह्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय।

लताऽनुपातं .... आस्त ।। 11 ।।

125. **स्मयमानः**–स्मयते इति। (स्मि + शानच्) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमाना–धिकरणे' सूत्र से 'स्मिङ् ईषद्धसने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय। 'आने मुक्' सूत्र से 'आन' परे 'मुक्' आगम्।

126. **लताऽनुपातम्**–लता अनुपात्य अनुपात्य। (लता अनुपत् + णमुल्) 'विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यसमानाऽऽसेव्यमानयोः'[94] सूत्र से 'अनु' उपसर्गपूर्वक 'पत्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'णमुल्' प्रत्यय।

127. **चारूशिलोपवेशम्**–चारूशिलामुपविश्य उपविश्य। (चारूशिला उप – विश् + णमुल्) 'विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यामानाऽऽसेव्यमानयोः'[95] सूत्र से 'चारूशिला' उपपदपूर्वक, 'उप' उपसर्गपूर्वक 'विश्' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'णमुल्' प्रत्यय।

तिग्मांशु .... संभृतानि ।। 12 ।।

128. **द्रुतानि**–क्षरितानि (द्रु + क्त + जस्) द्रु धातु से भूतकाल में 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय।

129. **सम्भृतानिःसंच्चितानि**– (सम् + भृ + क्त + जस्)। सम् उपसर्ग पूर्वक भृ धातु से 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय

130. **गभस्तिधाराभिः**– (धारि (धृ + णिच्) + अङ् + टाप्)। णिजन्त 'धारि' धातु से 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्'[96] सूत्र से स्त्रीलिङ्ग 'भाव' अर्थ में 'अङ्' प्रत्यय।

दिग्व्यापिनीः .... वितृणाऽन्तरालाः ।। 13 ।।

131. **दिग्व्यापिनीः**–दिशोः व्याप्नुवन्तीति तच्छीलाः दिग्व्यापिन्यस्ताः। (दिश् – वि – आप्त + णिनि + ङीप्) 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये'[97] सूत्र से दिश् उपपदपूर्वक 'व्याप्त्' धातु से 'ताच्छील्य' अर्थ में 'णिनि' प्रत्यय। 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय।

132. **लोभनीयाः**–लोभयन्तीति लोभनीयाः। (लुभ् + अनीयर्) 'कृत्यल्युटो बहुलम्'[98] सूत्र से 'लुभ् विमोहने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'अनीयर्' प्रत्यय।

133. **मृजान्वयाः**–मृजया अन्वयो यासां, ताः। (मृज् + अङ् + टाप्) 'षिदभिदादिभ्योऽङ'[99] सूत्र से 'मृजूषशौचाऽलंङ्करणयोः' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अङ' प्रत्यय। 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से टाप प्रत्यय।

134. **स्नेहम्** – (स्निह् + घञ्)। 'भावे'[100] सूत्र से 'स्निह्' धातु से 'भाव' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

135. **पश्यन्** – (दृश् + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'दृश्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में शतृ प्रत्यय। 'घ्राध्मस्थाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदाः'[101] सूत्र 'दृश्' को 'पश्य' आदेश

वियोग .... गोष्ठान्।। 14।।

136. **विहितम्**– (वि – धा + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से 'वि' उपसर्गपूर्वक 'डुधाञ् धारणपोषणयोः' धातु से भूतकाल अर्थ में 'क्त' प्रत्यय। 'दधातेर्हिः'[102] सूत्र से 'धा' को 'हि' आदेश।

137. **नृपः**–नृन् पातीति। (नृ + पा + क) 'आतोऽनुपसर्गे कः'[103] सूत्र से नृन् 'कर्म' उपपद रहते 'पा' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

138. **ददद्भिः**–ददतीति ददतः तै। (दा + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[104] सूत्र से 'डुदाञ् दाने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय। 'भिस्' विभक्ति कार्य।

139. **आहार्यः**–आहर्तुं योग्य आहार्या। (आङ् + हृ + ण्यत्) 'ऋहलोर्ण्यत्'[105] सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'हृ' धातु से 'भाव' और 'कर्म' अर्थ में 'ण्यत्' प्रत्यय।

140. **शोभा**–शोभन्तेऽनया। (शुभ् + घञ् + टाप्) 'अकर्तरि च कारकेऽसंज्ञायाम्'[106] सूत्र से 'शुभ्' धातु स परे 'करण' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय। 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से स्त्रीत्व विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय।

141. **गोष्ठान्**–गावस्तिष्ठन्त्यत्रेति। (गो + स्था + क) 'सुपि स्थः'[107] सूत्र से गो उपपदपूर्वक 'स्था' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय। 'अम्बाऽम्बगो–भूमिसव्यापाद्वित्रि–कुशेकुशङ्क्वङ्गुमञ्जिपरमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः' सूत्र से षत्व।

स्त्रीभूषणं .... विलोक्य ।। 15।।

142. **चेष्टितम्** –चेष्ट् + क्त। 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'चेष्ट्' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

143. **विश्वासकृतः**–विश्वासं कुर्वन्तीति। (विश्वास अम् + कृ + क्विप्) 'क्विप् च' सूत्र से विश्वास उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्विप्'[108] प्रत्यय। क्विप् का सर्वापहारि लोप। 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम।

144. **विलोक्यः**- (वि – लोकृ (दर्शने) + क्त्वा < ल्यप्) 'समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वो ल्यप्'[109] सूत्र से 'वि' उपसर्गपूर्वक 'लोकृ दर्शने' धातु से 'भाव' अर्थ में 'क्त्वा' के स्थान में ल्यप् प्रत्यय।

विवृत्तपार्श्वं .... तम्।। 16।।

145. **विवृत्त** – (वि – वृत् + क्त)। 'निष्ठा'[110] सूत्र से भूतकाल अर्थ मं 'वि' उपसर्गपूर्वक वृत् धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

146. **दत्तः**- (दा + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से 'डुदाञ् दाने' धातु से 'क्त' प्रत्यय।

विचित्रमुच्चैः .... मृगाणाम्।। 17।।

147. **प्लवमानम्**-प्लवते इति प्लवमानम्। (प्लु + शानच्) 'लटः शतृशानचावप्रथमा-समानाधिकरणे' सूत्र से 'प्लुङगतौ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय।

148. **त्रस्नु**-त्रसनशीलमिति त्रस्नु। (त्रस् + क्नु) 'त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः'[111] सूत्र से 'त्रसी उद्वेगे' धातु से 'कर्त्ता' (तच्छीलादि) अर्थ में 'क्नु' प्रत्यय।

149. **वातमजम्**-वातमजतीति वातमजम्। (वात अम्, अज् + खश्) 'वातशुनी-तिलशर्द्धेष्वजधेट्तुदजहातिभ्यः खश उपसङ्ख्यानम्' वार्तिक से वात् उपपदपूर्वक, 'अज गतौ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'खश्' प्रत्यय। समास के बाद 'अरूर्द्विषदजन्तस्य मुम्' सूत्र से मुम् आगम।

सिताऽरविन्द .... निनादैः।। 18।।

150. **प्रचयेषु** :- (प्र + चि + अच्)। 'एरच्'[112] सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक इकारान्त 'चि' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय। तेषु प्रचयेषु।

151. **लीनाः**- (ली + क्त + टाप्)। 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'ली' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय। 'ल्वादिभ्यः' सूत्र से 'निष्ठा' के तकार को नकार। 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से स्त्रीत्व विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय।

152. **निनादैः**- (नि – नद् + अप्)। 'नौ गदनदपठस्वनः'[113] सूत्र से 'नि' उपपदपूर्वक 'नद्' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय। विकल्प से (निनदः)। पक्ष में 'भावे' सूत्र से 'घञ्' प्रत्यय (निनादः)।

न तज्जलं .... यन्मनः।। 19 ।।

153. **जलम्**-जलति- जोवयति लोकान्। (जल् + अच्) 'नन्दिग्रहि-पचादिभ्योल्युणिन्यचः'[114] सूत्र से 'जल्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय।

154. **पङ्कजम्**-पंके जायति इति पङ्कजम्। (पङ्क+ङि, जन्+ड) 'सप्तम्यां जनेर्डः'[115] सूत्र से 'जन्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'ड' प्रत्यय।

155. **गुञ्जितम्**- (गुञ्ज् + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'गुञ्ज्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

तं यायजूकाः ....जगदर्चनीयम्।। 20 ।।

156. **यायजूकाः**-अत्यर्थ यजनशीलाः यायजूकाः। (यज् + (यङ्) + ऊक) 'यजजपदशां यङः'[116] सूत्र से 'यङन्तात् यजेः' धातु से 'कर्त्ता' (तच्छीलादि) अर्थ में 'ऊक' प्रत्यय।

157. **भिक्षुः**- (भिक्ष् + उ)। 'सनाशंसभिक्ष उः'[117] सूत्र से 'भिक्ष्' धातु से 'कर्त्ता' (ताच्छील्य) अर्थ में 'उ' प्रत्यय।

158. **अर्च्याः** -अर्चितुं योग्या अर्च्याः। (अर्च् + ण्यत्) 'ऋहलोर्ण्यत्'[118] सूत्र से 'अर्च' धातु से 'भाव्' और 'कर्म' अर्थ में 'ण्यत्' प्रत्यय।

159. **अर्चनीयम्**-अर्चितुं योग्यः अर्चनीयः। (अर्च् + अनीयर्) 'अर्हे कृत्यतृचश्च'[119] सूत्र से 'अर्च्' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'अनीयर' प्रत्यय।

160. **यायावराः**-यायायन्ते इति यायावराः। (या (यङ्) + वरच्) 'यश्च यङ्'[120] सूत्र से 'यङन्ताद् या' धातु से 'कर्त्ता' (तच्छीलादि) अर्थ में वरच् 'वरच्' प्रत्यय।

विद्यामथैनं .... यातुधानान्।। 21।।

161. **विद्याम्** :-विदन्ति अनयेति विद्या। (विद् + क्यप्) 'सञ्ज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ्शीङ्भृञिणः'[121] सूत्र से 'विद् ज्ञाने' धातु से 'करण' अर्थ में 'क्यप्' प्रत्यय।

162. **निघातयिष्यन्**-नितरां घातयिष्यतीति। (नि - हन् + शतृ) 'लृटः सद्वा'[122] सूत्र से नि उपसर्गपूर्वक 'हन्' धातु (णिजन्त घाति) क्रियापूर्वक क्रिया अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय। 'स्यतासी लृलुटोः' सूत्र से 'स्य' विकरण।

163. **क्षिप्नुम्** -क्षिपतीति तच्छीलः क्षिप्नुः। (क्षिप् + क्नु) 'त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः'[123] क्नुः सूत्र से 'क्षिप् प्रेरणे' धातु से 'कर्त्ता' (तच्छीलादि) अर्थ में 'क्नु' प्रत्यय।

164. **जयाम्** -जयनं जयः ताम्। (जि + अच् + टाप्) 'एरच्' सूत्र से इवर्णान्त 'जि' धातु से 'करण' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय।

आयोधने .... जागरूकः।। 22।।

165. **जागरूकः**-जागरणशीलो जागरूकः। (जागृ + ऊक) 'जागरूकः'[124] सूत्र से 'जागृ निद्राक्षये' धातु से कर्त्ता (ताच्छील्य) अर्थ में 'ऊक' प्रत्यय।

166. **अभ्यणः**- (अभि + अर्द् + क्त) 'गत्यर्थाकर्मकश्लिष-शीङ्स्थाआसवसजन-रूहजीर्यर्तिभ्यश्च'[125] सूत्र से 'अभि' उपसर्गपूर्वक 'अर्द गतौ याचने च' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

167. **क्षणदाचराणाम्**–क्षणदायां चरन्ति इति। (क्षणदा ङि, चर् + ट) 'चरेष्टः'[126] सूत्र से 'क्षणदा उपपदपूर्वक 'चर्' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'ट' प्रत्यय।

168. **आहवः**–आहूयन्ते युद्धायास्मिन् इति। (आङ् – ह्वेञ् + अप्) 'आङि[127] युद्धे' सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'ह्वेञ् स्पर्द्धायाम्' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय।

169. **वधाय**– (हन् < वध् + अप्)। 'हनश्च वधः'[128] सूत्र से 'हन्' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय। तस्मै वधाय।

170. **स्थायुकम्**–स्थातुं शीलमस्य तत् स्थायुकम्। (स्था (युक्) + उकञ्) 'लक्षपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशृभ्य उकञ्'[129] सूत्र से 'ष्ठा गतिनिवृतौ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में उकञ् प्रत्यय।

तं विप्रदर्शं .... रामः ।। 23 ।।

171. **विप्रदर्शम्**–यं यं विप्रं पश्यति तं दृष्ट्वा इति। (विप्र – दृश् + णमुल्) 'कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये'[130] सूत्र से विप्र उपपदपूर्वक 'दृश्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'णमुल्' प्रत्यय।

172. **रात्रिचरी**–रात्रौ चरतीति। (रात्रि – चर् + ट्) 'चरेष्टः' सूत्र से रात्रि उपपदपूर्वक चर् धातु से 'कर्म' अर्थ में 'ट' प्रत्यय।

173. **जिघांसुवेदम्**–यं यं जिघांसुं वेत्ति तं विदित्वा इति। (जिघांसु – विद् + णमुल्) 'कर्मणिदृशिविदोः साकल्ये'[131] सूत्र से जिघांसू उपपदपूर्वक 'विद् ज्ञाने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'णमुल्' प्रत्यय।

174. **अस्त्रः**–अस्यते क्षिप्यते यत्। (अस् + ष्ट्रन्) 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' सूत्र से 'अस्' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'ष्ट्रन' प्रत्यय।

175. **यत्नः** – (यत् (यती) + नङ्)। 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो[132] नङ्' सूत्र से 'यत् प्रयत्ने' 'धातु से' 'भाव' अर्थ में 'नङ्' प्रत्यय।

अथाऽऽलुलोके .... शिञ्जम् ।। 24 ।।

176. **शिज्जम्** –शिञ्जनं शिञ्जा। (शिञ्ज् + अ) 'गुरोश्च हलः'[133]– सूत्र से 'शिजि अव्यक्ते शब्दे' धातु से 'स्त्रीलिङ्ग' अर्थ में 'अ' प्रत्यय।

177. **शिखा** – (शीङ् + ख)। 'शीङो ह्रस्वश्च' सूत्र से 'शीङ् स्वप्ने' धातु से 'ख' प्रत्यय। 'अजाद्यतष्टाप्'[134] सूत्र से स्त्रीत्व की विवखा में 'टाप्' प्रत्यय।

क्षुद्रान्न .... विलोलाः ।। 25 ।।

178. **फलदित्सया**–दातुमिच्छा दित्सा। (दा + इस् + टाप्) 'सनि मीमाधुरभलभ–शकपतपदामच इस्'[135] सूत्र से 'दा' धातु से इस् प्रत्यय।

179. **नन्नम्यमानाः**-णम प्रह्वत्वे शब्दे इति। (नम् + शानच् + टाप्) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[136] सूत्र से 'नम्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय। 'आने मुक्' सूत्र से 'मुक्' आगम।

अपूपुजन् .... क्षितिपालपुत्रौ।26।।

180. **निष्णाः** -निष्णान्तीति निष्णाः। (नि + स्ना + क) 'आतश्चोपसर्गे कः'[137] सूत्र से 'नि' उपसर्गपूर्वक 'स्ना' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय। 'निनदीभ्यां स्नातेः कौशले' सूत्र से षत्व तथा 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' सूत्र से णत्व।

181. **वनवासिमुख्याः**-वने वसन्तीति तच्छीला वनवासिनः। (वन-वस् + णिनि) 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्यो'[138] सूत्र से 'सुबन्त' उपपदपूर्वक 'वस्' धातु से 'ताच्छील्य' अर्थ में 'णिनि' प्रत्यय।

182. **विष्टरपाद्यमाल्यैः**-विष्टरः - विस्तीर्यते इति विष्टरः। (वि - स्तृ + अप्) 'ऋदोरप्'[139] सूत्र से 'वि' उपसर्गपूर्वक 'स्तृञ् आच्छादने' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय।

183. **क्षितिपालपुत्रौ**-क्षितिं पालयतीति क्षितिपालः। (क्षित ङ्, पा + अण्) 'कर्मण्यण्' सूत्र से क्षित उपपदपूर्वक 'पा रक्षणे' धातु से 'कर्म' अर्थ में अण् प्रत्यय।

दैत्य .... अभाषिषाताम्।।27।।

184. **भुवनस्य**-भवन्त्यस्मिन् भूतानीति भुवनम्। (भू + क्युन) 'भू सूधूभस्र्जिभ्यश्छन्दसि' सूत्र से 'अधिकरण' अर्थ में 'भू' धातु को 'क्युन्' प्रत्यय।

185. **भारम्** - (भृ + घञ्)। 'भावे'[140] सूत्र से 'भृ' धातु से परे 'भाव' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

तान् .... समिनधनेषु।।28।।

186. **कर्म** -क्रियते यत् तत् कर्म। (कृ + मन्) 'अतिस्तुहुम्रिति मन्' सूत्र से कर्ता/कर्म अर्थ में 'मन्' प्रत्यय।

प्रतुष्टुवुः .... प्रसर्पत्।।29।।

187. **प्रक्लृप्तः**-प्रकर्षेण क्लृप्ताः। (प्र + कृप् + क्त) 'निष्ठा'[141] सूत्र से भूतकाल अर्थ में विद्यमान 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'कृप् सामथ्यं' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

188. **प्रसर्पत्** -प्रसर्पतीति। (प्र + सृप् + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमा-समानाधिकरणे'[142] सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'सृप्लृ गतौ' धातु से 'कर्ता' अर्थ में शतृ प्रत्यय।

आपिङ्ग .... चाऽऽनशेऽब्दैः।।30।।

189. **क्षपाटैः** -अटन्तीति अटाः। (अट् + अच्) 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः'[143] सूत्र से 'अट् गतौ' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय। क्षपासु अटाः इति क्षपाटाः, तैः।

190. **अब्दैः** –अपा ददतीति। (अप् + दा + क) 'आतोऽनुपसर्गे कः'[144] सूत्र से 'दा' धातु से 'कर्म' के योग में 'क' प्रत्यय।

अधिज्यचापः .... अमन्दकर्षी।। 31।।

191. **अमन्दकर्षी**–अमन्दं कर्षतीति तच्छीलः। (अमन्द + कृष् + णिनि) 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये[145] सूत्र से ' 'कृष विलेखने धातु से ' 'ताच्छील्य अर्थ में 'णिनि' प्रत्यय।

गाधेयदिष्टं .... महार्थम्।। 32।।

192. **स्मेरमुखः**–स्मेरं मुखं यस्य सः। (स्मि + र) 'नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः'[146] सूत्र से स्मिङ् ईषद्धसने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'र' प्रत्यय।

193. **स्थास्नुम्** – (स्था + ग्स्नुः)। 'ग्लाजिस्थश्च गस्नुः' सूत्र से 'स्था' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'ग्स्नु' प्रत्यय।

194. **रसन्तम्** – (रस् + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'रस आस्वादने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'लट्' के स्थान में 'शतृ' प्रत्यय।

आत्मम्भरिस्त्वं .... कस्मात्।। 33।।

195. **नराणां**–नृणाति इति नरः। (नृ + अच्) 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः'[147] सूत्र से 'नृ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय।

196. **फलेग्रहीन्**–फलानि गृह्णन्तीति। 'फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च' इति सूत्रेण निपातनात् सिद्धिर्द्वयोः। फलेग्रहिपदं व्याकरणे कोषे च योगरूढ्या फलसम्बन्धितवृक्षवाचकं परमत्र योगवृत्या फलग्राहकमुनिवाचकम्।

अह्नो .... वेदवृत्ते।। 34।।

197. **देवयजीन्**–देवान् यजन्ति तच्छीलाः। (देव यज् + इन्) 'सर्वधातुभ्य इन्' सूत्र से 'यज्' धातु से 'कर्म' उपपद रहते औणादिक 'इन्' प्रत्यय।

198. **पुरम्**– (पुर् + क)। 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः'[148] सूत्र से 'पॄ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

199. **अधिवासम्**–वसन्ति अस्मिन् जनाः इति वासः। (अधि – वस् + घञ्) 'हलश्च'[149] सूत्र से 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु से 'अधिकरण' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

200. **धर्मः**–धरति लोकान् ध्रियते पुण्यात्मभिरिति वा। (धृ + मन्) 'अतिस्तुहुम्रिति[150] मन्' सूत्र से 'कर्त्ता' अथवा 'कर्म' अर्थ में 'मन्' प्रत्यय।

धमोऽस्ति .... कार्मुकषुः।। 35।।

201. **ब्रह्मद्विषः**–ब्रह्मणो द्वेष्टीति। (ब्रह्मन् + ओस्, द्विष् + क्विप्) 'सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदछिदजिनीराजामुपसर्गेऽपिक्विप्'[151] सूत्र से 'द्विष्' शब्द से 'क्विप्' प्रत्यय। 'क्विप्' का सर्वापहारी लोप।

इत्थं .... निरास्थत्।। 36।।

202. **युद्धि**–युध्यन्ते अस्याम् इति युत्, युद्धभूमिः। (युध् + क्विप् + क्तिन्) 'सम्पदादिभ्यः क्विप्'[२] वार्तिक से 'युध् सम्प्रहारे' धातु से 'अधिकरण अर्थ' में 'क्विप्' प्रत्यय। क्विप् का सर्वापहारी लोप। 'स्त्रियां क्तिन्'[152] सूत्र से स्त्रीलिङ्ग 'भाव' अर्थ में 'क्तिन' प्रत्यय।

203. **रघुनन्दनः**–नन्दयतीति नन्दनः। (नन्द + ल्यु) 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः'[153] सूत्र से 'टुनदि समृद्धौ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'ल्यु' प्रत्यय। 'युवोरनाकौ'[154] सूत्र से यु को 'अन' आदेश।

जग्मुः .... कुमारः।। 37।।

204. **द्विजः** –द्विः जातः। (द्वि + जन् + ड)। 'अन्येष्वपि दृश्यते'[155] सूत्र से भूतकाल में द्वि उपपदपूर्वक 'जन्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'ड' प्रत्यय।

205. **वर्षुका**–वर्षति तच्छीला वर्षुका। (वृष् + उकञ् + टाप्) 'लक्षपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशृभ्य उकञ्'[156] सूत्र से 'ताच्छील्य' अर्थ में 'वृषु सेचने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में उकञ् प्रत्यय। 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से स्त्रीत्व विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय।

206. **पुष्पचयम्**–पुष्पाणां चयः। (चि + अच्) 'एरच्' सूत्र से 'चि चयने' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय।

207. **इज्या**–यजनमिज्या। (यज् + क्यप् + टाप्) 'व्रजयजोर्भावे क्यप्' सूत्र से 'यज्' धातु से 'भाव' अर्थ में 'क्यप्'[157] प्रत्यय। 'वचिस्वपियजादीनां किति' सूत्र से 'य' को सम्प्रसारण 'इ'।

महीय्यमाना .... भूमिः। 38।।

208. **घस्मरः**–घसतीति घस्मरः। (घस् + क्मरच्) 'सृधस्यदः क्मरच्'[158] सूत्र से 'घस्लृ अदने' धातु से 'कर्ता' (ताच्छील्य) अर्थ में 'क्मरच्' प्रत्यय।

209. **जित्वरेण**–जयशीलो जित्वरः। (जि (तुक्) + क्वरप्) 'इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप्'[159] सूत्र से 'जि जये' धातु से 'ताच्छील्य' अर्थ में 'क्वरप्' प्रत्यय। 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम।

210. **महीय्यमाना**–महीङ् (यक्) + शानच् + टाप्। 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[160] सूत्र से 'महीङ् पूजायाम्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय। 'आने मुक्' सूत्र से मुक् आगम।

211. **भूमिः**–भवन्ति भूतान्यस्यामिति। (भू + मि) 'भुवः कित्' सूत्र से 'भू' धातु से 'अधिकरण' अर्थ में 'मि' प्रत्यय।

बलिर्बबन्धे .... तस्य ।। 39।।

212. **जलधिः**–जलानि धीयन्तेऽस्मिन्निति। (जल–धा + कि) 'कर्मण्यधिकरणे च'[161] सूत्र से 'जल' (कर्म) उपपदपूर्वक 'धा' धातु से 'अधिकरण' अर्थ में 'कि' प्रत्यय।

213. **कल्याऽन्तदुःस्था**–दुःखेन तिष्ठतीति दुःस्था। (दुः + स्था + क) 'आतश्चोपसर्गे कः'[162] सूत्र से 'दुर्' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

इति .... जिनघृक्षयिष्यन् ।। 40 ।।

214. **हितम्** – (धा + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से 'डुधाञ् धारणपोषणयोः' धातु से 'क्त' प्रत्यय। 'दधातेर्हि'[163] सूत्र से 'धा' को 'हि' आदेश।

215. **ब्रुवाण** – (ब्रु + उवङ् + शानच्)। 'लटः शतृशानचाव–प्रथमासमानाधिकरणे'[164] सूत्र से 'ब्रु' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में शानच् प्रत्यय। 'अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ'[165] सूत्र से उवङ् आदेश।

216. **निजिघृक्षयिष्यन्**–जिघृक्षन्तं प्रेरयिष्यति। (नि–जिघृक्षि (णिजन्त)+शतृ) 'लृटः सद्[166] वा' सूत्र से 'भविष्यत्' काल में नि उपसर्गपूर्वक 'जिघृक्षि' धातु से 'क्रियार्थक क्रिया' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

इतः .... नृसिंहौ ।। 41 ।।

217. **पिपासू** –पातुमिच्छतः पिपासू। (पा + (सन्) + उ) 'सनाशंसभिक्ष[167] उः' सूत्र से सन्नतांत 'पा पाने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'उ' प्रत्यय। तौ पिपासू (द्विवचनरूपम्)

218. **जनकाश्रमस्थम्**–जनकस्य आश्रमः, तस्मिंस्तिष्ठतीति। (जनकाश्रम–स्था + क) 'सुपि स्थः'[168] सूत्र से 'जनकाश्रम' उपपदपूर्वक 'स्था' धातु से 'क' प्रत्यय।

अजिग्रहत्तं .... तत् ।। 42 ।।

219. **जिज्ञासमानः**–ज्ञातुमिच्छन्। (ज्ञा + (सन्) + शानच्) 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[169] सूत्र से 'ज्ञा अवबोधने' धातु से सन्नत प्रत्यय के बाद 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय।

220. **हसन्** –हसतीति। (हस् + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[170] सूत्र से 'हस हसने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय। 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से पुल्लिंग में 'नुम्' आगम।

ततो .... मुख्यः ।। 43 ।।

221. **दित्सुः** –दातुमिच्छति। (दा + सन् + उ) 'सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस्'[171] सूत्र से 'दा' धातु के 'अच्' को इस्। 'सनाशंसभिक्ष उः' सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में उ' प्रत्यय।

222. **नदीष्णान्**–नद्यां स्नान्तीति। (नदी – स्ना + क) 'सुपि स्थः' सूत्र से 'नदी' उपपदपूर्वक 'स्ना' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

223. **गिरिज्ञान्**–गिरीन् जानन्तीति। (गिरिम्–ज्ञा + क) 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः'[172] सूत्र से 'गिरिम्' कर्मोपपदपूर्वक 'ज्ञा अवबोधने' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'क' प्रत्यय।

224. **आह्वायकान्**–आह्वायन्तीति। (आङ् + ह्वेञ् + ण्वुल्) 'ण्वुल्तृचौ'[173] सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'ण्वुल्' प्रत्यय। 'युवारेनाकौ' सूत्र से 'वु' को 'अक' आदेश। 'आतोयुक्चिण्कृतो:'[174] सूत्र से युक् आगम।

225. **योधहरै:**–युध्यन्ते इति योधा:, योधान्हरन्तीति। (युध + अच + हृ + अच्) 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यच:'[175] सूत्र से 'युध संप्रहारे' धातु से 'अच' प्रत्यय। 'वयसि च' सूत्र से 'हृ हरणे' धातु से 'अच' प्रत्यय। तै योधहरै:।

क्षिप्रं .... मिथिलामगच्छत्।। 44।।

226. **आख्यायकेभ्य:**–आख्यान्ति (सन्देशं कथयन्ति)। (आङ् + ख्या + ण्वुल्) 'ण्वुल्तृचौ'[176] सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'ख्या प्रकथने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'ण्वुल्' प्रत्यय। 'युक्' आगम।

227. **अध्वन्यतुरङ्गयायी**–स: अध्वन्याश्च ते तुरङ्गा:, तै: याति। (अध्वन्या-तुरङ्गा:-या + णिनि) 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये'[177] सूत्र से 'या प्रापणे' धातु से 'सुबन्त' उपपदपूर्वक 'ताच्छील्य' अर्थ में 'णिनि' प्रत्यय। 'आतो युक् चिण्कृतो:' सूत्र से 'युक्' आगम।

228. **ग्लान:**– (ग्लै + क्त)। 'गत्यर्थाकर्मकश्लिष्शीङ्स्था-सवसजनरूह-जीर्यतिभ्यश्च'[178] सूत्र से 'ग्लै हर्षक्षये' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय। 'संयोगादेरातो धातोर्यण्वत:' सूत्र से 'त' को 'न'।

वृन्दिष्ठं .... वरिष्ठम्।। 45।।

229. **सदृक्**–समान इव दृश्ते इति। (समान-दृश् + क्विन्) 'समानान्ययोश्चेति वक्तव्यम्' वार्तिक से 'समान' शब्द के उपपद होने पर 'दृश्' धातु से 'भाव' अर्थ में 'क्विन्' प्रत्याहार।

230. **अधिवास:**–अधिवसत्यस्मिन्निति। (अधि-वस् + घञ्) 'हलश्च'[179] सूत्र से 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु से 'अधिकरण' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

231. **एतम्**– (आङ् – इण् + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से 'भूतकालं' अर्थ में 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'इण् गतौ' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

त्रिवर्गपारीणमसौ .... बभाषे।। 46।।

232. **विवेकदृश्वत्वम्**–विवेकं दृष्ट्वानिति। (विवेकं-दृश् + क्वनिप्) 'दृशे: क्वनिप्'[180] सूत्र से 'विवेक' कर्मोपदपूर्वक 'भूतकाल' अर्थ में 'दृश् प्रेक्षणे' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में क्वनिप् प्रत्यय। विवेकदृश्वनो भावो विवेकदृश्वत्वम्।

हिरण्मयी .... मैथिली।। 47।।

233. **सुता**–सूयते स्म इति सुत: सुता च। (षु + क्त + टाप्) 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'षूङ्' प्रसवैश्वर्ययो: धातु से 'कर्म' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

234. **स्थास्नुः**- (स्था + क्स्नुः)। 'ग्लाजिस्थश्च क्स्नुः'[181] सूत्र से 'स्था' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्स्नु' प्रत्यय।

235. **आकृतिः**- (आङ् - कृ + क्तिन्)। 'स्त्रियां क्तिन्'[182] सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'भाव' अर्थ में क्तिन् प्रत्यय।

लब्धां .... लक्ष्मीम्।। 48।।

236. **सम्बंहयन्तीम्**-सम्बहुलां कुर्वाणा। (सम् - बहुल + शतृ + ङीप्) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'बहुल' शब्द से 'शतृ' प्रत्यय।

सुप्रातम् .... बलमध्वनीनम्।। 49।।

237. **आसादितसम्मदम्**-प्राप्त हर्षम्। (सम् - मद् + अप्) 'प्रमदसंमदौ[183] हर्षे' सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'मदी हर्षग्लेपनयोः' धातु से 'निपातन' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय।

238. **वन्दारूभिः**-वन्दन्ते तच्छीला वन्दारवः। (वद् (वदि) + आरु) 'शृवन्द्योरारूः'[184] सूत्र से 'वदि अभिवादनस्तुत्योः' धातु से तच्छीलादि 'कर्त्ता' अर्थ में 'आरू' प्रत्यय।

विशङ्कटो .... जामदग्न्यः।। 50।।

239. **भीष्मः** -बिभेत्यस्मादिति। (भी + षुक् + मक् (उणादि)) 'भीमादयोऽपादाने'[185] सूत्र से (जि) भी भये' धातु से 'अपादान' अर्थ में निपातक। वैकल्पिक 'षुक्'[*] आगम। भीष्मः /भीमः।

उच्चैरसौ .... क्षितीन्द्रोऽनुनिनीषुरुचे।। 51।।

240. **पराक्रमज्ञः**-पराक्रमं जानातीति। (पराक्रम-ज्ञा + क) 'आतोऽनुपसर्गे[186] कः' सूत्र से 'पराक्रम' उपपदपूर्वक 'ज्ञा अवबोधने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय।

अनेकशो .... राम! रामे।। 52।।

241. **संक्षिप्य**- (सम्-क्षिप् + क्त्वा < ल्यप्)। 'समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वो[187] ल्यप्' सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'क्षिप्' धातु से 'पूर्वकालिक क्रिया' के अर्थ में 'क्त्वा' के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय।

अजीगणद्दाशरथं .... तस्य।। 53।।

242. **वाक्यम्**-(वच् + ण्यत्)। 'वचोऽशब्दसंज्ञायाम्'[188] सूत्र से 'शब्दसंज्ञा' अर्थ में 'वच्' धातु से 'ण्यत्' प्रत्यय।

जिते .... मार्गान्।। 54।।

243. **शब्दायमानानि**- (शब्द + क्यङ् + शानच्)। 'शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः[189] करणे' सूत्र से 'करोति' अर्थ में 'क्यङ्' प्रत्यय। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'वर्तमान' काल 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय।

अथ .... तूर्णमायादयोध्याम्।। 55।।

244. **दूरसंस्थम्**–सम्यक् स्थानं संस्था। (सम् – स्था + क) 'आतश्चोपसर्गे कः'[190] सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में क प्रत्यय। 'आतो लोप इटि च'' सूत्र से धातु (स्था) के आकार का लोप।

245. **नेदयत्** –अन्तिकस्थं कुर्वन्। (अन्तिक < नेद + शतृ) 'अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ'[191] सूत्र से 'अन्तिक' को 'नेद' आदेश। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

246. **अचेतत्**–न चेतत् इति अचेतत्/(चित् + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'वर्तमान' काल 'कर्ता' अर्थ में शतृ प्रत्यय।

तृतीय सर्ग

वधेन .... नाऽऽसीत् ।।1।।

247. **वधेन**–हननं वधस्तेन। (हन् < वध् + अप्)। 'हनश्च वधः'[192] सूत्र से 'हन् हिंसागत्योः' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय और 'हन्' को 'वध्' आदेश।

248. **अभिभवेन**– (अभि + भू + अप्)। 'ऋदोरप्'[193] सूत्र से 'अभि' उपसर्गपूर्वक 'भू' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय। 'सार्वधातुकार्धधातुकयो' सूत्र से गुण आदेश। 'एचोऽयवायावः' सूत्र से अवादेश।

249. **आढयंभविष्णु**–अनाढयः आढयः भवति। (आढय–भू+खिष्णुच्)। 'कर्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ'[194] सूत्र से 'आढय' उपपदपूर्वक 'भू' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'खिष्णुच्' प्रत्यय। 'अरूर्द्विषदजन्तस्य मुम्' सूत्र से 'मुम्' आगम।

250. **प्रियंभविष्णु**–अप्रियः प्रियः भवति। (प्रिय–भू+खिष्णुच) 'कर्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ' सूत्र से 'प्रिय' उपपदपूर्वक 'भू' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'खिष्णुच्' प्रत्यय। 'अरूर्द्विषदजन्तस्य मुम्' सूत्र से 'मुम्' आगम।

ततः .... सुमनीचकार।।2।।

251. **आघोषयन्** – (आङ् + घुष् + (णिच्) शतृ)। 'लटः शतृशानचाव–प्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'आङ् उपसर्गपूर्वक 'घुषिर् विशब्दने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

252. **भृत्यः** – (भृ + क्यप्)। 'भृञोऽसंज्ञायाम्'[195] सूत्र से 'भृञ् भरणे' धातु से 'भाव एवं कर्म' अर्थ में 'क्यप्' प्रत्यय। 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से 'तुक्' आगम।

प्रास्थापयत् .... जलाऽर्थमाशु।।4।।

253. **स्वपोषम्** –स्वेन पुष्ट्वा। (स्व–पुष् + णमुल्) 'स्वे पुषः'[196] सूत्र से 'स्ववाची' करण उपपदपूर्वक 'पुष् पुष्टौ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'णमुल्' प्रत्यय।

254. **पत्काषिणस्तान्** –पादौ कषन्ति तच्छीलाः। (पाद–कष् + णिनि) 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये'[197] सूत्र स 'पाद' (कर्म) उपपदपूर्वक 'कष्' धातु से 'ताच्छील्य' अर्थ में 'णिनि' प्रत्यय।

मातामहाऽऽवासमुपेयिवांसं .... वनप्रयाणम् ।।6।।

255. **सोढ़म्** – (षह् + तुमुन्)। 'शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रम–सहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन्'[198] सूत्र से 'शक्' धातु के उपपदपूर्वक 'षह् मर्षणे' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'तुमुन्' प्रत्यय।

256. **अशक्नुवाना** –न शक्नुवाना। (शक् + चानश्) 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्'[199] सूत्र से 'शक्लृ शक्तौ' धातु से 'शक्ति' अर्थ में 'वर्तमान काल' में 'चानश्' प्रत्यय। 'स्वादिभ्यः श्नुः' सूत्र से 'श्नु' विकरण। 'अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ'[200] सूत्र से उवङ् आदेश।

257. **आवास** – (आङ् – वस् + घञ्)। 'हलश्च'[201] सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु से 'अधिकरण' अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय।

258. **उपेयिवांसम्** – (उप–इण् + क्वसु)। 'उपेयिवानाश्वाननूचानश्च'[202] निपातन सूत्र से 'उप' उपसर्गपूर्वक 'इण् गतौ' धातु से 'भूतकाल' अर्थ में 'लिट्' को क्वसु आदेश।

259. **अपृष्ट्वा** –न पृष्ट्वा। (प्रच्छ् + क्त्वा)। 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले'[203] सूत्र से 'प्रच्छ्' धातु से 'भाव' अथ में 'क्त्वा' प्रत्यय।

कर्णेजपैः .... मृत्युम्।।7।।

260. **कर्णेजपैः**–कर्णे जपन्तीति। (कर्णे–जप् + अच्)– 'स्तम्बकर्णयो रमिजपोः'[204] सूत्र से सुबन्त 'कर्ण' उपपदकपूर्वक 'जप्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय। 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्'[3] सूत्र से सप्तमी विभक्ति का अलुक्।

वसूनि .... निचख्ने।।8।।

261. **निवर्तयिष्यन्** – (नि–वर्ति (णिजन्त) + शतृ)। 'लृटः सद्वा'[205] सूत्र से 'नि' उपसर्गपूर्वक 'वृत्ति' धातु से 'क्रियार्थक क्रिया' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय। 'स्यतासी लृलुटोः' सूत्र से 'स्य' विकरण।

262. **सङ्गिरमाण** – (सम् – गृ + शानच्)। 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[206] सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'गृ निगरणे' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'वर्तमानकाल' में 'शानच्' प्रत्यय। 'आने मुक्' सूत्र से मुक् आगम।

ततः .... शोचन् ।।9।।

263. **प्रविव्राजयिषुः**–प्रविव्राजयितुमिच्छुः (सन्)। (प्र–व्रज + (सन्) + उ) 'सनाशंसभिक्ष उः'[207] सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'व्रजगतौ' धातु से 'सन्'–प्रत्ययांत 'कर्त्ता' (ताच्छील्य) अर्थ में 'उ' प्रत्यय।

264. **नेत्रम्** – (नी + ष्ट्रन्)। 'दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे'[208] सूत्र से 'नी' धातु से 'करण' अर्थ में 'ष्ट्रन' प्रत्यय।

265. **अभिगमम्** – (अभि–गम् + अप्)। 'ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च'[209] सूत्र से 'गम्' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय।

266. **अनुचरः** –अनु (पश्चात्) चरति (गच्छति)। (अनु–चर् + ट) 'भिक्षासेनादायेषु च'[210] सूत्र से 'अनु' उपपदकपूर्वक 'चर्' धातु से 'ट' प्रत्यय।

केचिन् .... जगाद।। 10।।

267. **नृपः** –पूर्ववत्

गतो .... मनांसि।। 11।।

268. **गतो** – (गम् + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'गम्' धातु 'कर्म' में 'क्त' प्रत्यय।

प्रस्थास्यमानावुपसेदुषस् .... कृताऽर्थान् ।। 12।।

269. **प्रस्थास्यमानौ** – (प्र–स्था+शानच्)। 'लृटः सद्[211] वा' सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु से 'क्रियार्थक क्रिया' अर्थ में शानच् प्रत्यय। 'स्यतासी लृलुटोः' सूत्र से धातु से स्य विकरण। 'आने मुक्' सूत्र से मुक् आगम।

270. **उपसेदुषः**– (उप–सद् + लिट् (क्वसु))। 'भाषायां सदवसश्रुवः'[212] सूत्र से 'उप' उपसर्गपूर्वक 'सद्' धातु से 'भूतकाल' में 'लिट्' के स्थान पर नित्य रूप से 'क्वसु' आदेश। 'वसोः संप्रसारणम्' सूत्र से 'वस्' को सम्प्रसारण।

271. **शोशुच्यमानान्** – (शुच + यङ् + शानच्)। धातोरेकाचो हलदिः क्रियासमभिहारे यङ्'[213] सूत्र से 'अतिशय अर्थ' (पौनः पुन्यं) में यङ् प्रत्यय। 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे' सूत्र से 'शुच् शोके' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय। 'आने मुक्' सूत्र से मुक् आगम।

असृष्ठ .... मोक्षः।। 13।।

272. **भयेषु** – (भी + अच्)। 'अज्विधौ भयादीनामुपसंख्यानम्' वार्तिक से 'ञिभी भये' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय। तेषु भयेषु।

273. **स्वपोषम्** – (स्व–पुष् + णमुल्)। (पूर्ववत्)

274. **यानेन**–गमनेन। (या + ल्युट्) 'ल्युट् च'[214] सूत्र से 'या प्रापणे' धातु से 'भाव' अर्थ में 'ल्युट्' प्रत्यय। 'युवोरनाकौ' सूत्र 'यु' को 'अन' आदेश। तेन यानेन।

विद्युत्प्रणाशं .... गुरूणाम्।। 14।।

275. **दुरापेः** – दुःखेन आप्यते इति। (दुर् – आप् + खल्) 'ईषद्दुः सुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्'[215] सूत्र से 'दुर्' उपसर्गपूर्वक 'आप्लृ व्याप्तौ' धातु से 'भाव एवं कर्म' अर्थ में 'खल्' प्रत्यय।

276. **विद्युत्प्रणाशम्**– विद्युदिव प्रणश्य। (विद्युत्–प्र + नश् + णमुल्) 'उपमाने कर्मणि च'[216] सूत्र से 'विद्युत्' उपपदपूर्वक 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'णश् अदर्शने' धातु से उपमानवाची कर्त्ता उपपद रहते 'कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहो' सूत्र से 'कर्त्ता' की अनुवर्ति होन पर 'णमुल्' प्रत्यय।

277. **विद्युत्प्रणाशं प्रनष्टः** – (विद्युत् + प्र + नश् + णमुल्)। (प्र– नश् + क्त) 'कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः'[217] सूत्र से 'नश्' (कषादि धातुओं में सन्निहित) धातु का यथाविधि अनुप्रयोग। अर्थात् जिस धातु से 'णमुल' का विधान करेंगे उसका ही पश्चात् प्रयोग होगा।

278. **उर्ध्वशोषम्** – उर्ध्वं शुषित्वा इति। (उर्ध्व – शुष् + णमुल्) 'उर्ध्वे शुषिपूरोः'[218] सूत्र से कर्तृवाची 'उर्ध्व' उपपदपूर्वक 'शुष् शोषणे' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'णमुल्' प्रत्यय। 'पुगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से उपधागुण।

279. **उर्ध्वशोषं विशुष्कः** – (उर्ध्व – शुष् + णमुल्) (वि–शुष् + क्त) 'कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः'[219] सूत्र से 'शुष्' (कषादिधातुओं में सन्निहित) धातु का यथाविधि अनुप्रयोग। अर्थात् जिस धातु से 'णमुल्' का विधान करेंगे उसका ही पश्चात् प्रयोग होगा।

280. **विशुष्क** – (वि–शुष् + क्त)। 'निष्ठा'[^] 'सूत्र' से 'वि' उपसर्गपूर्वक 'शुष् शोषणे' धातु से 'भूतकाल' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय। 'शुषः कः' सूत्र से निष्ठा के तकार को ककार।

(अ) **वरम्** – (वृ + अप्)। 'ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च'[220] सूत्र से 'वृ' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय। 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण। 'उरण् रपरः' सूत्र से रपरत्व।

पौरा .... सूतम् ।। 15 ।।

281. **शोकाऽपनुदाः** – शोकम् अपनुदति। (शोक–अपनुद् + क) 'तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः'[221] सूत्र से कर्मत्वविशिष्ठ 'शोक' उपपदपूर्वक 'अप्–नद्' (णुद् प्रेरणे) धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क' प्रत्यय। 'पूगन्तलघूपधस्य च' सूत्र से प्राप्त उपधा–गुण का 'क्ङिति च' सूत्र से निषेध। 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से उपपद एवं धातु को 'सवर्णदीर्घ' एकादेश।

ज्ञात्वेङ्गितैः .... रामः ।। 16 ।।

282. **गत्वरताम्** – गमनशीलो गत्वरः। (गम् + क्वरप् + तल्) 'गत्वरश्च'[222] सूत्र से 'गम्लृ गतौ' धातु से 'क्वरप्' प्रत्ययान्त 'गत्वर' का निपातन। 'ह्रस्वस्य पितिकृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम।

283. **ज्ञात्वा** – (ज्ञा + क्त्वा)। 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले'[223] सूत्र से 'पूर्वकालिक क्रिया' अर्थ में 'ज्ञा' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय।

284. **शयित्वा**– (शीङ् + क्त्वा)। 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' सूत्र से 'पूर्वकालिक क्रिया' अर्थ में 'शीङ् स्वप्ने' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय। 'न क्त्वा सेट्' सूत्र से कित् का प्रतिषेध। 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' सूत्र से गुण।

अस्त्राक्षुरस्त्रं .... मनोभिः ।। 17 ।।

285. **रूवन्तः** – विलपन्तः। (रू + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[224] सूत्र से 'रू' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय। 'अचिश्नुधातुभ्रुवांर–वोरियङुवङौ'[225] सूत्र से उवङ् आदेश। 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से नुम् आगम।

286. **अस्त्रम्** – अस्यते क्षिप्यते यत्। (अस् + ष्ट्रन्) 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' सूत्र से 'अस्' धातु स 'कर्म' अर्थ में ष्ट्रन प्रत्यय।

287. **कष्टम्**– (कष् (हिंसायाम्) + क्त)। 'निष्ठा'[226] सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'क्त' प्रत्यय।

288. **ब्रुवन्तः** – कथयन्त। (ब्रु + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'ब्रु' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय। 'अचिश्नुधातुभ्रुवांय्वोरियङुवङौ' सूत्र से 'उवङ्' आदेश। 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' सूत्र से 'नुम्' आगम।

289. **पराङ्मुखैः** – पराक् मुखं येषां ते। (पर – अञ्च् + क्विन्) 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां च'[227] सूत्र से 'पर' उपसर्गपूर्वक 'अञ्चु गतिपूजनयोः' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्विन्' प्रत्यय।

सूतोऽपि .... पुरमाविवेश ।। 18 ।

290. **पवित्वा**– (पूङ् + क्त्वा)। 'समानकर्तकयोः पूर्वकाले'[228] सूत्र से 'पूङ् वने' धातु से 'पूर्वकालिक क्रिया' अर्थ में 'क्त्वा' प्रत्यय। 'पूङश्च' सूत्र से विकल्प स 'इट्' आगम। 'पूङः क्त्वा च' कित्त्व का निषेध होने से गुण।

291. **अधीयन्** – (अधि – इक् + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमसमानाधिकरणे' सूत्र से 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'इक स्मरणे' धातु से 'शतृ' प्रत्यय। 'अचिश्नुधातुभ्रुवां टवोरियङुवङौ'[229] सूत्र से 'इयङ्' आदेश।

292. **श्वसन्** – (श्वस् + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'श्वस प्राणने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

प्रतीय .... सर्वचेष्टा ।। 19 ।।

293. **प्रतीय**– (प्रति – इङ् + क्त्वा < ल्यप्)। 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्'[230] सूत्र से 'प्रति' उपसर्गपूर्वक 'इङ् गतौ' धातु से 'पूर्वकालिक क्रिया' अर्थ में 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' आदेश।

विशेष–यहाँ पर 'इण् गतौ' धातु नहीं होगी, क्योंकि उससे तुक् आगम होने पर 'प्रतीत्य' रूप सिद्ध होगा।

विलोक्य .... वस्त्रे ।। 20 ।।

294. **विलोक्य** – पूर्ववत्

आसीष्ट .... द्युनिवासभूयम् ।। 21 ।।

295. **दिग्धः** – (दिह् + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से 'भूतकाल' अर्थ में 'दिह उपचये' धातु से 'क्त' प्रत्यय। 'दादेर्धातोर्घः'[231] सूत्र से 'हकार' को 'घकार' आदेश। 'झषस्तथोर्धोऽधः'[232] सूत्र से 'तकार' को धकार। 'झलां जश् झशि' सूत्र से 'घकार' को जश्त्व (गकार) आदेश।

296. **द्युनिवासभूयम्**–द्युनिवासः भावः। (द्युनिवासन्–भू + क्यप्) 'भुवो भावे'[233] सूत्र से 'अनुपसर्ग' 'भू' धातु से सुबन्त उपपदपूर्वक 'भाव' अर्थ में 'क्यप्' प्रत्यय।

ताः सान्त्वयन्ती .... यूनः ।। 22 ।।

297. **सान्त्वयन्ती**–सान्त्वं करोतीति। (सान्त्व् (णिच्) + शतृ) 'तत्करोति तदाचष्टे' सूत्र से णिजन्त प्रत्ययांत 'सान्त्वि' धातु से 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय। 'शप्श्यनोर्नित्यम्'[234] सूत्र से 'नुम्' आगम। 'उगितश्च' सूत्र स स्त्रीत्व विवक्षा में 'ङीप्' प्रत्यय।

298. **आनिनीषु**–आनेतुमिच्छुः। (आङ् – नी (सन्) + उ) 'सनाशंसभिक्ष उः'[235] सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'नी' धातु से 'सन्' प्रत्ययान्त 'कर्त्ता' (ताच्छील्य) अर्थ में 'उ' प्रत्यय।

299. **मन्त्रिमतेन** – मन्त्रयन्ते इति मन्त्रिणः। (मन्त्र् + णिनि) 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः'[236] सूत्र से ग्रहादि गण में पठित 'मन्त्र्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'णिनि' प्रत्यय।

सुप्तो .... राज्ञः ।। 24 ।।

300. **सुप्तः** – (स्वप् + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से भूतकाल अर्थ में 'ञिष्वप् शये' धातु से 'क्त' प्रत्यय। 'वचिस्वपियजादीनां किति'[237] सूत्र से सम्प्रसारण। 'सम्प्रसारणाच्च' सूत्र से पूर्व रूप।

301. **वसन्** – वस् + शतृ। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[238] सूत्र से 'वस्' धातु से 'कर्ता' अर्थ में शतृ प्रत्यय।

302. **स्फुरन्तम्** – (स्फुर् + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'स्फुर संचलने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय। नुम् आगम।

अशिश्रवन्नात्ययिकं .... गुरूणाम् ।। 25 ।।

303. **एत्य** – (आङ्.–इण् + क्त्वा < ल्यप्)। 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्'[239] सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'इण् गतौ' धातु से क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय। 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्'[240] सूत्र से तुक् आगम।

304. **आञ्जिहिषा**– (अहि (सन्) + अ + टाप्) । 'अ प्रत्ययात्' सूत्र से 'अहि गतौ' धातु से 'सन्' प्रत्ययांत से 'भाव' अर्थ में 'अ' प्रत्यय। स्त्रीत्व विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय।

305. **प्रयियासयन्तः** – (प्र – या + (स्य) + शतृ)। 'लृटः सद् वा'[241] सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'या गतौ' धातु से सननतांत णिच् प्रत्ययांत 'भविष्यत् काल' में 'क्रियार्थक किया' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

'स्यतासी लृलुटो:'[242] सूत्र से धातु से स्य विकरण। 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातो:'[243] सूत्र से नुम् आगम।

306. **उत्कण्ठमानः** – (उत् – कठ् + शानच्)। 'लट: शतृशानचावप्रथमासमाना–धिकरणे' सूत्र से 'उत्' उपसर्गपूर्वक 'कठि शोके' धातु से 'वर्तमानकाल' में 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच' प्रत्यय। 'आने मुक्' सूत्र से 'मुक्' आगम।

बन्धूनशङ्किष्ट .... अरासिषुश्च।। 26।

307. **आसेदुषः**– (आङ् – सद् + क्वसु)। 'भाषायां सदवसश्रुव:'[244] सूत्र से 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु' धातु से 'भूतकाल' में 'क्वसु' आदेश। 'अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि' सूत्र से 'अकार' को 'एकार' और अभ्यास का लोप। 'वसो: सम्प्रसारणम्' सूत्र से सम्प्रसारण। 'सम्प्रसारणाच्च' सूत्र से पूर्व रूप।

स .... पणाऽऽयान् ।। 27।।

308. **प्रोषिवान्**– (प्र– वस् + क्वसु)। 'भाषायां सदवसश्रुव:'[245] सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु से भूतकाल में 'क्वसु' प्रत्यय। 'वचिस्वपियजादीनां किति'[246] सूत्र से सम्प्रसारण। 'सम्प्रसारणाच्च'[247] सूत्र से पूर्वरूप। 'वस्वेकाजाद्घसाम्' सूत्र से इट् आगम। 'शासिवसिघसीनां च' सूत्र से षत्व। नुम् आगम और दीर्घादेश।

309. **प्रवेक्ष्यन्**– (प्र – विश् + शतृ)। 'लृट: सद्वा'[248] सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'विश्' प्रवेशने धातु से 'भविष्यतकाल' में 'शतृ' प्रत्यय। स्य आगम। 'व्रश्च–भ्रश्च–सृज–मृज–यज–राज–भ्राज–च्छ–शां ष:' सूत्र से 'षकार' आदेश। 'षढो: क: सि' सूत्र से 'षकार' को 'ककार' आदेश।

310. **जन्यम्**– (जन् + यत्)। 'भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्लाव्यापात्या वा'[249] सूत्र से 'जन्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'यत्' प्रत्यय निपातित होता है, विकल्प से।

311. **पणायान्**– (पण् + अप्)। 'नित्यं पण: परिमाणे'[250] सूत्र से 'पण् व्यवहारे स्तुतौ च' धातु से 'भाव' अर्थ में 'अप्' प्रत्यय।

चक्रन्दुः .... प्रतिपूर्णमन्याः।। 28।।

312. **पुरोहितः**–पुर: (अग्रे) धीयते (स्थाप्यते) इति। (पुर–धा+क्त) 'निष्ठा' सूत्र से 'भूतकाल' में 'पुर' उपपदपूर्वक 'डुधाञ् धारणपोषणयो:' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'क्त' प्रत्यय। 'दधातेर्हि:' सूत्र से 'धा' धातु को 'हि' आदेश।

313. **योधाः**– युध्यन्ते इति योधाः। (युध् + अच्)। 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यच:' सूत्र से 'पचादि' धातुओ ('युध्' धातु) से 'कर्त्ता' अर्थ में 'अच्' प्रत्यय।

314. **अभ्यर्णम्**– (अभि–अर्द् + क्त)। 'निष्ठा'[251] सूत्र से 'भूतकाल' में 'अभि' उपपदपूर्वक 'अर्द गतौ याचने च' धातु से 'कर्म' अर्थ में क्त प्रत्यय 'अभेश्चाविदूर्ये' सूत्र से इडागम निषेध। 'रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वसय च दः' सूत्र से निष्ठा के 'त' को न। 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' सूत्र से णत्व विधान।

दिदृक्षमाणः .... वृत्तमस्मै।। 29।।

315. **दिदृक्षमाणः** – द्रष्टुमिच्छति इति। (दृश् + शानच्) 'लटः शतृशानचाव प्रथमासमानाधिकरणे'[252] सूत्र से 'दृश्' धातु सन्नतांत से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय। 'आने मुक्' सूत्र से मुक् आगम। 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से णत्व।

316. **रोरूद्यमानः**– अतिशयेन भृशं रोदिति। (रूद् + यङ् + शानच्) 'धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्'[253] सूत्र से 'रूद्' धातु से 'पौनः पुन्यं' अर्थ में 'यङ्' प्रत्यय। 'लटःशतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में शानच् प्रत्यय। 'आनेमुक्' सूत्र से 'मुक्' आगम।

आबद्धंभीम .... न्यमाङ्क्षीत्।। 30।।

317. **शेश्वीयमानम्**–अतिश्यने पुनः पुनः श्वयति इति। (श्वि + यङ् + शानच्) 'धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ' सूत्र से 'अतिशय' अर्थ में 'श्वि' धातु से 'यङ्' प्रत्यय। 'गुणो यङ्लुकोः' सूत्र से गुण। 'अकृत्सार्वधातुकयोदीर्घः' सूत्र से दीर्घादेश। 'लटः शतृशनचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय। मुक् आगम।

नृपाऽऽत्मजौ .... बह्वनर्थम्।। 31।।

318. **शोच्याः**–शोचितुं योग्याः। (शुच् + ण्यत्) 'ऋहलोर्ण्यत्'[254] सूत्र से 'शुच् शोके' धातु से 'भाव और कर्म' अर्थ में 'ण्यत्' प्रत्यय। 'ण्य आवश्यके' सूत्र से 'कुत्व' निषेध। 'अत उपधायाः' सूत्र से उपधावृद्धि।

319. **उपज्ञा**– (उप–ज्ञा + अङ्)। 'आतश्चोपसर्गे'[255] सूत्र से 'उप' उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु से 'कर्म' अर्थ में 'अङ्' प्रत्यय। 'आतो लोप इटि च'[256] सूत्र से 'आ' लोप। स्त्रीत्व विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय।

नैतन्मतं .... रोरूदावान् ।। 32।।

320. **उद्वाश्यमानः**–उद्वाश्यते इति। (उत् – वाशृ + शानच्) 'लटः शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[257] सूत्र से 'उत्' उपपदपूर्वक 'वाशृ शब्दे' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय। 'आने मुक्' सूत्र से 'मुक्' आगम।

321. **लुठयन्**– लुठयतीति। (लुठ् + शतृ) – 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'लुठ विलोडने' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

322. **ब्रुवाणः** – (ब्रू + शानच्)।'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'शानच्' प्रत्यय।

323. **रोरूदावान्**–भृशं रोदनं **रोरूदा।** (रूद् + यङ् + अ) 'धातोरेकाचो हलदिः क्रियासमभिहारे'[258] सूत्र से 'रूद्' धातु से 'अतिशय' अर्थ मं यङ् प्रत्यय।'अ प्रत्ययात्' सूत्र से 'स्त्रीत्वविवक्षा' में 'अ' प्रत्यय।'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय।

तं सुस्थयन्तः .... अध्वरपात्रजातम्।।33।।

324. **सुस्थयन्तः**–सुस्थं कुर्वन्ति। (सु–स्था + शतृ) 'तत्करोति तदाचष्टे' सूत्र से 'सु' उपपदपूर्वक 'स्था' धातु से 'णिच्' प्रत्यय।'लट:शतृशानचावप्रथमा–समानाधिकरणे'[259] सूत्र से 'स्था' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

325. **दिधक्षयन्तः**–दह भस्मीकरणे इति। (दह् (सन्) + शतृ) 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'दह्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में शतृ प्रत्यय।

326. **हावयितुम्**– (हु + तुमुन्)।'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियाऽर्थायाम्'[260] सूत्र से 'हु दानादनयोः' धातु से भविष्यत अर्थ में 'तुमुन्' प्रत्यय।

327. **चिचीषयन्तः**– (चिञ् + शतृ)।'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'चिञ् चयने' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'शतृ' प्रत्यय।

श्रोत्राऽक्षिनासावदनं .... चिताग्निम्।।35।।

328. **कृत्वा**– (कृ + क्त्वा)।'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले'[261] सूत्र से 'कृ' धातु से क्त्वा प्रत्यय।

329. **निधाय**– (नि + धा + क्त्वा < ल्यप्)।'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्'[262] सूत्र से 'नि' उपसर्गपूर्वक 'धा' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय।

330. **ऋत्विक**– ऋत्विक् संस्कर्ता याजकः। (ऋतु – यज + क्विन्) 'ऋत्विग्दधक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां'[263] सूत्र से 'ऋतु–यज्' धातु से क्विन् प्रत्यय।

331. **सञ्चिन्त्य** – (सम् – चिञ् + क्त्वा < ल्यप्) 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वोल्यप्' सूत्र से 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'चिञ्' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय।

कृतेषु .... सपौरः।।36।।

332. **प्रत्यानिनीषु**–प्रत्यानेतुमिच्छतीति। (प्रति – आङ् + नी + उ) 'सनाशंसभिक्ष उः'[264] सूत्र से 'प्रति–आङ्' उपसर्गपूर्वक 'नी' धातु से 'उ' प्रत्यय। ताच्छील्य' अर्थ में।

333. **प्रजाभिः**–(प्र–जन् + ङ)।'उपसर्गे च संज्ञायाम्'[265] सूत्र से 'प्र' उपसर्ग–पूर्वक 'जन्' धातु से भूतकाल अर्थ में 'ड' प्रत्यय।

334. **हित्वा**– (हा + क्त्वा)। 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले'[266] सूत्र से 'ओहाक् त्यागे' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय। 'जहातेश्च क्त्वि' सूत्र से 'हि' आदेश।

शीघ्रायमाणैः .... मिश्रैः ।। 37 ।।

335. **शीघ्रायमाणैः**–अशीघ्राः शीघ्राः भवन्तः इति। (शीघ्र + क्यङ् + शानच्) 'भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः'[267] सूत्र से शीघ्र धातु से 'क्यङ्' प्रत्यय। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से लट् लकार में 'शानच्' प्रत्यय।

336. **अश्नुवानैः** – (अशू + शानच्)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से लट् लकार अर्थ में 'अशू व्याप्तौ संघाते च' धातु से 'शानच्' प्रत्यय।

337. **उपेत्य**– (उप् – इण् + क्त्वा ‹ ल्यप्)। 'समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वोल्यप्' सूत्र से 'उप्' उपसर्गपूर्वक 'इण् गतौ' धातु से क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय।

सम्प्राप्य .... श्रमवृत्तयस्ते ।। 39 ।।

338. **विशुद्धिभाजः**–विशुद्धिं भजत इति। (विशुद्धि–भज + ण्वि) 'भजो ण्विः'[268] सूत्र से 'भज्' धातु से 'ण्वि' प्रत्यय।

339. **विगाहितुम्**– (वि + गाह् + तुमुन्)। 'तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्'[269] सूत्र से 'गाहू विलोड़ने' धातु से तुमुन् प्रत्यय।

ईयुः .... पयोभिः ।। 40 ।।

340. **व्यस्यन्** – (वि – अस् + शतृ)। 'लट् शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'वि' उपपदपूर्वक 'असु क्षेपणे' धातु से शतृ प्रत्यय।

वाचंयमान् .... सशिष्यम् ।। 41 ।।

341. **वाचंयमान्** – वाचं यच्छन्तीति। (वाक् – यम् + खच्)। 'वाचि यमोव्रते'[270] सूत्र से 'वाक्' उपपदपूर्वक 'यम्' धातु से खच् प्रत्यय।

342. **स्थण्डिलशायिनः** – स्थण्डिले शेरते इति। (स्थण्डिल – शीङ + णिनि)। 'व्रते'[271] सूत्र से 'स्थण्डिल' उपपदपूर्वक 'शीङ् स्वप्ने' धातु से 'णिनि' प्रत्यय।

343. **युयुक्षमाणान्**–योकुमिच्छन्तो इति। (युज् (सन्) + शानच्)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'युज समाधौ' धातु से 'शानच्' प्रत्यय।

344. **मुमुक्षून्** – मोकुमिच्छवो इति। (मुच्लृ (सन्) + उ)। 'मुच्लृ मोक्षणे' धातु से 'सनाशंसभिक्ष उ' सूत्र से सन्नतांत उ प्रत्यय।

वस्त्राऽन्नपानं .... शेध्वम् ।। 44 ।।

345. **शयनम्** – शय्यतेऽस्मिन्निति। (शीङ् + ल्युट्)। 'ल्युट् च'[272] सूत्र से 'शीङ् स्वप्ने' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय। 'युवोरनाकौ' सूत्र से यु ओ अन् आदेश।

ते भुक्तवन्तः .... समीयुः ।। 45 ।।

346. **भुक्तवन्तः** – (भुज् + क्तवतु)। 'निष्ठा' सूत्र से 'भूतकाल' अर्थ में 'भुज्' धातु से 'क्तवतु' प्रत्यय।

347. **वसित्वा** – (वस् (इट्) + क्त्वा)। 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले'[273] सूत्र से 'वस्' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय।

वैखानसेभ्यः .... चित्रकूटम् ।। 46 ।।

348. **विशिञ्जानः** – (वि – शिञ्ज + शानच्)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधि–करणे'[274] सूत्र से 'वि' उपसर्गपूर्वक 'शिञ्जि अव्यक्ते शब्दे' धातु से वर्तमान काल में 'शानच्' प्रत्यय।

दृष्ट्वा .... उज्जिहानः ।। 47 ।।

349. **ऊर्णुवानान्** – ऊर्णुवते इति। (ऊर्णुञ् (उवङ्) + शानच्)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'ऊर्णुञ् आच्छादने' धातु से 'शानच्' प्रत्यय। 'अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ'[275] सूत्र से 'उवङ्' आदेश।

350. **वितत्य** – विस्तार्य इति। (वि – तन् + क्त्वा < ल्यप्)। 'समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वो ल्यप्'[276] सूत्र से 'वि' उपसर्गपूर्वक 'तनु विस्तारे' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय। तुक् आगम।

351. **सिसङ्ग्रामयिषुः** – सङ्ग्रामयितुमिच्छुः। (सङ्ग्राम (ण्यन्त) + उ)। 'सनाशंसभिक्ष उः' सूत्र से 'ण्यन्त' सङ्ग्राम धातु से 'उ' प्रत्यय।

शुक्लोत्तरासङ्गभृतो .... स्ववर्ग्यान् ।। 48 ।।

352. **शुक्लोत्तरासङ्गभृतः** – (शुक्लोत्तरासङ्ग – भृञ् + क्विप्)। 'क्विप् च'[277] सूत्र से 'डु भृञ् धारण पोषणयोः' धातु से 'क्विप्' प्रत्यय। क्विप् प्रत्यय को सर्वापहारी लोप।

353. **आपततः** – (आङ् – पत् + शतृ)। 'लट् शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'पत्लृ पतने' धातु से 'शतृ' प्रत्यय।

354. **विवन्दिषून्** – वन्दितुमिच्छवो इति। (वदि (सन्) + उ)। 'सनाशंसभिक्ष उः' सूत्र से 'वदि अभिवादन स्तुत्योः' धातु से 'उ' प्रत्यय। नुम् आगम।

समूलकाषं .... रामवियोगशोकात् ।। 49 ।।

355. **क्षितिपालं** – क्षितिं पालयतीति। (क्षितिपाल + अण्)। 'कर्मण्यण्'[278] सूत्र से 'क्षितिपाल' 'कर्म' उपपदपूर्वक 'अण्' प्रत्यय।

356. **उच्चैः कारम्** – उच्चैः कृत्वा। (उच्चै कृञ् + णमुल्)। 'अव्वयेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ'[279] सूत्र से 'डुकृञ् करणे' धातु से णमुल् प्रत्यय।

357. **समूलकाषम्** – समूलं कषित्वा इति। (समूल–कष् + णमूल्)। 'निमूलसमूलयोः कषः'[280] सूत्र से 'समूल' उपपदपर्वक 'कष्' धातु से 'णमुल्' प्रत्यय।

चिरं रूदित्वा .... अन्तिकेऽपाम् ।।50।।

358. **गोत्राऽभिधायं** – (गोत्राऽभि – धा + णमुल्)। 'द्वितीयायां च'[281] सूत्र से 'गोत्राऽभि' उपपदपूर्वक 'डुधाञ् धारण पोषणयोः' धातु से 'णमुल्' प्रत्यय।

359. **प्रदत्तम्** – (प्र – दा + क्त)। 'निष्ठा' सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'दा' धातु से 'क्त' प्रत्यय। 'अच उपसगत्तिः' सूत्र से दकार को तकारादेश।

अरण्ययाने .... कनीयान् ।।51।।

360. **सुकरे** – सुखेन कर्तुं शक्यं सुकरं इति। (सुख + टा + कृ < खल्)। 'ईषदुः सुषु कृच्छ्राकृच्छार्थेषु खल्'[282] सूत्र से खल् प्रत्यय।

361. **भरम्** – (भृञ् + अप्)। 'त्रृदोरप्'[283] सूत्र से 'भृञ् भरणे' धातु से 'अप्' प्रत्यय।

अस्माकम् .... पृथ्वीम् ।।53।।

362. **अतिष्ठन्** – न तिष्ठन् इति। (न – स्था < तिष्ठ + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से वर्तमान काल में 'शतृ' प्रत्यय।

वृद्धौरसां .... धर्म्यम् ।।54।।

363. **प्रवोढुम्** – (प्र – वह + तुमुन्)। 'शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषू तुमुन्'[284] सूत्र से 'प्र' उपसर्गपूर्वक वह धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय।

उर्जस्वलं .... शान्तमेतत् ।।55।।

364. **राजभाञ्जि** – राजानां भजन्तीति। (राज् – भञ्ज + ण्वि)। 'भजो ण्विः'[285] सूत्र से 'राज्' उपपदपूर्वक 'भञ्ज' धातु से 'ण्वि' प्रत्यय।

इति निगदितवन्तं .... अस्मन्मतेन ।।56।।

365. **पूज्यमानः** – (पूज् (यङ्गन्त) + शानच्)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधि–करणे'[286] सूत्र से 'पूज' यङ्गन्त धातु से कर्म में शानच् प्रत्यय।

चतुर्थ सर्ग

निवृत्ते .... इयिवान् ।।1 ।।

366. **पूजितः**–पूजितवान् (पूज् + क्त)। पूज् धातु से भूतकाल के अर्थ में 'निष्ठा'[287] सूत्र से क्त प्रत्यय।

367. **ईयिवान्**– (इण् + क्वसु)। इण् धातु से भूतकाल के अर्थ में लिट् के स्थान पर 'उपेयिवाननाश्बानननूचानश्च'[288] सूत्र से 'क्वसु' प्रत्यय।

अटाटयमानः ....रक्षसा ।।2 ।।

368. **अटाटयमानः-** भृशम् अटन् (अट् + यङ् + शानच्)। अट् धातु से भृशम् अर्थ में 'सूचिसूत्रिमूत्र्यट्यर्त्यशूर्णोतिभ्यो यङ् वाच्य' सूत्र से यङ् तथा वर्तमान काल के आत्मनेपद में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[289] सूत्र से शानच् प्रत्यय।

369. **बुभुक्षुणा** – भोक्तुम् इच्छु (भुज् + सन् + उ (टा))। सन्नन्त 'भुज्' धातु से 'सनाशंसभिक्षः उ'[290] सूत्र से 'उ' प्रत्यय। तृतीयाएकवचन।

370. **उत्क्षिप्य** – उर्ध्वम् क्षिप्त्वा (उद् + क्षिप् + ल्यप्)। 'उद्' उपसर्ग पूर्वक भूतकाल में 'क्षिप्' धातु से क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर 'समासेऽनञ् पूर्वेक्त्वो ल्यप्' से ल्यप्[291] प्रत्यय।

अवाक्शिरसम् .... निचख्नतुः।। 3 ।।

371. **उत्पादम्** – (उद् – पद् + घञ्)। 'उद्' उपसर्गपूर्वक 'पद्' धातु से 'भाव' में अर्थ 'भावे'[292] सूत्र से 'घञ्' प्रत्यय।

372. **भङ्क्त्वा** – मोटयित्वा (भञ्ज् + क्त्वा)। 'भञ्ज्' धातु से भूतकाल में 'समानकर्तकयोः पूर्वकाले'[293] सूत्र से क्त्वा प्रत्यय।

पुरो रामस्य .... मुनिकेतनम् ।। 5 ।।

373. **प्रदिश्य-कथयित्वा** – (प्र + दिश् + ल्यप्)। 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'दिश्' धातु से भूतकाल में 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'समासेऽनञ् पूर्वेक्त्वो ल्यप्'[294] से ल्यप् प्रत्यय।

374. **ज्वलने** – (ज्वल् + ल्युट)। 'ज्वल्' धातु से नपुंस्कत्व विशिष्ट भाव में 'ल्युट् च' सूत्र से 'ल्युट्' प्रत्यय तथा युवोरनाकौ से यु को अन आदेश।

यूयं .... गतिम् ।। 6 ।।

375. **गतिम्** – (गम् + क्तिन्)। 'गम् धातु' से स्त्रीलिंग भाव में 'स्त्रियाम् क्तिन्'[295] सत्र से क्तिन् प्रत्यय।

तस्मिन् .... आश्रमान् ।। 7 ।।

376. **भ्रमन्** – भ्रमति (भ्रम् + शतृ)। 'भ्रम्' धातु से वर्तमान काल में लट् के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से शतृ प्रत्यय।

377. **सन्निधौ** – (सम् + धा + कि)। 'सम्' उपसर्गपूर्वक घु संज्ञक 'धा' धातु से 'उपसर्गे घोः किः'[296] सूत्र से 'कि' प्रत्यय।

वनेषु .... विचक्रमे ।। 8 ।।

378. **निवसन** – निवसति (नि – वस् + शतृ)। 'नि' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु से वर्तमान काल में 'लट् के स्थान पर लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

379. **विध्यन्** – विध्यति (व्यध् + शतृ)। 'व्यघ्' धातु से वर्तमान काल में लट् के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से शतृ प्रत्यय। 'ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां क्ङिति च'[297] सूत्र से सम्प्रसारण।

380. **शय्योत्थायम्** – **शय्या**– शेरते अस्याम् इति (शी + क्यप्)। शीङ् धातु से योग्य अर्थ में 'संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ्शीङ्भृञिणः'[298] सूत्र से 'क्यप्' प्रत्यय।

381. **उत्थायम्** – (उद् – स्था + यक् + णमुल्)। 'उद्' उपसर्गपूर्वक 'स्था' धातु से 'अपादाने परीप्सायाम्'[299] से 'णमुल' एवं 'यक्' प्रत्यय।

ऋग्यजुषम् .... होमवान् ।।9 ।।

382. **देवसात्कृत्वा – (देवसात् + कृ + क्त्वा)।** 'देवसात्' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से भूतकाल के अर्थ में 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले'[300] सूत्र से 'क्त्वा' प्रत्यय।

383. **अधीयानान्** – अधीयते (अधि – इङ् + शानच्)। 'अधि' उपसर्गपूर्वक वर्तमानकाल में 'इङ्' धातु से लट् के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शानच्' प्रत्यय।

384. **समर्चयन्** – समर्चयति (सम् – अर्च् + शतृ)। 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'अर्च्' धातु से वर्तमानकाल में लट् के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

वसानः .... तनुत्रवान् ।। 10 ।।

385. **वसानः** – वस्ते (वस् + शानच्)। 'वस आच्छादने' धातु से वर्तमान काल के आत्मनेपद में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[301] सूत्र से 'शानच्' प्रत्यय।

386. **तनुत्रवान्**– तनु त्रायत (तनु – त्रा + क + मतुप्) 'तनु' उपपदपूर्वक 'त्रा' धातु से 'आतोऽनुपसर्गे कः' सूत्र से 'क' प्रत्यय। तदन्तर मतुप् प्रत्यय।

व्रातीन .... नैकटिकाश्रमान् ।। 12 ।।

387. **सुत्वनः**– सोमं सुन्वन्ति (सु + ङ्वनिप्)। 'सु' (षुञ् अभिषत्वे) धाते सु 'सुयजोर्ङ्वनिप्'[302] सूत्र से ङ्वनिप् प्रत्यय तथा 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम।

388. **परिपूजयन्**– परिपूजयति (परि – पूज् + शतृ)। 'परि' उपसर्गपूर्वक 'पूज्' धातु से वर्तमान काल में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

परेद्यव्यद्य .... रविम् ।। 13–14 ।।

389. **चिन्तयन्**– चिन्तयति – (चिन्त + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से चिन्त् धातु से 'शतृ' प्रत्यय।

390. **जपन्** – जपयति – (जप् + शतृ)। 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से जप् धातु से शतृ प्रत्यय।

391. **प्रणमन्** – प्रणमति – (प्र + नम् + शतृ)। 'प्र' उपसर्गपूर्वक नम् धातु से 'वर्तमान' काल में 'लट्' के स्थान पर 'लटः शतृशानचानप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से शतृ प्रत्यय।

ददृशे .... सौमित्रयेऽसकौ ।। 15 ।।

392. **अवज्ञाय**:–तिरस्कृत्य (अव – ज्ञा + ल्यप्)। 'अव' उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु से भूतकाल के अर्थ में 'समासेऽनञ् पूर्वेक्त्वो ल्यप्'[303] सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

दधाना .... पक्षतौ ।। 16 ।।

393. **दधाना** – धारयन्ती – (धा + शानच्)। 'धा' धातु से वर्तमान काल में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से आत्मनेपद में 'शानच्' प्रत्यय।

उन्नसं .... सुहसानना ।। 18 ।।

394. **वक्त्रम्** – उच्यते अनेन – (वच् + त्र)। वच् धातु से उणादिक 'गुघृवीपचिवचियमिसदिक्षदिभ्यस्त्रः' सूत्र से 'त्र' प्रत्यय।

395. **दधती**–दधति (धा + शतृ + ङीप्)। 'धा' धातु से वर्तमानकाल के परस्मैपद में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[304] सूत्र से शतृ प्रत्यय। स्त्रीलिंग में 'उगितश्च' सूत्र से ङीप् प्रत्यय।

396. **कुर्वाणा**– करोति (कृ + शानच्)। कृ धातु से वर्तमान काल के आत्मनेपदी में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शानच्' प्रत्यय।

प्राप्य .... प्रियंवदा ।। 19 ।।

397. **प्रियवंदा**– प्रियं वदति। (प्रिय + वद + खच् + टाप्)। कर्मरूप 'प्रिय' उपपद रहते 'वद्' धातु से 'प्रियवशे वदः खच्'[305] सूत्र से 'खच्' प्रत्यय तथा मुञ् का आगमः तथा 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से स्त्रीत्व विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय।

398. **सहचरी** – सहचरति (सह – चर् + ट + ङीप्)। 'सह' उपपदपूर्वक 'चर्' धातु से 'भिक्षासेनादायेषु च'[306] सूत्र से 'ट' प्रत्यय। स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय।

तामुवाच .... अरार्यसे ।। 21 ।।

399. **अभीरूः**– (भयशीला भीरूः) न भीरूः इति (अ + भी + क्रु)। 'भी' धातु से शील अर्थ में 'भियःक्रुक्लुकनौ'[307] सूत्र से 'क्रु' प्रत्यय।

400. **भीषणे** – भीष्यते इति। (भीष् + ल्यु)। 'भीष्' धातु से ताच्छिल अर्थ में 'नन्दिग्रहिपचादिभ्योः ल्युणिन्यचः'[308] सूत्र से 'ल्यु' प्रत्यय। 'युवारनाकौ' सूत्र से यु को अन आदेश।

मानुषान् .... कथमञ्जसि ।। 22 ।।

401. **अप्सरायमाणाः** अप्सरा इव आचरति। (अप्सरा + शानच्) 'अप्सरा' उपमानवाचीपदपूर्वक 'कर्तुः क्यङ् झलोपश्च'[309] सूत्र से 'क्यङ्' आदेश क्यङन्तात् 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शानच्' प्रत्यय।

402. **अभिलष्यन्ती**– (अभि – लष् + शतृ + ङीप्)। 'अभि' उपसर्गपूर्वक 'लष्' धातु से वर्तमान काल में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से शतृ प्रत्यय। 'उगितश्च' सूत्र से स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय।

उग्रम्पश्याऽऽकुलेऽरण्ये .... कथं न वा ।। 23 ।।

403. **काकुम** – (कम् + उकञ्) 'कमु कान्तौ' धातु से धात्वर्थ कर्त्ता अर्थ में 'लषपतपदस्थाभूवृषहनकम्गमशृभ्य उकञ्'[310] सूत्र से 'उकञ्' प्रत्यय।

बद्धा .... धत्तेऽन्यदुर्वहम् ।। 26 ।।

404. **प्रख्यम्** – प्रख्यानम् इति। (प्र + ख्या + क)। 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'ख्या' धातु से 'आतश्चोपसर्गे' सूत्र से 'क' प्रत्यय।

405. **बद्धः** – गृहीतः (बध् + क्त)। बध् धातु से 'भूतकाल' अर्थ में भाव में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

जेता .... सदा ।। 27 ।।

406. **जेता**– जिष्णुः (जि + तृच्)। 'जि' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'ण्वुल्तृचौ'[311] सूत्र से 'तृच्' प्रत्यय।

407. **यज्ञद्रुहाम्**– यज्ञाय द्रुह्यन्ति इति (यज्ञ द्रुह् + क्विप्)। 'द्रुह्' धातु से 'सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदछिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्'[312] सूत्र से क्विप् प्रत्यय। षष्ठी बहुवचन।

408. **यज्ञः** – यजति (यज् + नङ्)। 'यज्' धातु से भावार्थ में 'यजयाचयव–तिच्छप्रच्छरक्षो नङ्'[313] सूत्र से नङ् प्रत्यय।

ततो वावृत्यमानाऽसौ .... वचः ।। 28 ।।

409. **वावृत्यमाना**– वावृत्यते (वावृत् + शानच्)। 'वावृत्' धातु से वर्तमानकाल के सामीप्य अर्थ में 'लट्' के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से शानच् प्रत्यय।

लक्ष्मणं सा .... पुनः ।। 30 ।।

410. **वृषस्यन्ती** – आत्मनः वृषम् इच्छति। (वृषस्य + शतृ + ङीप्)। 'वृष' सुबन्त से 'सुप आत्मनः क्यच्' सूत्र से 'क्यच्'[314] प्रत्यय। वर्तमानकाल में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से शतृ प्रत्यय। 'उगितश्च' से स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय।

पर्यशाप्सीत् .... मुहुः ।। 33 ।।

411. **भयदम्** – भयम् ददाति इति। (भय – दा + क)। 'भय' उपपद 'दा' धातु से 'आतोऽनुपसर्गे कः'[315] सूत्र से क प्रत्यय।

कृते सौभागिनेयस्य .... तयोः ।।35 ।।

412. **कृते**– करणम् कृत् (कृ + क्विप्)।'कृ' धातु से स्त्रिलिंग में 'सम्पदादिभ्यः क्विप्' सूत्र से क्विप् प्रत्यय। सर्वपहारी लोप तथा 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम।

413. **चेष्टितम्** – व्यापारम् (चेष्ट् + क्त)।'चेष्ट' धातु से भाव अर्थ में भूतकाल में 'निष्ठा'[316] सूत्र से क्त प्रत्यय।

मम रावणनाथाया .... क्षमम् ।।36 ।।

414. **क्षमम्**–क्षन्तु योग्यं (क्षम् + अच्)। 'क्षम्' धातु से धात्वर्थ भाव में 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः'[317] सूत्र से अच् प्रत्यय।

असंस्कृत्रिम .... माम् ।।37 ।।

415. **असंस्कृत्रिम**– संस्कारेणनिवृते इति संस्कृत्रिम। न संस्कृत्रिम – असंस्कृत्रिम। (अ – सम् – कृ + क्त्रि + मप्)। 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से 'ड्वितः क्त्रिः'[318] सूत्र से क्त्रिं प्रत्यय, तथा 'क्त्रेर्मम्नित्यम्'[319] सूत्र से 'मप्' प्रत्यय।'सम्परिभ्याम् करोतौ भूषणे' सूत्र से 'सुट्' आगम।

416. **अनुप्त्रिम** – वापेन निवृतम्। न उप्त्रिम इति अनुप्त्रिम। (अन् – उप् + क्त्रि + मप्)।'वप्' धातु से 'ड्वित्ः क्त्रिः' सूत्र से 'क्त्रि' प्रत्यय।'क्त्रेर्मम्नत्यम्' सूत्र से मप् प्रत्यय।

417. **अभृत्रिम** – भरणेन निवृतः इति भृत्रिम। न भृत्रिम = अभृत्रिम। (अ – भृ + क्त्रि + मप्)।'भृ' धातु से 'ड्वितः क्त्रिः' सूत्र से 'क्त्रि' प्रत्यय।'क्त्रेर्मम्नत्यम्' सूत्र से 'मप्' प्रत्यय।

जक्षिमः .... क्षमामहे ।।39 ।।

518. **अनपराधे :** अपराधस्य अभावः। = अन् – अप् – राध् + घञ्) अप् उपसर्ग युक्त 'राध्' धातु से 'भावे'[320] सूत्र से 'घञ्' प्रत्यय।

419. **द्रुह्यद्भ्यः** – द्रुह्यन्तः (द्रुह् + शतृ + भ्यस्)।'द्रुह्' धातु से वर्तमान काल में 'लट्' के स्थान पर 'लट्ः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[321] सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय। 'सम्प्रदान' विभक्ति में 'भ्यस' प्रत्यय।

अथ .... मृधे ।।41 ।।

420. **सम्पततः** – सम्पतन्ति। (सम् – पत् + शतृ + शस्)।'सम्' उपसर्गपूर्वक 'पत्' धातु से वर्तमान काल में लट् के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय। कर्म कारक के बहुवचन में 'शस्' प्रत्यय।

तैः .... मेदिनी ।।42 ।।

421. **वृष्णाः** – वृश्च्यन्ते स्म। (व्रश्च् + क्त)।'व्रश्च्' धातु से भूतकाल के कर्म में 'निष्ठा'[322] सूत्र से 'क्त' प्रत्यय। सम्प्रसारण, णत्व विधान वृष्णः।

422. **रुग्णाः** – रुज्यन्ते स्म। (रुज् + क्त)।'रूज्' धातु से भूतकाल के कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

423. **सम्भुग्ना** – सम्भुज्यन्ते स्म। (सम् – भुज् + क्त)।'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'भुज्' धातु से भूतकाल के कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

424. **क्षुण्णाः** – क्षुद्यन्ते स्म। (क्षुद् + क्त)।'क्षुद्' धातु से भूतकाल के कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

425. **भिन्नाः** – भिद्यन्ते स्म। (भिद् + क्त)।'भिद्' धातु से भूतकाल के कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

426. **विपन्नाः** – विपद्यन्ते स्म। (वि – पद् + क्त)।'वि' उपसर्गपूर्वक 'पद्' धातु से भूतकाल के कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

427. **उद्विग्नाः** – उद्विज्यन्ते स्म। (उद् – विज् + क्त)।'उद्' उपसर्गपूर्वक 'विज्' धातु से भूतकाल के कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

428. **निमग्नाः** – निमज्यन्ते स्म। (नि – मस्ज् + क्त)।'नि' उपसर्गपूर्वक 'मस्ज्' धातु से भूतकाल के कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

429. **संह्रीणाः** – समह्रैषुः (सम् + ह्री + क्त)।'सम्' उपसर्गपूर्वक 'ह्री' धातु से भूतकाल के कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

430. **दीनाः** – दीयन्ते स्मः। (दी + क्त)।'दीङ्' धातु से भूतकाल के कर्म अर्थ में 'निष्ठा'[323] से 'क्त' प्रत्यय।

केचिद्वेपथुम् .... न च केचन ।। 43 ।।

431. **वेपथुम्** – वेपनम् (वेप् + अथुच्)। 'टुवेपृ कम्पने' धातु से 'स्वभाव' अर्थ में पुल्लिंग में 'ट्वितोऽथुच्'[324] सूत्र से 'अथुच्' प्रत्यय।

432. **दवथुम्** – दवनम् (दु + अथुच्)।'टुदू उपतापे' धातु से 'स्वभाव' अर्थ में पुल्लिंग में 'ट्वितोऽथुच्' सूत्र से 'अथुच्' प्रत्यय।

433. **वमथुम्** – वमनम् (वम् + अथुच्)। 'टुवम उद्निरणे' धातु से 'स्वभाव' अर्थ में पुल्लिंग में 'ट्वितोऽथुच्' सूत्र से 'अथुच्' प्रत्यय।

434. **भ्राजथुम्** – भ्राजनम् (भ्राज् + अथुच्)। पुल्लिंग में 'टुभ्राजृ दीप्तौ' धातु से 'ट्वितोऽथुच्' सूत्र से 'अथुच्' प्रत्यय।

मृगयुमिव .... पतत्रिराजम् ।। 44 ।।

435. **विषभृत्**– विषं बिभर्ति। (विष – भृ + क्विप्)। 'विष' उपपदपूर्वक 'भृ' धातु से 'सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः'[325] सूत्र से 'क्विप्' प्रत्यय।

शितविशिख .... लिङ्गतुल्यः ।। 45 ।।

436. **क्षितिभृत्** – क्षितिं बिभर्तीति। (क्षिति – भृ + क्विप)। क्षिति उपपदपूर्वक 'भृ' धातु से 'सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः' सूत्र से 'क्विप्' प्रत्यय।

पञ्चम सर्ग

निराकरिष्णू .... खरदूषणौ ।। 1 ।।

437. **निराकरिष्णू**–शत्रुनिराकरणशीलौ। (निर् – आङ् – कृ + इष्णुच्) निर् एवं आङ् उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से ताच्छिल अर्थ में अलंकृञ्निराकृञ्पजनोत्पचोत्प–तोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृघुसहचर इष्णुच्'[326] सूत्र से 'इष्णुच्' प्रत्यय।

438. **वर्तिष्णू** – अतिप्रहारेऽपि वर्तनशीलौ। (वृत् + इष्णुच्)। 'वृत्' धातु से तच्छिल अर्थ में 'अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच्' सूत्र से 'इष्णुच्' प्रत्यय। प्रथमा द्विवचन रूप।

439. **वर्धिष्णू**–वर्धनशीलौ (वृध् + इष्णुच्) 'वृध्' धातु से 'स्वभाव' (तच्छिल) अर्थ में 'अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरूच्यपत्रपवृतुवृसुसहचर इष्णुच्' सूत्र से 'इष्णुच्' प्रत्यय।

440. **उत्पतिष्णू**–उर्ध्वमुत्पतनशीलौ (उद् – पत् + इष्णुच्)। 'उद्' उपसर्गपूर्वक 'पत्' धातु से तच्छिल अर्थ में 'अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरूच्यपत्र–पवृतुवृसुसहचर इष्णुच्' सूत्र से 'इष्णुच्' प्रत्यय।

441. **सहिष्णू**–सहनशीलौ (सह् + इष्णुच्)। 'सह्' धातु से तच्छिल अर्थ में 'अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरूच्यपत्रपवृतुवृसुसहचर इष्णुच्' सूत्र से 'इष्णुच्' प्रत्यय।

अथ .... चक्रतुर्द्विषौ ।। 3 ।।

442. **व्याधं व्याधम्**–अभीस्यं विद्ध्वा। (व्यध् + णमुल्)। कार्य की निरन्तरता को बोध कराने के लिए 'व्यध्' धातु से 'आभीष्ण्ये णमुल् च'[327] सूत्र से णमुल् प्रत्यय। द्वित्व भाव। 'अत उपधायाः' सूत्र से उपधा वृद्धि।

हतबन्धुः .... पतिम् ।। 4 ।।

443. **हतबन्धुः (हन् + क्त)** हतः। 'हन्' धातु से भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र 'क्त' प्रत्यय।

444. **वसन्तम्**–निवसन्तम् (नि – वस् + शतृ)। 'नि' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु से वर्तमान काल के अर्थ में 'लट्' लकार के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[328] सूत्र से शतृ प्रत्यय। द्वितीया एकवचनरूप।

सम्प्राप्य .... रावणाऽन्तिके ।।5 ।।

445. **सम्प्राप्य**–आसाद्य (सम् – प्र – आप् + ल्यप्)। 'सम्' एवं 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'आप्' धातु से पूर्वकालिक क्रिया से भूतकाल के अर्थ में 'समामकर्तृकयोः पूर्वकाले'[329] सूत्र से क्त्वा प्रत्यय, किन्तु 'समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वा ल्यप्'[330] सूत्र से ल्यप् प्रत्यय।

446. **नामग्राहम्**–नामं गृहीत्वा। (ग्रह् + णमुल्)। द्वितीयान्त 'नाम' शब्द के उपपद रहते पूर्वकालिक 'ग्रह्' धातु से 'नाम्न्यादिशिग्रहोः'[331] सूत्र से 'णमुल्' प्रत्यय। 'अ' उपधा को वृद्धि 'आ' अत उपधायाः' सूत्र से।

दण्डकान् .... भूमिवर्धनौ।।6 ।।

447. **भूमिवर्धनौ**–शवौ। (वृध् + ल्यु)। वर्द्धयत इति वर्धनौ। 'वृध्' धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः'[332] सूत्र से 'ल्यु' प्रत्यय। 'यु' को 'युवौरनकौ' सूत्र से अन्।

विग्रहस्तव .... को नयः ।।7 ।।

448. **विग्रहः** – (वि – ग्रह + अप्)। विगृह्यन्ते शत्रवः यास्मिन्। 'वि' उपसर्गपूर्वक 'ग्रह' धातु से 'ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च'[333] सूत्र से 'अप्' प्रत्यय।

449. **नयः** – नीति। (नी + अप्)। नीयतेऽनेन इति नयः। 'नी' धातु से भाव अर्थ में 'एरच्'[334] सूत्र से 'अप्' प्रत्यय।

करिष्यमाणं .... भवान् ।।9 ।।

450. **करिष्यमाणम्** – करिष्यत इति (कृ + शानच्)। 'कृ' धातु से लृट लकार के स्थान पर विकल्प से 'लृटः सद्वा'[335] सूत्र से सत् संज्ञक शानच् प्रत्यय। शप् को स्य 'आने मुक' सूत्र से मुक् आगम।

451. **कार्यम्** – कर्तुम् योग्यम्। (कृ + ण्यत्)। चाहिए व योग्य अर्थ में 'कृ' धातु से 'ऋहलोर्ण्यत्'[336] सूत्र से 'ण्यत्' प्रत्यय। 'अचोञ्णिति' सूत्र से वृद्धि कार्य।

452. **विज्ञेयम्** – वेद्यम् (वि – ज्ञा + यत्)। 'वि' उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु से योग्य व चाहिए अर्थ में 'अचोयत्'[337] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। 'ईद्यति' सूत्र से आकारान्त धातुओं को 'ई' आदेश। (ज्ञी + य) इगन्त को गुण आदेश।

453. **कृतम्** – अकरोत् (कृ + क्त)। 'कृ' धातु से भूतकाल के अर्थ में भाव या कर्म के लिए 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

454. **उपकारे**- (उप – कृ + घञ्)। 'उप' उपसर्गपूर्वक भाव अर्थ में 'कृ' धातु से 'भावे'[338] सूत्र से 'घञ्' प्रत्यय। ऊकार को 'अचोञ्णिति' से वृद्धि। सप्तमी एकवचन।

454. **अज्ञः** – अनभिज्ञः (अ + ज्ञा + क)। 'नञ्' उपपदपूर्वक 'ज्ञा' धातु से धात्वार्थ में 'आतोऽनुपसर्गे कः'[339] सूत्र से क प्रत्यय।

वृतस्त्वं .... उन्मनाः ।। 10 ।।

455. **नेता**–नयनशील (नी + तृन्)। 'नी' धातु से (तच्छित) कर्त्ता अर्थ में 'तृन्'[340] सूत्र से तृन् प्रत्यय। ड्गन्त गुण। पुल्लिंग एकवचन।

अध्वरेषु .... अधुना ।। 11 ।।

456. **दुश्च्यवनः**–दुष्टः च्यवनः (दुस् – च्युङ + युच्)। 'दुस्' उपसर्गपूर्वक 'च्युङ् गतौ' धातु से (तच्छिल) 'कर्त्ता' अर्थ में 'चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच्'[341] सूत्र से 'युच्' प्रत्यय।

457. **अन्तुम्** – भक्षयितुम् (अद् + तुमुन्)। 'अद्' धातु से क्रियार्थ क्रिया के होने पर भविष्यत्काल की धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय।

आमिक्षीयं .... राक्षसाः ।। 12 ।।

458. **हविः** – हूयतेऽनेन (हु + इसि्)। 'हु' धातु से यजादि कर्म में 'अर्च्चिश्रुचिहुसृपीति'[342] सूत्र से 'इस्' प्रत्यय।

युवजानि .... शिलीमुखैः ।। 13 ।।

459. **खविचारिणः**–खे विरचन्ति इति तच्छिलाः। (ख – वि – चर् + णिनि) सप्तम्यन्त 'खे' उपपदपूर्वक एवं 'वि' उपसर्गपूर्वक 'चर्' धातु से तच्छिल अर्थ में 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये'[343] सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय। अ उपधा को 'अचोञ्णिति' सूत्र से वृद्धि आदेश।

मांसानि .... दिशः ।। 14 ।।

460. **अवलोप्यानि**–अवलोप्तुम् योग्यानि। (अव् – लुप् + ण्यत्)। 'अव' उपसर्गपूर्वक 'लुप्' धातु से योग्य अर्थ में 'ॠहलोर्ण्यत्'[344] सूत्र से 'ण्यत्' प्रत्यय। 'पुगन्तलधूपधस्य च' सूत्र से लघु उपधा को गुण।

कुरू .... नय ।। 15 ।।

461. **बुद्धिम्** – **मतिम्** =। (बुध् + ति (क्तिन्))। 'बुध्' धातु से स्त्रीलिंगे भाव अर्थ 'स्त्रियाम् क्तिन्'[345] सूत्र से 'क्तिन्' प्रत्यय। 'झषस्तथोर्धोऽधः' से ति को धि एवं 'झलां जश् झशि' सूत्र से ध को द्।

लक्ष्मीः .... निरीक्षते ।। 17 ।।

462. **स्थिता**–स्थितवान्। (स्था (इट्) + क्त) स्था धातु से भूतकाल के अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय तथा स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय।

नाऽऽस्यं .... विहितेन्द्रियः ।। 19 ।।

463. **उक्तानि** – भावितानि। (वच् + क्त) वच् धातु से भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय। वच् धातु को सम्प्रसारण।

सारः .... निमज्जथुम् ।। 20 ।।

464. **नन्दथुः**–आनन्दः। (नद् + अथुच्) 'नद्' धातु से समृद्ध अर्थ में 'ट्वितोऽथुच्'[346] सूत्र से अथुच् प्रत्यय।

465. **निमज्जथुम्** – निमज्जनं (नि – मस्ज् + अथुच्। 'नि' उपसर्गपूर्वक 'मस्ज्' धातु से शुद्ध अर्थ में 'ट्वितोऽथुच्' सूत्र से 'अथुच्' प्रत्यय।

न तं पश्यामि .... सुकृती भव ।। 21 ।।

466. **मतेः** – मानसस्य। (मन् + क्तिन्)। 'मन्' धातु से भाव अर्थ में 'स्त्रिया क्तिन्' सूत्र से 'क्तिन्' प्रत्यय।

467. **उदेजयया**= उदेजयते कम्पयति इति। (उद् – एज् + श)। 'उद्' उपसर्ग 'एज् कम्पने' धातु से धात्वार्थ में 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजि–चेतिसातिसाहिभ्यश्च'[347] सूत्र से 'श' प्रत्यय। स्त्रीलिंग में 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय। तृतीया एकवचन रूप।

468. **विन्दः**–विन्दति इति। (विदलृ (नुम्) + श) विदलृ धातु से धात्वर्थ में 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च' सूत्र से 'श' प्रत्यय। 'शे मुचादीनाम्' सूत्र से मुम आगम।

प्रत्यूचे .... ह्यहम् ।। 23 ।।

469. **नक्तञ्चरि** = नक्तम् चरति। (नक्तम् – चर् + ट) नक्तम् उपपदपूर्वक चर् धातु से 'चरेष्टः'[348] सूत्र से 'ट' प्रत्यय। स्त्रीलिंग में 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दध्नञ्मा–त्रच्तयपठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय तथा सम्बोधन एकवचन।

विरूग्णोदग्रधाराऽग्रः .... बली ।। 25 ।।

470. **अभिन्नम्**–न भिन्नम्। (भिद् + क्त)। 'भिद्' धातु से भाव व कर्म में भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय। रदाभ्यां निष्ठातो न पूर्वस्य च दः सूत्र से दकार एव 'तकार' को नकार आदेश।

कृत्वा .... तृणवदत्यजम् ।। 26 ।।

471. **कृत्वा** – (कृ + क्त्वा)। क्रियार्थ क्रिया में भूतकाल की धात् 'कृ' से परे 'समान कर्तृकयोः पूर्वकालः' सूत्र से 'क्त्वा' प्रत्यय।

472. **बन्धने**–बन्धविषये। 'बन्ध्' धातु से भाव अर्थ में 'ल्युट च'[349] सूत्र से ल्युट् प्रत्यय। 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'यु' को अन् आदेश। सप्तमी एकवचन।

आद्येपुरूषिकां .... सदा ।। 27 ।।

473. **अन्धकार**– अन्धं करोति–तस्मिन् (अन्ध – कृ + अण्)। 'अन्ध' कर्म उपपद रहते 'कृ' धातु से 'कर्मण्यण्'[350] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय।

474. **सन्निधिः**–(सम् – नि – धा + कि)। 'सम्' उपसर्गपूर्वक एवं 'नि' उपसर्गपूर्वक 'घु' सञ्ज्ञक 'धा' धातु से 'उपसर्गे घोः किः'[351] सूत्र से 'कि' प्रत्यय।

हृतरत्नः .... गोत्रभित् ।। 28 ।।

475. **करदः**–करं ददाति। (कर – दा + क)। 'कर' कर्मोपपद 'दा' धातु से 'आतोऽनुपसर्गे कः'[352] सूत्र से 'क' प्रत्यय।

476. **गोत्रभिद्**–गोत्र– गाम् त्रायन्ते। (गो – त्रा + क)। 'गो' उपपदपूर्वक 'त्रा' धातु से 'आतोऽनुपसर्गे कः' सूत्र से 'क' प्रत्यय। गोत्रान् भिनत्ति इति। (गोत्र – भिद् + क्विप्) गोत्र उपपदपूर्वक 'कर्त्ता' अर्थ में 'भिद्' धातु से 'सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजाम् उपसर्गे क्विप्'[353] सूत्र से क्विप् प्रत्यय। क्विप् का सर्वापहारी लोप।

अतुल्यमहसा .... तद्विनिग्रहे ।। 29 ।।

477. **त्रपाकरः**–त्रपां करोति। (त्रपा – कृ + ट)। त्रपा कर्म उपपदपूर्वक 'तच्छील' अर्थ में 'कृ' धातु से 'कृञो हेतुताछील्यानुलोम्येषु'[354] सूत्र से 'ट' प्रत्यय। इगन्त गुण।

उत्पत्य .... चक्रमे ।। 30 ।।

478. **मनोयायी**–मन इव याति। (मनस् – या + णिनि)। कर्तृवाची 'मनस्' उपमान उपपदपूर्वक 'या' धातु से 'कर्तर्युपमाने'[355] सूत्र से णिनि (इन्) प्रत्यय। 'आतोयुक् चिण्कृतो' सूत्र से युक् आगम्। पुल्लिंग एकवचन रूप।

479. **उत्पत्य**– उद् उपसर्ग पूर्वक क्रियार्थक्रिया के भूतकाल के अर्थ में 'पत्' धातु से 'समासोऽनञ्पूर्वे क्त्वोल्यप्'[356] सूत्र से 'क्त्वा' के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय।

संपत्य .... दशाननः ।। 31 ।।

480. **सम्पत्य**–निपत्य (सम् – पत् + ल्यप्)। सम् उपसर्गपूर्वक क्रियार्थ क्रिया में भूतकालिक क्रिया 'पत्' धातु से 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

481. **त्रस्नुना**–त्रस्यतीति (त्रस् + क्नु)। 'त्रस्' धातु से तच्छील अर्थ में 'त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः'[357] सूत्र से 'क्नु' प्रत्यय। तृतीया एकवचन।

अन्तर्धत्स्व .... दधद्धनुः ।। 32 ।।

482. **दधत्**–दधति। (धा + शतृ)। 'धा' धातु से परस्मैपद में वर्तमान काल में लट् के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

483. **हस्तरोधम्**–हस्तेनरोध: पीडनम् वा। (हस्त – रूध + णमुल)। 'हस्त' उपपदपूर्वक 'रूध्' धातु से 'सप्तम्यां च उपपीडरूधकर्ष:'[358] सूत्र से 'णमुल्' प्रत्यय।

भवन्तं .... सार्वलौकिकम् ।। 33 ।।

484. **हीनसन्धिम्** – निकृष्टसन्धानम्। सन्धिम् = संयोजनम् (सम् + धा + कि)। 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'घु' सञ्ज्ञक धातु 'धा' से 'उपसर्गे घो:' कि:' सूत्र से 'कि' प्रत्यय।

485. **हन्तारम्**–हननम् कर्त्ता (हन् + तृच् + अम्)। 'हन्' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'ण्वुल्तृचौ'[359] सूत्र से तृच् प्रत्यय।

यमाऽऽस्यदृश्वरी .... सिंहनार्दिना ।। 34 ।।

486. **शूरंमन्य:**– आत्मनं शूरम् मन्यत। (शूर – मन् + खश्)। 'शूर' उपपदपूर्वक 'मन्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'आत्ममाने खश्च'[360] सूत्र से 'खश्' प्रत्यय। खित् परे 'अरुर्षिदजन्तस्य मुम्' सूत्र से मुम् आगम।

487. **निरस्त:**–निरस्तवान्। (निर् – अस् + क्त)। 'निर्' उपसर्गपूर्वक 'असु क्षेपणे' धातु से भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

488. **सिंहनर्दी**–सिंह: इव नर्दति। (सिंह – नर्द् + णिनि)। उपमानवाची 'सिंह' उपपद रहते 'नर्द्' धातु से 'कर्तृर्युपमाने'[361] सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय। पुल्लिंग एकवचन रूप।

न त्वं .... चाऽन्वभविष्यहम् ।। 35 ।।

489. **अनुभूत:**–अनुभूतवान्। (अनु – भू + क्त)। अनु उपसर्गपूर्वक 'भू' धातु से भूतकाल में 'भाव' अर्थ में 'निष्ठा' सूक्त से 'क्त' प्रत्यय।

अध्यङ् .... धनु: ।। 36 ।।

490. **शस्त्रभृताम्**–शस्त्रम् विभ्रति। (शस्त्र – भृ + क्विप्)। शस्त्र उपपदपूर्वक 'भृ' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'क्विप् च'[362] सूत्र से क्विप् प्रत्यय। सर्वहारलोप 'ह्रस्वस्य पितिकृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम। षष्ठी बहु वचन।

491. **अध्यङ्**–अध्यञ्चति। (अधि – अञ्चु + क्विन्)। 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'अञ्चु गतिपूजनयो:' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चां[363] च' सूत्र से क्विन् प्रत्यय। सर्वापहारी लोप। 'अनिदितां हल उपधाया: क्ङिति' सूत्र से अनुनासिक लोप प्राप्त किन्तु 'नाञ्चे: पूजायाम्' सूत्र से निषेध। प्रथमा एकवचन रूप।

492. **प्राप्य**– (प्र – आप्लृ + ल्यप्)। 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'आप्लृ व्याप्तौ' धातु से क्रियार्थक्रिया के भूतकाल अर्थ में 'समासेऽनञ् पूर्वेक्त्वोल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

संवित्त: .... मखेषु स: ।। 37 ।।

493. **शक्तिः**–पराक्रमम् (शक् + क्तिन्)। शक् धातु से भूतकाल में भाव अर्थ 'स्त्रियांक्तिन्'[364] सूत्र से 'क्तिन्' प्रत्यय।

494. **यज्वानः**– इष्टवन्त इति (यज् + ङ्वनिप्)। 'यज्' धातु से भूतकाल में 'कर्त्ता' अर्थ में 'सुयजोङ्र्वनिप्'[365] सूत्र से 'ङ्वनिप्' (वन) प्रत्यय। पुल्लिंग प्रथमा बहुवचन रूप।

495. **सहयुध्वानौ**–सहयोधितवन्तौ। (सह – युध् + क्वनिप्) सह उपपदपूर्वक असत्ववान् कर्म निवृत अर्थ में 'युध्' धातु से 'सहे च' सूत्र से 'क्वनिप्' प्रत्यय। प्रथमा द्विवचन रूप।

सुखजातः .... बलिविग्रहम् ।। 38 ।।

496. **जातः**–अभूतः। (जन् + क्त) 'जन्' धातु से भूतकाल में भाव अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से क्त प्रत्यय।

497. **जग्घः**–भषितः। (अद् + क्त)। 'अद् भक्षणे' धातु से भूतकाल में भाव अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय। 'अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति' सूत्र से 'अद्' को जग्धि आदेश।

तं .... किं ततः ।। 39 ।।

498. **भीतङ्कारम्** – भीतम् कृत्वा। (भीत – कृ + खमुञ्)। 'भीत' कर्म उपपदपूर्वक कर्त्ता अर्थ में 'कृ' धातु से 'कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ्'[366] सूत्र से खमुञ् प्रत्यय। 'अरुर्षिदजन्तस्य मुम्' सूत्र से मुम् आगम।

499. **आक्रुश्य**–भीरुत्वा। (आङ् – क्रुश् + ल्यप्)। 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'क्रुश' धातु से क्रियार्थ क्रिया में भूतकालिक धातु से 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वोल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

500. **विजितवान्**–विजिये। (वि – जि + क्तवतु)। 'वि' उपसर्गपूर्वक 'जि' धातु से भूतकाल में कर्त्ता अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्तवतु' प्रत्यय। पुल्लिंग एकवचन रूप।

चिरकालोषितं .... क्षत्रियकान्तिके ? ।। 42 ।।

501. **जीर्णम्**–निःसारम्। (जृ + क्त)। 'जृ' धातु से भूतकाल में कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय। ऋत इद्धातोः[367] सूत्र से ऋ को इद् आदेश। 'हलि च' सूत्र से उपधा दीर्घ एवं 'रदाभ्याम् निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः' सूत्र से 'रकार' एवं 'तकार' को 'नकार' तथा णत्व।

502. **निष्कुषितम्** – 'क्षतम्'। (निर् – कुष् + क्त)। 'निर्' उपसर्गपूर्वक 'कुष्' निष्कर्षे धातु से भाव व कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय। 'इण्निष्ठायाम्'[368] सूत्र से 'इट्' का आगम।

503. **भग्नम्** – (भ्रस्ज् + क्त)। 'भ्रस्ज्' धातु से भूतकाल के अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

शीर्षच्छेद्यमतोऽहं .... वनौकसौ ।। 45 ।।

504. **शीर्षच्छेद्यम्** – शीर्षच्छेदम् अर्हति। (शीर्ष – छिद् + यत्)। शीर्ष उपपदपूर्वक 'छिद्' धातु से योग्य अर्थ में 'शीर्षच्छेदात् यत् च'[369] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। लघु व उपधा को गुण, व तुक का आगम। 'स्तोः श्चुनाश्चु' सूत्र से श्चुत्व सन्धि।

505. **वर्द्धनः**–वर्द्धयति (वृध् + ल्यु)। 'वृध्' धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र से 'ल्यु' प्रत्यय तथा 'यु' का अन। लघु उपधा को गुण।

506. **निजिघृक्षुः**–विग्रहीतुम् इच्छुः (वि – ग्रह् + सन् + उ)। सन्नन्त 'वि' उपसर्ग पूर्वक 'ग्रह्' धातु से सनाशंसभिक्षः उः'[370] सूत्र से 'उ' प्रत्यय।

507. **कृत्यम्**–कर्तुम् योग्यम् (कृ + ल्यप्)। 'कृ' धातु से योग्य अर्थ में 'विभाषा कृवृषोः' सूत्र से 'क्यप्' प्रत्यय तथा 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' से तुक् का आगम।

तमुद्यत .... भवामि ते ।। 46 ।।

508. **जिजीविषुः** – जीवितुम् इच्छुः (जीव् + सन् + उ)। 'जीव्' धातु से सन्नन्त 'सनाशंसभिक्षः उः' सूत्र से 'उ' प्रत्यय।

509. **अनुनयन्**–प्रार्थयमान (अनु + नी + शतृ)। 'अनु' उपसर्ग पूर्वक वर्तमानकाल के अर्थ लट् के स्थान पर 'लटः शतृ शानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

हरामि .... सन्तनु ।। 47 ।।

510. **भूत्वा**– 'भू' धातु से क्रियार्थ क्रिया से भूतकाल की क्रिया भू से 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले'[371] सूत्र 'क्त्वा' प्रत्यय।

ततश्चित्रीयमाणो .... लोभयन् ।। 48 ।।

511. **चित्रीयमाणाः**–चित्रीयते = 'चित्रङ् आश्चर्ये' धातु से कर्ता अर्थ में आत्मनेपद में 'नमोवरिवरचित्रङः क्यच्'[372] सूत्र से 'क्यच्' प्रत्यय तथा 'अवयवे कृतलिंग समुदाये पर्यवभ्यति' सूत्र से 'शानच्' प्रत्यय।

तेनाऽदुद्यूषयद्रामं .... मृगाऽजिनम् ।। 49 ।।

512. **प्रावुवूर्षुः**– (प्राङ् – वृञ् + उ)। 'प्राङ्' उपसर्ग पूर्वक सन्नन्त 'वृञ्' धातु से 'सनाशंसभिक्षः उः' से 'उ' प्रत्यय।

योगक्षेमकरं .... गजविक्रमः ।। 50 ।।

513. **योगक्षेमकरम्** – योगक्षेम् करोति योगक्षेम (कृ + ट)। 'योगक्षेम' कर्म उपपदपूर्वक 'हेतु' तच्छिल अर्थ में 'कृ' धातु से 'कृञो हेतुताच्छील्याऽनुलोम्येषु'[373] सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

स्थायं स्थायं .... विसिष्मिये ।। 51 ।।

514. **स्थायम्-स्थायम्**– (स्था + णमुल्)। 'स्था' धातु से 'आभीक्ष्य' अर्थ में 'आभीक्ष्ण्ये णमुल् च'[374] सूत्र से 'णमुल्' प्रत्यय। 'आतो युक् चिण्कृतो' सूत्र से युक् का आगम।

515. **यान्तम्**–याति इति (या + शतृ)। 'या' धातु से वर्तमानकाल के अर्थ में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय। द्वितीय एकवचन रूप।

516. **वीक्षमाण:**–वीक्षते इति (वि – ईक्ष् + शानच्)। 'वि' उपसर्गपूर्वक 'ईक्ष्' धातु से आत्मनेपद में 'लट: शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शानच्' प्रत्यय।

चिरं .... क्षणदाचरम् ।।52।।

517. **क्लिशित्वा**– (क्लिश् + क्त्वा)। 'क्लिश्' धातु से क्रियार्थ क्रिया के भूतकाल में 'समानकर्तृकयो: पूर्वकाले' सूत्र से 'क्त्वा' प्रत्यय।

518. **मर्मावित्**–मर्माणि विध्यति (मर्म – व्यध् + क्विप्)। 'मर्म' उपपदपूर्वक 'व्यध ताडने' धातु से 'क्विप् च'[375] सूत्र से क्विप् प्रत्यय।

श्रुत्वा .... गन्तुमैजिहत् ।।53।।

519. **निनादम्** = (नि – नद् + घञ्)। 'नि' उपसर्गपूर्वक 'नद्' धातु से भाव अर्थ में 'नौ गदनदपठस्वन:' सूत्र से विकल्प में 'अप्' तथा पक्ष में 'घञ्' प्रत्यय।

520. **श्रुत्वा**–आकर्ण्य (श्रु + क्त्वा)। 'श्रु' धातु से क्रियार्थ क्रिया के भूतकाल में 'समानकर्तृकयो: पूर्वकाले'[376] सूत्र से 'क्त्वा' प्रत्यय।

521. **मत्वा**– 'बुद्धवा' (मन् + क्त्वा)। 'मन्' धातु से क्रियार्थक्रिया के भूतकालकि क्रिया से परे 'समानकर्तृकयो: पूर्वकाले'[377] सूत्र से 'क्त्वा' प्रत्यय।

522. **गन्तुम्** – (गम् + तुमुन्)। 'गम्' धातु से भविष्यतकाल की क्रिया से परे 'तुमुण्वुलौक्रियायां क्रियार्थायाम्'[378] सूत्र से तुमुन् प्रत्यय।

रामसंघुषितं .... ताम् ।।55।।

523. **संघुषितम्** – शब्दितम् (घुष् + क्त)। 'घुष्' धातु से भाव में 'नपुंसके भावे क्त:'[379] सूत्र से 'क्त' प्रत्यय तथा 'रूष्यमत्वरसंघुषास्वनाम्' सूत्र से से विकल्प से 'इट्' का आगम।

आप्यान .... कु: क्षम: ? ।।56।।

524. **रुषितम्** – रुष्टम् (रुष् + क्त)। 'रुष रौषे' धातु से न.पुस्कत्व विशिष्ट भाव में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय तथा 'रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम्' से विकल्प में 'इट्' का आगम।

525. **सहितुम्**– 'षह् मर्षणे' धातु से क्रियार्थ क्रिया के उपपद रहते भविष्यत् काल की क्रिया से परे– 'तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्'[380] सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय तथा इट् का आगम।

देहं .... मुमूर्षया ।।57।।

526. **विभ्रक्षु:** – (भ्रस्ज् (सन्) + उ)। 'भस्ज् पाके' धातु से सन्नत अवस्था में 'सनाशंसभिक्ष: उ:' सूत्र से 'उ' प्रत्यय।

527. **दिदेविषन्** – (दिव् (सन्) + शतृ) देवितुम्। सन्नन्त 'दिव्' धातु से 'लट:' शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय। पुल्लिंग एकवचन।

शत्रून् .... द्रक्ष्यते पतिः ।।58।।

528. **भीषयमाणम्** – **भीषयते** (भी + षुक् + शानच्)। 'भी' धातु से वर्तमानकाल में 'लट् लकार' के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय, तथा 'भियो हेतुभये षुक' सूत्र से षुक् का आगम।

यायास्त्वमिति .... जगदे तया ।।59।।

529. **कामः** – अभिलाषः (काम् + घञ्)। 'काम्' धातु से कर्म अर्थ में 'घञ्' सूत्र से 'घञ्' प्रत्यय।

530. **गन्तुम्**– यातुम् (गम् + तुमुन्)। 'गम्' धातु से 'समानकर्तृकेषु तुमुन्'[381] सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय।

531. **कामयितुम्**– कामिनीम् कर्तुम् (काम् (ण्यङ्) + तुमुन्)। ण्यन्त 'काम्' धातु से समानकर्तृकेषु तुमुन्' सूत्र से तुमुन् प्रत्यय।

मृषोद्यं .... शपन्वशी ।।60।।

532. **सत्यवद्यः**–सत्यवादी (सत्यावद् + क्यप्)। 'सत्य' उपपदपूर्वक 'वद्' धातु से कर्ता अर्थ में 'वदः सुपि क्यप् च'[382] सूत्र से 'क्यप्' प्रत्यय।

गते .... मृदलाबुनः ।।61।।

533. **जञ्जपूकः** – गर्हितम् जपति (जप् + यङ् + ऊक)। 'जप्' धातु से गर्हित अर्थ में 'लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो–भावगर्हायाम्' सूत्र से यङ् प्रत्यय। 'जपभजदहदशभञ्जपशां च' सूत्र से अभ्यास को नुम् आगम्। 'यजजपदशां यङ'[383] सूत्र से 'ऊक' प्रत्यय।

534. **धारय**– धारयति (धारि + श)। ण्यन्त 'धारि' धातु से 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्द–धारिरिवेद्युदेनिचेतिसातिसाहिम्यश्च'[384] सूत्र से 'श' प्रत्यय।

कमण्डलुकपालेन .... दण्डवान् ।।62।।

535. **संवस्त्र्य** – 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'वस्त्र्' धातु से 'क्त्वा' के स्थान पर 'समाासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

अधीयन् ....विलोकयन् ।।63।।

536. **अधीयन्**–अधीत (अधि – इङ् + शतृ)। 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'इङ् अध्ययने' धातु से 'इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि' सूत्र से वर्तमानकाल के लट् लकार के स्थान पर 'शतृ' प्रत्यय।

537. **आत्मविद्विद्याम्** = आत्मानं विदन्तीति, आत्मविदः, तषां विद्या। (आत्म – विद् + क्विप)। आत्मपूर्वपद 'विद्' धातु से सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छि–दजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप्'[385] सूत्र से 'क्विप्' प्रत्यय।

538. **धारयन्** – अकृच्छ्रेण धारयति (धारि + शतृ)। ण्जिन्त 'धारि' धातु से 'अकृच्छ' कर्त्ता अर्थ में 'इङधार्यो शत्रकृच्छ्राणि' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

539. **अङ्गुलिस्फोटम्** – अङ्गुलिं स्फोटयित्वा (अङ्गलि – स्फुट् + णमुल्)। 'अङ्गुलि' उपपदपूर्वक 'स्फुट्' धातु से 'स्वाङ्गेऽध्रुवे'[386] सूत्र से 'णमूल्' प्रत्यय।

540. **भ्रुविक्षेपं** – भ्रुवं विक्षिप्य (भ्रुव – क्षिप् + णमूल्)। 'भ्रुव' उपपदपूर्वक 'क्षिप्' धातु से 'स्वाङ्गेऽध्रुवे' सूत्र से 'णमूल्' प्रत्यय।

541. **वदन्** – वदति (वद् + शतृ)। 'वद्' धातु से वर्तमान काल में कर्त्ता अर्थ में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

542. **विलोकयन्** – पश्यन् (वि + लोक् + शतृ)। 'वि' उपसर्गपूर्वक 'लोक्' धातु से कर्ता अर्थ में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से शतृ प्रत्यय।

सन्दिदर्शयिषुः .... सुखाभव ।।64।।

543. **सन्दिदर्शयिषुः**– (सम् – दृश् (सन्) + उ) सन्दर्शयितुमइच्छुः। 'सम्' उपसर्ग पूर्वक सन्नन्त 'दृश्' धातु से 'सनाशंसभिक्ष उः'[387] सूत्र से 'उ' प्रत्यय।

544. **निजुह्वषुः**– (ह्वङ + सन् + उ) निह्नोतुमिच्छुः। सन्नन्त 'ह्वुङ उपनयने' धातु से 'सनाशंसभिक्षः उ' सूत्र से 'उ' प्रत्यय।

545. **समागत्य** – समीपमागत्य (सम् – आङ् – गम् + ल्यप्)। 'सम्' एव 'आङ्' उपसर्ग पूर्वक क्रियार्थक्रिया भूतकाल धातु 'गम्' से 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वा ल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

546. **क्षुध्यन्तः** – बुभुषमाणाः (क्षुध + शतृ)। 'क्षुध्' धातु से वर्तमान काल में कर्त्ता अर्थ में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

ह्वदयङ्गममूर्तिस्त्वं .... केन हेतुना ।।67।।

547. **सुभगम्भावुकम्** – असुभग सुभगं भवति (सुभग – भू + खुकञ्)। 'सुभग' उपपदपूर्वक 'च्वि' अर्थ में 'भू' धातु से 'कर्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ'[388] सूत्र से 'खुकञ्' प्रत्यय।

सुकृतं .... सुरतेषु कः ।।68।।

548. **प्रियकारी** – प्रियं करोति (प्रिय – कृ + अण् + ङीप्)। 'प्रिय' कर्म उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से हेतु अर्थ में 'क्षमप्रियमद्रेडण् च'[389] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। स्त्रीलिंग विवक्षा में 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दध्नञ्मात्रच्तयपठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से ङीप् प्रत्यय।

549. **चाटुकारः** – चाटु करोति (चाटु + कृ + अण्)। 'चाटु' उपपदपूर्वक स्वभाव अर्थ में 'कृ' धातु से 'न शब्दश्लोकलहगाथावैरचाटुसूत्र मन्त्रपदेषु'[390] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय।

550. **सुकृतम्** – शोभनम् कृतवान् इतिसुकृत् तम् (सु + कृ + क्विप्)। 'सु' कर्म उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः'[391] सूत्र से 'क्विप्' प्रत्यय। सर्वापहारी लोप तथा 'ह्रस्वस्यपिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम।

551. **पुण्यकृत्** – पुण्यंकरोति इति (पुण्य + कृ + क्विप)। 'पुण्य' कर्मोपपद 'कृ' धातु से 'सकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञ्:' सूत्र से क्विप् प्रत्यय। सर्वापहारी लोप तथा पूर्ववत् तुगागम।

552. **किङ्करः** – किञ्चित् कुत्सितं वा करोति (किम् + कृ + ट)। 'किम्' उपपदपूर्वक स्वभाव अर्थ में 'कृ' धातु से 'दिवाविभानिशाप्रभाभास्करान्तान्तादि बहुनान्दोकिं लिपिलिबिबलि–भक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घावाह्वहर्यत्तद्धनुरुष्षु'[392] सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

आपीतमधुका................................. मे मतिः ।। 70 ।।

553. **मतिः** – बुद्धिः (मन् + क्तिन्)। 'मन्' धातु से स्त्रीलिंग में भाव अर्थ में 'स्त्रियाम् क्तिन्' सूत्र से 'क्तिन्' प्रत्यय।

मिथ्यैव .... श्रियं श्रियः ।। 71 ।।

554. **हरन्तीम्**– जयन्तीम (हृ + शतृ + ङीप्)। 'हृ' धातु से वर्तमान काल के अर्थ में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय। 'उगितश्च'[393] सूत्र से स्त्रीलिंग में 'ङीप्' प्रत्यय।

555. **श्रियम्मन्या**– श्रियमात्मानं मन्यते (श्रिय – मन् + खश्)। 'श्रिय' उपपदपूर्वक अर्थ मं 'मन्' धातु से 'आत्ममाने खश्च'[394] सूत्र से 'खश्' प्रत्यय। मुम् आगम। स्त्रीलिंग विवक्षा में 'अजाद्यतष्टाप्' सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय।

556. **साक्षात्कृत्य**– असाक्षात् साक्षात् यथा सम्पद्यते (साक्षात् – कृ + ल्यप्)। 'साक्षात्' गति संज्ञक उपपदपूर्वक 'च्वि' अर्थ में 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वा ल्यप्' से 'ल्यप्' प्रत्यय।

नोदकण्ठिष्यत .... रतिं वसेत् ।। 72 ।।

557. **खेलायन्** – खेलायति (खेला + शतृ)। 'खला' धातु से वर्तमानकाल में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

558. **सजुः कृत्य** – सजूः करोति (सजुः + कृ + ल्यप्)। ऊर्यादिगण में पठित 'सजुः' के उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्'[395] सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

559. **स्मरः** – कामः (स्मृ + अच्)। 'स्मृ' धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः'[396] सूत्र से अच् प्रत्यय।

वल्गूयन्तीं .... स्थाणुसमोऽपिते? ।। 73 ।।

560. **वल्गूयन्तीम्** – वल्गूयति (वल्गू + शतृ + ङीप्)। कण्डवादिगण पठित 'वल्गू' धातु से वर्तमान काल में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[397] सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय। 'उगितश्च' सूत्र से स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय।

561. **विलोक्य** – दृष्ट्वा (वि + लोक + ल्यप्)। 'वि' उपसर्गपूर्वक 'लोक्' धातु से क्रियार्थक्रिया के भूतकाल में 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' से 'ल्यप्' प्रत्यय।

कः पण्डितायमानः .... वनम् ।। 75 ।।

562. **आदाय** – गृहीत्वा (आङ् + दा + ल्यप्)। 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'दा' धातु से क्रियार्थ क्रिया में भूतकाल की क्रिया से 'क्त्वा' के स्थान पर 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

563. **त्रस्यन्** – त्रस्यति (त्रस् + शतृ)। 'त्रस्' धातु से वर्तमान काल में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

महाकुलीन .... तपस्विनाम् ।। 77 ।।

564. **प्रियंकरः** – प्रियंकरोति (प्रिय + कृ + खच्)। 'प्रिय' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'क्षेमप्रियमद्रेऽण् च'[398] सूत्र से 'खच्' प्रत्यय। मुम् का आगम।

565. **क्षेमकारः**–क्षेमं करोति (क्षेम + कृ + अण्)। 'क्षेम' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'क्षेमप्रियमद्रेऽण् च' सूत्र से 'अण्' प्रत्यय।

566. **भर्ता** – (भृ + तृ)। 'भृ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'ण्वुलतृचौ' सूत्र से 'तृच्' प्रत्यय।

निहन्ता .... रणे ।। 78 ।।

567. **बहुकरः** – बहून् करोति (बहु – कृ + ट)। 'बहु' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'दिवाविभानिशाप्रभाभास्करान्तानन्तादिबहुनान्दो कि लिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्र–क्षेत्रसंख्याजङ्घाबाह्वहर्यतद्धनुररुष्षु'[399] सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

568. **अन्तकरः** – अन्तंकरोति (अन्त – कृ + ट)। 'अन्त' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से दिवाविभा सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

569. **वैरकाराणाम्** – वैरम् कुर्वन्ति (वैर – कृ + अण)। 'वैर' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'कर्मण्यण्'[400] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय।

570. **निहन्ता** – निहन्ति (नि + हन् + तृ)। 'नि' उपसर्गपूर्वक 'हन्' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'ण्वुल्तृचौ'[401] सूत्र से 'तृच्' प्रत्यय।

अध्वरेषु .... वनम् ।। 79 ।।

571. **पाता**– पा + तृच्। 'पा' धातु से कर्त्ता अर्थ में 'ण्वुल् तृचौ' सूत्र से 'तृच्' प्रत्यय।

572. **हित्वा** – (धा + क्त्वा)। 'धा' धात् से क्रियार्थक्रिया के उपपद में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त्वा' प्रत्यय।

पतत्रिक्रोष्टुजुष्टानि .... शेरते ।। 80।।

573. **भयदे**–भयं ददाति तस्मिन् (भय – दा + क)। 'भय' कर्म उपपदपूर्वक 'दा' धातु से 'आतोऽनुपसर्गे कः'[402] सूत्र से 'क' प्रत्यय। सप्तमी एकवचन।

574. **कृतानि**–अकुर्वन् (कृ + क्त)। 'कृ' धातु से भूतकाल के अर्थ में कर्म में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय। नपुसंकलिङ्ग बहुवचन।

575. **जुष्टानि**– (जुष् + क्त)। 'जुष्' धातु से भूतकाल में कर्म अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' पत्यय।

576. **भूतानि**– (भू + क्त)। 'भू' धातु से भूतकाल में कर्म में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

दीव्यमानं .... नाऽवगच्छसि।। 81।।

577. **दीव्यमानम्**–दीव्यति तच्छील: (दिव् + चानश्)। 'दिव्' धातु से तच्छील अर्थ में 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्'[403] सूत्र से 'चानश्' प्रत्यय।

578. **अस्यमानम्** – अस्यति तच्छीले: (अस् + चानश्)। 'अस्' धातु से ताच्छील्य अर्थ में 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' सूत्र से 'चानश्' प्रत्यय।

579. **निहनानम्** –निहनति ताच्छील: (नि – हन् + चानश्)। 'नि' उपसर्गपूर्वक 'हन्' धातु से ताच्छील अर्थ में 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' सूत्र से चानश् प्रत्यय।

भ्रातरि .... वनम् ।। 82।।

580. **मृगावित्**– मृगान्विध्यति (मृग – व्यध + क्विप्)। 'मृग' उपपदपूर्वक 'विध्' धातु से 'हेतु अर्थ में' क्विप् प्रत्यय। सर्वापहारी लोप।

581. **एषितुम्**– (इष् + तुमुन्)। 'इष्' धातु से क्रियार्थ क्रिया के उपपद रहते भविष्यत् काल की धातु 'तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्'[404] सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय।

582. **अनुजः** – अनु (पश्चात्) जायते। (अनु – जन् + ङ)। 'अनु' उपसर्गपूर्वक 'जन्' धातु से **'अन्येष्वपि दृश्यते'** सूत्र से 'ड' प्रत्यय।

583. **न्यस्य** – (नि – अस् + ल्यप्)। 'नि' उपसर्गपूर्वक 'अस्' धातु से 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

584. **प्रेषितः**– (प्र + इष् + क्त)। 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'इष्' धातु से भूतकाल में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

अथ .... दशाननः ।। 83।।

585. **आयस्यन्** – आयस्यति (आङ् + यस् + शतृ)। 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'यसु प्रयत्ने' धातु से वर्तमानकाल में 'लट्' के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

586. **स्यन्नः**- (स्यन्द् + क्त)। स्यन्दु धातु से भूतकाल में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय। 'रदाभ्यां निष्ठातो न पूर्वस्य च दः' सूत्र से द् एव त को 'न' आदेश।

निर्लङ्को .... कारणम्? ।।87।।

587. **कारणम्** - (कृ + णिच् + ल्युट्)। कार्य्यते अनेन इति। णिजन्त 'कृ' धातु से करण अर्थ में 'ल्युट् च'[405] सूत्र से ल्युट् प्रत्यय। 'युवोरनाकौ' सूत्र से यु को अन आदेश।

भिन्ननौक .... निरूद्यतिः ।।88।।

588. **बिभ्यत्** - त्रस्यन् (भी + शतृ) बिभेति। 'भी' धातु से अप्रथमान्त लट् लकार में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

589. **ध्यायन्** - ध्यायति (ध्या + शतृ)। 'ध्या' धातु से अप्रथमान्त लट् लकार के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' से 'शतृ' प्रत्यय।

590. **निरूद्यतिः** - उद्योगरहितः (निर् - उद् - यम् + क्तिन्)। निर्, उद् उपसर्गपूर्वक स्त्रीलिंग भाव में 'स्त्रियाम् क्तिन्'[406] सूत्र से 'क्तिन्' प्रत्यय।

आवास .... मया सह ।।90।।

591. **सिक्तसंमृष्टे**-सिक्त। (सिच् + क्त)। 'सिच्' धातु से भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

592. **संसृष्टे** - (सम् + सृज् + क्त)। 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'सृज्' धातु से भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

593. **आवासे**- (आ + वस् + घञ्)। 'आङ्' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु से धात्वर्थ भाव में 'भावे'[407] सूत्र से 'घञ्' प्रत्यय।

594. **लिप्तवासिता**- लिप्त। (लिप् + क्त)। 'लिप्त' धातु से भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

595. **वासिता**- (वस् + णिच् + क्त)। णिजन्त 'वस्' धातु से भूतकाल में 'निष्ठा' सूत्र से 'क्त' प्रत्यय।

अश्नीत .... वरमन्दिरे ।।92।।

596. **वशेकृत्य**-वशेकृत्वा। (वशे - कृ + क्त्वा < ल्यप्)। 'वशे' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'साक्षात्प्रभृतीनि च' सूत्र से 'क्त्वा' प्रत्यय को 'ल्यप्' प्रत्यय तथा 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक् आगम।

मा स्म .... भव ।।93।।

597. **गन्तुम्**- (गम् + तुमुन्)। 'गम्' धातु से क्रियार्थ क्रिया के उपपद होने पर भविष्यत काल में 'तुमुण्णमुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्'[408] सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय।

598. **ग्राहिणी**– गृह्णाति (ग्रह + णिनि)। 'ग्रह्' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'नन्दिग्रहिपचादिभ्योल्युणिन्यच:'[409] सूत्र से णिनि प्रत्यय। आदि वृद्धि।

599. **उत्साहिनी**– (उद् + सह् + णिनि)। 'उद्' उपसर्गपूर्वक 'सह्' धातु से 'कर्ता' अर्थ में 'नन्दिग्रहिपचादिभ्योल्युणिन्यच:' सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय। 'अत: उपधाया' सूत्र से आदि वृद्धि।

600. **भूत्वा**– (भू + क्त्वा)। 'भू' धातु से भूतकाल में 'समानकर्तृकयो: पूर्वकाले' सूत्र से 'क्त्वा' प्रत्यय।

601. **संमर्दिनी**– (सम् + मर्द् + णिनि)। 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'कर्त्ता' अर्थ में 'मर्द्' धातु से 'नन्दिग्रहिपचादिभ्योल्युणिन्यच:' सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय।

तां प्रातिकूलिकीं .... निशाचर: ।। 94 ।।

602. **निशाचर:**–निशायाम् चरति (निशा + चर् + ट)। अधिकरण 'निशा' उपपदपूर्वक 'चर्' धातु से 'चरेष्ट'[410] सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

603. **जिहीर्षु:**– हर्तुम् इच्छु: (हृ + सन् + उ)। सन्नन्त 'हृ' धातु से 'कर्त्ता' अर्थ में 'सनाशंसभिक्ष: उ:' सूत्र से 'उ' प्रत्यय।

604. **आश्लिष्य**– आलिङ्ग्य (आङ् + श्लिष् + ल्यप्)। 'आङ्' उपसर्गपूर्वक क्रियार्थ क्रिया के उपपद रहते भूतकाल में 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्'[411] सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

त्रस्यन्तीं .... मृगपक्षिण: ।। 95 ।।

605. **त्रस्यन्तीम्**– विभ्यन्तीम् त्रस्यति (त्रस् + शतृ + ङीप्)। 'त्रस्' धातु से वर्तमानकाल के अर्थ में लट् के स्थान पर 'शतृ' प्रत्यय तथा 'उगितश्च' सूत्र से स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय।

606. **समादाय** – गृहीत्वा (सम् – आङ् – दा + ल्यप्)। 'सम् + आङ्' उपसर्गपूर्वक 'दा' धातु से भूतकाल में 'क्त्वा' के स्थान पर 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

607. **रात्रिञ्चर:**–रात्रौ चरति (रात्रि + चर् + ट)। रात्रि अधिकरण के उपपदपूर्वक 'चर्' धातु से 'चरेष्ट'[412] सूत्र से 'ट' प्रत्यय। 'रात्रे: कृति विभाषा' सूत्र से विकल्प से मुम् आगम।

608. **यात:** – गच्छत: याति (या + शतृ)। 'या' धातु से वर्तमान काल में लट् के स्थान पर 'लट: शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय। पञ्चम्यन्त रूप।

609. **तूष्णींभूय**–तूष्णीम् भूत्वा (तूष्णी + भू + ल्यप्)। तूष्णीं उपपदपूर्वक 'भू' धातु से 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

उच्चै .... वदन् ।। 96 ।।

610. **रारस्यमानाम्** – रारस्यत (रस् (यङन्त) + शतृ + टाप्)। यङन्त 'रस्' धातु से 'लृट: सद्वा' सूत्र से 'लृट्' लकार के स्थान पर 'शानच्' प्रत्यय। स्त्रीलिंग में 'अजाद्यष्टाप्' सूत्र से टाप् प्रत्यय।

611. **वदन्** – वदति (वद् + शतृ)। 'वद्' धातु से वर्तमान काल में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[413] से 'शतृ' प्रत्यय।

द्विषन् .... पूर्वसरो मम ।। 97 ।।

612. **वनेचरः**–वनेचरति (वने + चर् + ट)। अधिकरण 'वने' उपपदपूर्वक 'चर्' धातु से 'चरेष्ट' सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

613. **आदायचरः**–गृहीत्वा चरति (आदाय + चर् + ट)। 'आदाय' उपपदपूर्वक 'चर्' धातु से 'भिक्षासेनादायेषु च'[414] सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

614. **द्विषन्** – द्वेष्टि (द्विष् + शतृ)। 'द्विष्' धातु से वर्तमान काल में 'लट्' के स्थान पर 'लटः शतृ शानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से शतृ प्रत्यय।

615. **अग्रेसरः** – अग्रे सरति (अग्रे + सृ + ट)। अधिवरणात्मक अव्यय 'अग्रे' उपपदपूर्वक 'सृ' धातु से 'पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः'[415] सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

616. **पूर्वसरः** – पूर्वः सरति। (पूर्व + सृ + ट)। 'पूर्व' उपपदपूर्वक 'सृ' धातु से 'पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः' सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

यशस्कर .... दुन्वन्तमत्रपम् ।। 98 ।।

617. **यशस्करः** – यशः करोति (यशस् + कृ + ट)। 'यशस्' उपपदपूर्वक हेतु अर्थ में 'कृ' धातु से 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु'[416] सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

618. **दयाकरम्**– दयांकरोति (दया + कृ + ट)। तच्छील अर्थ में 'दया' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु' सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

619. **वाक्यकरम्**–वाक्यम् करोति (वाक्य + कृ + ट)। आनुलोम्य अर्थ में वाक्य उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु' सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

620. **समाचारम्** – (सम् – आङ् – चर् + घञ्)। सम् एवं आङ् उपसर्गपूर्वक भाव में धात्वर्थ 'चर्' धातु से 'भावे'[417] सूत्र से 'घञ्' प्रत्यय।

621. **दुन्वन्तम्** – दुनोतीति (टु + शतृ)। 'टुदु उपतापे धातु से वर्तमानकाल में 'लट्' के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

अहमन्तकरो .... कर्मकरोपमः ।। 99 ।।

622. **कर्मकर** – कर्मम् करोति। (कर्म – कृ + ट)। 'कर्म' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से ताच्छील अर्थ में 'कर्मणि भृतौ' सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

623. **दिवाकरः** – दिवा करोति (दिवा + कृ + ट)। 'दिवा' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से ताच्छील अर्थ में 'दिवाविभानिशाप्रभाभास्करान्तानन्तादिबहुनान्दो किंलिपि–लिबिबलि भक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घा बाह्वर्ध्यत्तद्धनुररुष्पु'[418] सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

624. **नेयः** – नेतुम् योग्यम् (नी + यत्)। 'नी' धातु से 'योग्य व चाहिए' अर्थ में कर्म में 'अचोयत्'[419] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय।

सत्तामरूष्करं .... खम् ।। 100 ।।

625. **अरुष्करम्**–अरुः करोति (अरूष् + कृ + ट) (तम्)। 'अरूष्' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से दिवाविभानिशाप्रभाभास्करान्तानन्तादिबहुनान्दो किंलिपिलिबिबलि– भक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घाबाह्वहर्यत्तद्धनुररूष्पु' सूत्र से 'ट' प्रत्यय।

626. **वैरकारम्** – वैरम् करोति (वैर + कृ + अण्)। 'वैर' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से कर्म में 'कर्मण्यम्' सूत्र से 'अण्' प्रत्यय।

627. **कलहकारः** – कलहं करोति (कलह + कृ + अण्)। 'कलह' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से कर्म में 'कर्मण्यण्'[420] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय

628. **शब्दकारः**– शब्दं करोति (शब्द + कृ + अण्)। 'शब्द' उपपदपूर्वक 'कृ' धातु से कर्म में 'कर्मण्यण्' सूत्र से 'अण्' प्रत्यय।

धुन्वन् .... अयुध्यत् ।। 101 ।।

629. **धुन्वन्** – धुनोति (धु + शतृ)। 'धु' धातु से वर्तमानकाल में 'लट' के स्थान पर 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे'[421] सूत्र से शतृ प्रत्यय।'

संत्रासयाञ्चकाराऽरिं .... बाहुना ।। 104 ।।

630. **पश्यतः**–अवलोकयत (दृश् + शतृ)। 'दृश' धातु से 'लट्' लकार के स्थान पर 'लटः शतृ शानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय। षष्ठी एकवचन।

हन्तुं .... न राक्षसः ।। 106 ।।

631. **हन्तुम्** – हिंसितुम् (हन् + तुमुन्)। 'हन्' धातु से क्रियार्थ क्रिया के उपपदपूर्वक भविष्यत् काल में 'तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्'[422] से 'तुमुन्' प्रत्यय।

उपासाञ्चक्रिरे .... पतत्रिणः ।। 107 ।।

632. **द्रष्टुम्**–दर्शनाऽर्थम् (दृश् + तुमुन्)। 'दृश्' धातु से क्रियार्थ क्रिया के उपपदपूर्वक भविष्यकाल में 'तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय।

प्रलुठितमवनौ .... रामकान्ताम् ।। 108 ।।

633. **प्रहृष्यन्-** हृष्टा भवन् (हृष् + शतृ)। 'हृष्' धातु से वर्तमानकाल में 'लट: शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' सूत्र से 'शतृ' प्रत्यय।

634. **परिगृह्य** – आदाय (परि + ग्रह + ल्यप्)। 'परि' उपसर्गपूर्वक 'ग्रह्' धातु से भूतकाल में 'क्त्वा' के स्थान पर 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

635. **अधिरुह्य** – आरुह्य (अधि + रुह + ल्यप्)। 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'रुह्' धातु से भूतकाल में 'क्त्वा' के स्थान पर 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय।

2. 'भट्टिकाव्यम' में प्रयुक्त कृत् प्रत्यान्त शब्दों में कृत् प्रत्यगत अनुबन्ध विमर्श

भट्टिकाव्यम् के पञ्चम सर्ग तक प्रयुक्त हुए कृदन्त शब्दों के निर्माण में निम्न कृत्य, कृत् एवं उणदि प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं–

क, खच्, घञ्, क्त्, शतृ, शानच्, क्विप्, क्त्वा, ल्यप्, यत्, ण्यत्, तुमुन्, श, इष्णुच्, ष्ट्रन्, णिनि, उ, ण, ड, अप्, क्यप्, अच्, णमुल्, अङ्, अनीयर्, क्नु, ऊक, वरच्, ट, उकञ्, अ, आरू, ख, इस्, अण्, क्युन्, मन्, र, ग्स्नु, इन्, क्स्नु, क्मरच्, ण्वुल, क्वरप्, कि, ल्यु, क्विन्, क्वनिप्, मक् (उणदि) खिष्णुच्, चानश्, क्वसु, खल्, ण्वि, ल्युट्, डवनिप्, त्र, क्रु, तृच्, नङ्, क्त्रि, अथुच्, तृन्, युच्, क्तिन्, खमुञ्, क्यच्, खुकञ्।

ये सभी प्रत्यय धातुओं से होते हैं। इन सभी प्रत्यय का अनुबन्ध निम्न सूत्रों से होता है–

1. **लशक्वतद्धिते** – तद्धित प्रत्ययों को छोड़कर अन्य प्रत्ययों के आदि में स्थित लकार शकार एवं कवर्ग की इत् संज्ञा होती है। क, क्त, क्विप्, क्त्वा, क्यप्, क्नु, क्युन्, क्स्नु, क्मरच्, क्वरप्, कि, क्विन्, क्वनिप्, क्वसु, क्रु, क्त्रि, क्तिन्, क्यच् इन प्रत्ययों के क्, की, ख, खिष्णुच्, खमुञ् एवं खुकञ् के ख् की, ग्स्नु के ग् की इत्संज्ञा होती हैं तथा तस्यलोप: से उसका लोप होता है। जिस में क्, की, इत् संज्ञा हुई वे कित्, जिसमें 'ख' की इत्संज्ञा हुई वे खित् तथा जिसमें ग् की इत्संज्ञा हुई वे गित् प्रत्यय कहलाते है जिसका फल निम्न है–

   'क्ङिति च' – कित्, गित् एवं ङित् प्रत्यय परे हो तो धातु को गुण, वृद्धि नहीं होती। जैसे–

   कृ + क्त = कृत:

   कृ + क्तिन् = कृति:

'आतोलोप इटि च' – अजादि आर्धधातुक कित्, ङित् प्रत्यय परे हो तो आकारान्त धातुओं के आ का लोप हो जाता है। जैसे–

जल + धा + कि (इ) = जलधि:

प्र + ज्ञा + क (अ) = प्रज्ञ:

गो + दा + क (अ) = गोद:

2. **उपदेशेऽजनुनासिक इत्** – उपदेश अवस्था में अच् अनुनासिक इत् संज्ञक होता है और 'तस्य लोपः' से उसका लोप होता है। जैसे – णिनि के नि के 'इ', तुमुन् के मु के 'उ' का, क्वनिप् के नि के इ आदि की इत्संज्ञा होकर लोप होता है।

3. **'ष प्रत्ययस्य'** – प्रत्यय के आदि में स्थित षकार की इत्संज्ञा होती है। जैसे– ष्टन् के ष् की, षाकान् के 'ष' की आदि इत्संज्ञा होती है।

4. **हलन्त्यम्** – उपदेश अवस्था में स्थिति अन्तिम् हल् की इत्संज्ञा होती है। जैसे– खच् के च् की घञ् के ञ् की अण् के ण् की नङ के ङ् की आदि की इत्संज्ञा होती है।

खश् प्रत्यय – खित् एवं शित् भी है– खित् होने से ''अरूद्विषदजन्तस्य मुम्'' सूत्र से 'मुम्' का आगम तथा शित् होने से सार्वधातुक संज्ञा होती है।

जैसे – जनम् एजयति =

जन + एजि् + खश्

जन + एजि् + अ अनुबन्ध ख् एवं श् का

जन म् (मुम्) एजि + अ मुम् का आगम

जनमेजयः गुण व अयादि होकर

इसी प्रकार खच् प्रत्यय भी खित् है अतः मुम् का आगम होगा।

क्वनिप् प्रत्यय – आदि ककार तथा अन्त्य पकार का अनुबन्ध है कित् होने से धातु को गुण वृद्धि नहीं होती तथा पित् होने से ''ह्रस्वस्यपिति कृति तुक्'' से ह्रस्व को तुक् का आगम होता है। इ उच्चारणार्थ है।

जैसे – सह कृ + क्वनिप्

सह + कृ + वन् क्, इ, प् का अनुबन्ध

सहकृत् (तुक्) + वन् = तुक् का आगम

सहकृत्वन्

सहकृत्वा = पुल्लिंग एकवचन रूप।

क्विप् – अन्त्य पकार अनुबन्ध की ''हलन्त्यम्'' सूत्र से आद्य ककार का अनुबन्ध ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से तथा इकार उच्चारणार्थ है 'व्' शेष ''वेरपृक्तस्य'' से सर्वहारा लोप – कित् होने से गुण वृद्धि नहीं, पित् होने से तुक् का आगम।

जैसे – गोत्र भिद् + क्विप् = गोत्रभिद्

भू भृ + क्विप्

भू भृ + त् (तुक्) तुक् का आगम

भूभृत् – रूप बना।

क्वसु – लिट् लकारार्थ क्वसु प्रत्यय का ककार अनुबन्ध कित कार्यों के लिए तथा उकार उगित कार्यों के लिए है। ''उगिदचां'' सर्वनामस्थाने·धातो:'' से नुम् का आगम होता है।

शतृ/शानच् – लट् लकारार्थ दोनों प्रत्ययों के श् अनुबन्ध का कार्य शित् होने से सार्वधातुक संज्ञक तथा ऋ उच्चारणार्थ होने से 'उगितश्च' सूत्र से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् तथा ''उगिदचा सर्वनामस्थाने·धातो'' सूत्र से नुम् का आगम किया जाता है।

जैसे – वद् + शतृ

वद् + शप् (अ) अत् (शतृ) श् एवं ऋ का अनुबन्ध

वद् + अत् अतोगुणे से पररूप

वदत् = वदन् (नुम्) स् (सु) पुल्लिंग एकवचन 'सु' सर्वनाम स्थान होने से नुम् का आगम– वदन्

तृच्/तृन् – तृन् प्रत्यय का नकार अनुबन्ध है तृ शेष रहता है। नकार अनुबन्ध आद्युदस्त स्वर के लिए किया गया है। तृच् में चकार का अनुबन्ध हुआ है।

तृच् के योग में षष्ठी तथा तृन् के योग में पञ्चमी होती है।

ष्ट्रन् – इसका अन्त्य नकार 'हलन्त्यम्' से आदि षकार ''ष प्रत्ययस्य'' से अनुबन्ध संज्ञक है। त्र शेष रहता है। षित् होने से ''षिदगौरादिभ्यश्च'' सूत्र से स्त्रीलिंग में ङोप् प्रत्यय होता है तथा नकार आद्युदस्त स्वर के लिए होता है।

उण् – ण् की हलन्त्यम् से अनुबन्ध होता है तथा णित् होने से ''अचोञ्णिति'' से अजन्त को वृद्धि होती है। आतो युक् चिण्कृतौ: से युक् का आगम होता है।

वा + य् (युक्) + उण्

वा य् + उ ण् का अनुबन्ध

वायु: –

तुमुन् – इसका उ का उपदेशे 'जनुनासिक इत्' सूत्र से तथा न् का हलन्त्यम् से अनुबन्ध है। तुम् शेष रहता है।

घञ् – घञ् प्रत्यय के घकार की 'लशक्वद्विते' से तथा अकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा होती है। 'अ' मात्र शेष रहता है। घकार अनुबन्ध 'चजो: कु घिण्ण्यतो:'' सूत्र से आदि घित् कार्यों के लिए तथा ञकार अनुबन्ध वृद्धि तथा स्वर प्रक्रिया के लिए जोड़ा गया है।

रम् + घञ्

रम् + अ – 'घ एवं ञ' का अनुबन्ध

राम् + अ – '' अत उपधाया:'' से उपधा वृद्धि

राम:

पच् + घञ्

पच् + अ

पक् + अ = च जो: कु धिण्ण्यतो: से च् को क्

पाक: = अ उपधा को वृद्धि

क्त्रि प्रत्यय का आदि ककार ''लशक्वतद्धिते'' से इत्संज्ञक है उस का लोप होकर 'त्रि' शेष रहता है। ककार अनुबन्ध गुण निषेध तथा सम्प्रसारण आदि विविध कार्यों के लिए जोड़ा गया है।

पच् + क्त्रि

पच + त्रि = क आ अनुबन्ध

पक् + त्रि = चोकु:

पवित्र + मप् = क्त्रेर्मप् नित्यम् से मप् प्रत्यय।

पक्त्रिम – प् का अनुबन्ध

अथुच् – अथुच् का अन्त्य चकार 'हलन्त्यम्' से इत् संज्ञा चकार अनुबन्ध ''चित:'' (6.1.157) स्वर के लिए जोड़ा गया है।

नन्द् + अथु च् का अनुबन्ध

नन्दथु:

नङ् – नङ् का अन्त्य ङकार की हलन्त्यम् में इत्संज्ञा होकर लोप 'न' शेष रहता है। ङ्कार का अनुबन्ध ''च्छवो:शू·नुनासिके च'' आदि कार्यों में लधूपधा गुण का निषेध किया गया है।

जैसे – यज् + नङ

यज् + न ड् का अनुबन्ध

यज्ञ:

क्तिन् – क्तिन् के ककार और नकार की इत् संज्ञा का लोप होता है 'ति' शेष रहता है नकार स्वर के लिए तथा ककार गुण वृद्धि के निषेध एवं सम्प्रसारण आदि कार्यों के लिए जोड़ा गया है।

जैसे – यज् + क्तिन्

यज् + ति क् एवं न् का अनुबन्ध

इष् + ति सम्प्रसारण एवं ज् को ष

इष्टि: सन्धि 'ष्टुत्व'

ल्युट् – ल्युट् के लकार की 'लशक्वतद्विते' से ट्कार की हलन्त्यम् से इत् संज्ञा 'यु' शेष, 'यु' को युवोरनाकौ से अन आदेश। लकार अनुबन्ध लिति (6.1.187) से स्वर के लिए तथा टकार 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरप्' से स्त्रीलिंग में ङीप् के लिए जोड़ा गया है।

जैसे – राजधानी

युच् – युच् का चकार हलन्त्यम से इत् संज्ञक है। चकार अनुबन्ध चित: (6.1.163) द्वारा अन्तोदान्त स्वर के लिए जोड़ा गया है।

जैसे – दुष्पान: सोम: भवता

दुष् + पा+ युच्

दुष्पा + यु चकार का अनुबन्ध

दुष्पान: यु को अन तथा दीर्घ सन्धि

खल् – खल् का आदि खकार ''लशक्वद्धिते'' से तथा लकार की 'हलन्त्यम्' से इत्संज्ञा। 'अ' शेष रहता है। खकार अनुबन्ध 'मुम्' के आगम के लिए तथा लकार अनुबन्ध लिति (6.1.187) से पूर्व उदान्त स्वर के लिए जोड़ा गया है।

दुष् + कृ + खल्

दुष् कृ + अ लकार एवं खकार का अनुबन्ध

दुष्कर: = इगन्त को गुण

क्त्वा – क्त्वा का ककार लशक्वतद्धिते से इत्संज्ञा तथा लोप होकर 'त्वा' शेष। ककार अनुबन्ध गुण वृद्धि निषेध तथा सम्प्रसारण के लिए जोड़ा गया है। जैसे– कृ + क्त्वा

कृत्वा – ककार का अनुबन्ध ।

ल्यप् – ल्यप् का लकार एवं पकार का अनुबन्ध होता है 'य' शेष रहता है लकार अनुबन्ध स्वर उदान्त के लिए तथा पकार अनुबन्ध ह्रस्व को 'तुक' का आगम के लिए जोड़ा गया है।

प्र कृ + ल्यप्

प्र कृ + य लकार एवं पकार का अनुबन्ध

प्रकृत्य ''ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्'' से तुक् का आगम।

5. **चुटू** – प्रत्यय के आदि में स्थित च वर्ग व ट वर्ग की इत्संज्ञा होती है तथा ''तस्य लोप'' से उसका लोप हो जाता है। जैसे– णिनि, ण, ण्यत्, णमुल्, ण्, की, ड, के, ड्, की, ट, के, ट्, की, चानश्, के, के, च् की, इत्संज्ञा होती है।

लिह् + णिनि

लिह् + इन् अनुबन्ध ण् व इ का

लेहिन् लघु उपधा गुण

लेही पुल्लिंग एकवचन

कुरू + चर् + ट

कुरूचर् + अ ट् का अनुबन्ध।

कुरूचरः

'ट' प्रत्यय टित् होने से स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय होकर = कुरूचर + ङीप् (ई) = कुरूचरी।

यत्-यत् में 'तकार' इत् संज्ञक है। अतः इसका लोप होकर 'य' शेष रहता है। तकार अनुबन्ध 'यतोऽनावः'[1] द्वारा आद्युरान्त स्वर के लिए जोड़ा गया है। जैसे नी + यत्।

नी + य-त्कार का अनुबन्ध

नेयम्-इगन्त गुण होकर

क्यप्-क्यप् का क् एवं प् अनुबन्ध हुआ है कित् होने से गुण वृद्धि का निषेध एवं पित् होने से ह्रस्व को तुक् का आगम होता है।

जैसे – स्तु + क्यप्-

स्तु + य-क् एवं प् का अनुबन्ध

स्तुत्यः- 'ह्रस्वस्वपिति कृति तुक्' से तुद् (त) का आगम।

ण्यत्-ण्यत् के ण् एवं त् की इत्संज्ञा होकर लोप 'य' शेष रहता है। णकार अनुबन्ध-अजन्त एवं अ उपधा को वृद्धि एवं तकार का अनुबन्ध स्वर प्रयोजनार्थ जोड़ा गया है। जैसे-हृ + ण्यत्।

हृ + य-ण् एवं त् का अनुबन्ध

हार्यम्-ऋ को वृद्धि होकर

तव्यत-में त्कार का अनुबन्ध 'आद्युदात्तश्च'[2] सूत्र आदि स्वर को उदात्त करने के लिए जोड़ा है।

अनीयर्-अनीयर् में रेफ का अनुबन्ध 'उपोत्तम रिति'[3] सूत्र से अनीयर् का नी उदात्त हो जाता है।

णिनि-णिनि में णकार का अनुबन्ध वृद्धि कार्य के लिए तथा आकारान्त धातु को युक् (य्) का आगम के लिए जोड़ा गया है।[4] तथा इकार का अनुबन्ध न् की इत्संज्ञा बचाने के लिए किया गया है।

क-क में आदि ककार इत्संज्ञक होकर लुप्त हो जाता है। 'अ' शेष बचता है कित्त्व के कारण गुण वृद्धि निषेध 'आतो लोप इति च'[1] से आ का लोप करने के लिए जोड़ा गया है।

संदर्भ सूची

1. अष्टाध्यायी – वृतिकार श्री नारायण मिश्र, चौखम्भा पब्लिशर्स– सूत्र 3/1/135
2. सूत्र 3/3/39 पृष्ठ संख्या–56
3. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
4. सूत्र 3/3/58 पृष्ठ संख्या–70
5. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
6. सूत्र 3/3/121 पृष्ठ संख्या–74
7. सूत्र 3/4/36 पृष्ठ संख्या–81
8. सूत्र 3/3/19 पृष्ठ संख्या–68
9. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
10. सूत्र 3/2/61 पृष्ठ संख्या–58
11. सूत्र 3/2/101 पृष्ठ संख्या–61
12. सूत्र 3/1/136 पृष्ठ संख्या–53
14. सूत्र 3/3/19 पृष्ठ संख्या–68
15. सूत्र 3/4/72 पृष्ठ संख्या–84
16. सूत्र 3/2/61 पृष्ठ संख्या–58
17. सूत्र 3/3/115 पृष्ठ संख्या–74
18. सूत्र 7/1/11 पृष्ठ संख्या–230
19. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
20. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
21. सूत्र 3/4/72 पृष्ठ संख्या–84
22. सूत्र 3/1/135 पृष्ठ संख्या–53
23. सूत्र 3/2/62 पृष्ठ संख्या–58
24. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
25. सूत्र 4/1/16 पृष्ठ संख्या–88
26. सूत्र 3/1/136 पृष्ठ संख्या–56
27. सूत्र 3/1/144 पृष्ठ संख्या–53
28. सूत्र 3/2/20 पृष्ठ संख्या–55
29. सूत्र 3/3/99 पृष्ठ संख्या–73
30. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
31. सूत्र 3/1/135 पृष्ठ संख्या–53
32. सूत्र 3/3/88 पृष्ठ संख्या–72
33. सूत्र 3/1/124 पृष्ठ संख्या–52
34. सूत्र 3/3/10 पृष्ठ संख्या–67
35. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
36. सूत्र 3/2/1 पृष्ठ संख्या–54
37. सूत्र 3/3/58 पृष्ठ संख्या–70
38. सूत्र 3/3/88 पृष्ठ संख्या–72
39. सूत्र 4/4/20 पृष्ठ संख्या–126
40. सूत्र 4/4/20 पृष्ठ संख्या–126
41. सूत्र 7/3/102 पृष्ठ संख्या–253
42. सूत्र 3/3/158 पृष्ठ संख्या–77
43. सूत्र 3/1/138 पृष्ठ संख्या–53

44. सूत्र 3/1/138 पृष्ठ संख्या–53
45. सूत्र 3/2/163 पृष्ठ संख्या–65
46. सूत्र 3/3/10 पृष्ठ संख्या–67
47. सूत्र 3/3/121 पृष्ठ संख्या–74
48. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
49. सूत्र 3/2/136 पृष्ठ संख्या–63
50. सूत्र 3/2/136 पृष्ठ संख्या–59
51. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
52. सूत्र 3/2/108 पृष्ठ संख्या–61
53. सूत्र 3/3/18 पृष्ठ संख्या–68
54. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
55. सूत्र 3/2/127 पृष्ठ संख्या–62
56. सूत्र 3/3/104 पृष्ठ संख्या–68
57. सूत्र 3/1/33 पृष्ठ संख्या–46
58. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
59. सूत्र 3/2/4 पृष्ठ संख्या–54
60. सूत्र 3/2/139 पृष्ठ संख्या–63
61. सूत्र 3/2/136 पृष्ठ संख्या–63
62. सूत्र 3/2/140 पृष्ठ संख्या–63
63. सूत्र 3/2/60 पृष्ठ संख्या–58
64. सूत्र 3/4/72 पृष्ठ संख्या–84
65. सूत्र 3/2/166 पृष्ठ संख्या–65
66. सूत्र 3/2/168 पृष्ठ संख्या–65
67. सूत्र 3/1/99 पृष्ठ संख्या–50
68. सूत्र 3/4/49 पृष्ठ संख्या–82
69. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
70. सूत्र 3/2/78 पृष्ठ संख्या–59
71. सूत्र 1/2/76 पृष्ठ संख्या–59
72. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
73. सूत्र 1/2/124 पृष्ठ संख्या–62
74. सूत्र 3/4/72 पृष्ठ संख्या–84
75. सूत्र 3/1/140 पृष्ठ संख्या–53
76. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
77. सूत्र 3/3/94 पृष्ठ संख्या–72
78. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
79. सूत्र 3/2/97 पृष्ठ संख्या–60
80. सूत्र 3/2/182 पृष्ठ संख्या–66
81. सूत्र 3/3/94 पृष्ठ संख्या–72
82. सूत्र 3/3/58 पृष्ठ संख्या–70
83. सूत्र 3/3/58 पृष्ठ संख्या–70
84. सूत्र 3/2/78 पृष्ठ संख्या–59
85. सूत्र 3/2/168 पृष्ठ संख्या–65
86. सूत्र 3/2/126 पृष्ठ संख्या–63

87. सूत्र 3/2/76 पृष्ठ संख्या–59
88. सूत्र 3/3/92 पृष्ठ संख्या–72
89. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
90. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
91. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
92. सूत्र 3/3/10 पृष्ठ संख्या–67
93. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
94. सूत्र 3/4/56 पृष्ठ संख्या–83
95. सूत्र 3/4/56 पृष्ठ संख्या–83
96. सूत्र 3/3/104 पृष्ठ संख्या–73
97. सूत्र 3/2/78 पृष्ठ संख्या–59
98. सूत्र 3/3/113 पृष्ठ संख्या–74
99. सूत्र 3/3/104 पृष्ठ संख्या–73
100. सूत्र 3/3/18 पृष्ठ संख्या–68
102. सूत्र 7/4/42 पृष्ठ संख्या–257
103. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
104. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
105. सूत्र 3/1/124 पृष्ठ संख्या–52
106. सूत्र 3/3/19 पृष्ठ संख्या–68
107. सूत्र 3/2/4 पृष्ठ संख्या–54
108. सूत्र 3/2/76 पृष्ठ संख्या–59
109. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
110. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
111. सूत्र 3/2/140 पृष्ठ संख्या–63
112. सूत्र 3/1/56 पृष्ठ संख्या–70
113. सूत्र 3/3/64 पृष्ठ संख्या–71
114. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
115. सूत्र 3/2/97 पृष्ठ संख्या–60
116. सूत्र 3/2/166 पृष्ठ संख्या–65
117. सूत्र 3/2/168 पृष्ठ संख्या–65
118. सूत्र 3/1/124 पृष्ठ संख्या–52
119. सूत्र 3/3/119 पृष्ठ संख्या–85
120. सूत्र 3/2/166 पृष्ठ संख्या–66
121. सूत्र 3/3/19 पृष्ठ संख्या–73
122. सूत्र 3/3/4 पृष्ठ संख्या–68
123. सूत्र 3/2/140 पृष्ठ संख्या–63
124. सूत्र 3/2/165 पृष्ठ संख्या–65
125. सूत्र 3/4/72 पृष्ठ संख्या–84
126. सूत्र 3/2/16 पृष्ठ संख्या–55
127. सूत्र 3/3/73 पृष्ठ संख्या–71
128. सूत्र 3/3/76 पृष्ठ संख्या–71
129. सूत्र 3/2/154 पृष्ठ संख्या–64
130. सूत्र 3/4/29 पृष्ठ संख्या–81

131. सूत्र 3/4/29 पृष्ठ संख्या–81
132. सूत्र 3/3/90 पृष्ठ संख्या–72
133. सूत्र 3/3/103 पृष्ठ संख्या–73
134. सूत्र 4/1/4 पृष्ठ संख्या–88
135. सूत्र 7/4/54 पृष्ठ संख्या–258
136. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
137. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
138. सूत्र 3/2/78 पृष्ठ संख्या–59
139. सूत्र 3/3/57 पृष्ठ संख्या–70
140. सूत्र 3/3/18 पृष्ठ संख्या–68
141. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
142. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
143. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
144. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
145. सूत्र 3/2/78 पृष्ठ संख्या–59
146. सूत्र 3/2/167 पृष्ठ संख्या–65
147. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
148. सूत्र 3/1/135 पृष्ठ संख्या–53
149. सूत्र 3/3/121 पृष्ठ संख्या–74
151. सूत्र 3/2/61 पृष्ठ संख्या–58
152. सूत्र 3/3/94 पृष्ठ संख्या–72
153. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
154. सूत्र 7/1/1 पृष्ठ संख्या–230
155. सूत्र 3/2/101 पृष्ठ संख्या–61
156. सूत्र 3/2/154 पृष्ठ संख्या–64
157. सूत्र 3/3/98 पृष्ठ संख्या–73
158. सूत्र 3/2/160 पृष्ठ संख्या–65
159. सूत्र 3/2/163 पृष्ठ संख्या–65
160. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
161. सूत्र 3/3/93 पृष्ठ संख्या–72
162. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
163. सूत्र 7/4/42 पृष्ठ संख्या–257
164. सूत्र 3//124 पृष्ठ संख्या–62
165. सूत्र 6/4/77 पृष्ठ संख्या–211
166. सूत्र 3/3/14 पृष्ठ संख्या–68
167. सूत्र 3/2/168 पृष्ठ संख्या–75
168. सूत्र 3/2/4 पृष्ठ संख्या–54
169. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
170. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
171. सूत्र 7/4/54 पृष्ठ संख्या–258
172. सूत्र 3/1/135 पृष्ठ संख्या–53
173. सूत्र 3/1/133 पृष्ठ संख्या–53
174. सूत्र 3/1/33 पृष्ठ संख्या–248

175. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
176. सूत्र 3/1/133 पृष्ठ संख्या–53
177. सूत्र 3/2/78 पृष्ठ संख्या–59
178. सूत्र 3/4/72 पृष्ठ संख्या–84
179. सूत्र 3/3/121 पृष्ठ संख्या–74
180. सूत्र 3/2/94 पृष्ठ संख्या–60
181. सूत्र 3/2/139 पृष्ठ संख्या–63
182. सूत्र 3/3/94 पृष्ठ संख्या–72
183. सूत्र 3/3/98 पृष्ठ संख्या–71
184. सूत्र 3/2/173 पृष्ठ संख्या–65
185. सूत्र 3/4/74 पृष्ठ संख्या–84
186. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
187. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
188. सूत्र 7/3/67 पृष्ठ संख्या–251
189. सूत्र 3/1/17 पृष्ठ संख्या–45
190. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
191. सूत्र 5/3/63 पृष्ठ संख्या–159
192. सूत्र 3/3/76 पृष्ठ संख्या–71
193. सूत्र 3/3/57 पृष्ठ संख्या–70
194. सूत्र 3/2/57 पृष्ठ संख्या–58
195. सूत्र 3/1/112 पृष्ठ संख्या–51
196. सूत्र 3/4/40 पृष्ठ संख्या–82
197. सूत्र 3/2/78 पृष्ठ संख्या–59
198. सूत्र 3/4/65 पृष्ठ संख्या–84
199. सूत्र 3/2/129 पृष्ठ संख्या–62
200. सूत्र 6/4/77 पृष्ठ संख्या–211
201. सूत्र 3/3/121 पृष्ठ संख्या–74
202. सूत्र 3/2/109 पृष्ठ संख्या–61
203. सूत्र 3/3/158 पृष्ठ संख्या–77
204. सूत्र 3/2/13 पृष्ठ संख्या–55
205. सूत्र 3/3/14 पृष्ठ संख्या–68
206. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
207. सूत्र 3/2/168 पृष्ठ संख्या–65
208. सूत्र 3/2/182 पृष्ठ संख्या–66
209. सूत्र 3/3/58 पृष्ठ संख्या–70
210. सूत्र 3/2/17 पृष्ठ संख्या–55
211. सूत्र 3/3/14 पृष्ठ संख्या–68
212. सूत्र 3/2/108 पृष्ठ संख्या–61
213. सूत्र 3/1/22 पृष्ठ संख्या–45
214. सूत्र 3/3/115 पृष्ठ संख्या–74
215. सूत्र 3/3/126 पृष्ठ संख्या–75
216. सूत्र 3/4/45 पृष्ठ संख्या–82
217. सूत्र 3/4/46 पृष्ठ संख्या–82

218. सूत्र 3/4/44 पृष्ठ संख्या–82
219. सूत्र 3/4/46 पृष्ठ संख्या–82
220. सूत्र 3/3/58 पृष्ठ संख्या–70
221. सूत्र 3/2/5 पृष्ठ संख्या–54
222. सूत्र 3/2/164 पृष्ठ संख्या–65
223. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
224. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
225. सूत्र 6/4/77 पृष्ठ संख्या–211
226. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
227. सूत्र 3/2/59 पृष्ठ संख्या–58
228. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
229. सूत्र 6/4/77 पृष्ठ संख्या–211
230. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
231. सूत्र 8/2/40 पृष्ठ संख्या–272
232. सूत्र 8/2/40 पृष्ठ संख्या–272
233. सूत्र 3/1/107 पृष्ठ संख्या–50
234. सूत्र 7/1/81 पृष्ठ संख्या–235
235. सूत्र 3/2/168 पृष्ठ संख्या–65
236. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
237. सूत्र 6/1/15 पृष्ठ संख्या–176
238. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
239. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
240. सूत्र 6/1/70 पृष्ठ संख्या–179
241. सूत्र 3/3/14 पृष्ठ संख्या–68
242. सूत्र 3/1/33 पृष्ठ संख्या–46
243. सूत्र 7/1/70 पृष्ठ संख्या–234
244. सूत्र 3/2/108 पृष्ठ संख्या–61
245. सूत्र 3/2/108 पृष्ठ संख्या–61
246. सूत्र 6/1/15 पृष्ठ संख्या–176
247. सूत्र 6/1/106 पृष्ठ संख्या–182
248. सूत्र 3/3/14 पृष्ठ संख्या–68
249. सूत्र 3/4/68 पृष्ठ संख्या–84
250. सूत्र 3/3/66 पृष्ठ संख्या–71
251. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
252. सूत्र 3/1/124 पृष्ठ संख्या–62
253. सूत्र 3/1/22 पृष्ठ संख्या–45
254. सूत्र 3/1/124 पृष्ठ संख्या–52
255. सूत्र 3/1/136 पृष्ठ संख्या–53
256. सूत्र 6/4/64 पृष्ठ संख्या–220
257. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
258. सूत्र 3/1/22 पृष्ठ संख्या–45
259. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
260. सूत्र 3/3/10 पृष्ठ संख्या–67

261. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
262. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
263. सूत्र 3/2/59 पृष्ठ संख्या–58
264. सूत्र 3/2/168 पृष्ठ संख्या–65
265. सूत्र 3/2/99 पृष्ठ संख्या–60
266. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
267. सूत्र 3/1/12 पृष्ठ संख्या–44
268. सूत्र 3/2/62 पृष्ठ संख्या–58
269. सूत्र 3/3/10 पृष्ठ संख्या–67
270. सूत्र 3/2/40 पृष्ठ संख्या–56
271. सूत्र 3/2/80 पृष्ठ संख्या–59
272. सूत्र 3/3/115 पृष्ठ संख्या–74
273. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
274. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
275. सूत्र 6/4/77 पृष्ठ संख्या–211
276. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
277. सूत्र 3/2/76 पृष्ठ संख्या–59
278. सूत्र 3/2/1 पृष्ठ संख्या–54
279. सूत्र 3/4/34 पृष्ठ संख्या–89
280. सूत्र 3/4/54 पृष्ठ संख्या–83
281. सूत्र 3/3/126 पृष्ठ संख्या–75
282. सूत्र 3/3/57 पृष्ठ संख्या–70
283. सूत्र 3/3/57 पृष्ठ संख्या–70
284. सूत्र 3/2/109 पृष्ठ संख्या–61
285. सूत्र 3/2/62 पृष्ठ संख्या–58
286. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
287. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
288. सूत्र 3/2/109 पृष्ठ संख्या–61
289. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
290. सूत्र 3/2/168 पृष्ठ संख्या–65
291. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
292. सूत्र 3/3/18 पृष्ठ संख्या–68
293. सूत्र 3/4/24 पृष्ठ संख्या–77
294. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
295. सूत्र 3/3/94 पृष्ठ संख्या–72
296. सूत्र 3/3/92 पृष्ठ संख्या–92
297. सूत्र 6/1/16 पृष्ठ संख्या–176
298. सूत्र 3/3/99 पृष्ठ संख्या–73
299. सूत्र 3/4/52 पृष्ठ संख्या–82
300. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
301. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
302. सूत्र 3/2/103 पृष्ठ संख्या–61
303. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232

304. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
305. सूत्र 3/2/38 पृष्ठ संख्या–55
306. सूत्र 3/2/17 पृष्ठ संख्या–55
307. सूत्र 3/2/174 पृष्ठ संख्या–65
308. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
309. सूत्र 3/1/11 पृष्ठ संख्या–44
310. सूत्र 3/2/154 पृष्ठ संख्या–64
311. सूत्र 3/1/133 पृष्ठ संख्या–53
312. सूत्र 3/2/61 पृष्ठ संख्या–58
313. सूत्र 3/3/90 पृष्ठ संख्या–72
314. सूत्र 3/1/11 पृष्ठ संख्या–44
315. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
316. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
317. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
318. सूत्र 3/3/88 पृष्ठ संख्या–72
319. सूत्र 4/4/20 पृष्ठ संख्या–126
320. सूत्र 3/3/18 पृष्ठ संख्या–68
321. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
322. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
323. सूत्र 3/2/102 पृष्ठ संख्या–61
324. सूत्र 3/3/89 पृष्ठ संख्या–72
325. सूत्र 3/2/98 पृष्ठ संख्या–72
326. सूत्र 3/2/136 पृष्ठ संख्या–63
327. सूत्र 3/4/22 पृष्ठ संख्या–80
328. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
329. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
330. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
331. सूत्र 3/4/58 पृष्ठ संख्या–83
332. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
333. सूत्र 3/3/58 पृष्ठ संख्या–70
334. सूत्र 3/3/56 पृष्ठ संख्या–70
335. सूत्र 3/3/14 पृष्ठ संख्या–68
336. सूत्र 3/1/124 पृष्ठ संख्या–52
337. सूत्र 3/1/97 पृष्ठ संख्या–50
338. सूत्र 3/3/18 पृष्ठ संख्या–68
339. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
340. सूत्र 3/2/135 पृष्ठ संख्या–63
341. सूत्र 3/2/148 पृष्ठ संख्या–64
343. सूत्र 3/2/78 पृष्ठ संख्या–59
344. सूत्र 3/1/124 पृष्ठ संख्या–52
345. सूत्र 3/3/94 पृष्ठ संख्या–72
346. सूत्र 3/3/89 पृष्ठ संख्या–72
347. सूत्र 3/1/138 पृष्ठ संख्या–53

348. सूत्र 3/2/16 पृष्ठ संख्या–55
349. सूत्र 3/3/115 पृष्ठ संख्या–74
350. सूत्र 3/2/1 पृष्ठ संख्या–54
351. सूत्र 3/3/92 पृष्ठ संख्या–72
352. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
353. सूत्र 3/2/61 पृष्ठ संख्या–58
354. सूत्र 3/2/20 पृष्ठ संख्या–55
355. सूत्र 3/2/79 पृष्ठ संख्या–59
356. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
357. सूत्र 3/2/140 पृष्ठ संख्या–63
358. सूत्र 3/4/49 पृष्ठ संख्या–82
359. सूत्र 3/1/133 पृष्ठ संख्या–53
360. सूत्र 3/2/83 पृष्ठ संख्या–59
361. सूत्र 3/2/79 पृष्ठ संख्या–59
362. सूत्र 3/2/76 पृष्ठ संख्या–59
363. सूत्र 3/2/59 पृष्ठ संख्या–58
364. सूत्र 3/3/94 पृष्ठ संख्या–72
365. सूत्र 3/2/103 पृष्ठ संख्या–61
366. सूत्र 3/4/23 पृष्ठ संख्या–80
367. सूत्र 3/1/100 पृष्ठ संख्या–236
368. सूत्र 7/2/47 पृष्ठ संख्या–240
369. सूत्र 5/1/65 पृष्ठ संख्या–140
370. सूत्र 3/2/160 पृष्ठ संख्या–65
371. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
372. सूत्र 3/1/19 पृष्ठ संख्या–45
373. सूत्र 3/2/20 पृष्ठ संख्या–55
374. सूत्र 3/4/22 पृष्ठ संख्या–88
375. सूत्र 3/2/76 पृष्ठ संख्या–59
376. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
377. सूत्र 3/4/21 पृष्ठ संख्या–80
378. सूत्र 3/3/10 पृष्ठ संख्या–67
379. सूत्र 3/3/114 पृष्ठ संख्या–74
380. सूत्र 3/3/10 पृष्ठ संख्या–67
381. सूत्र 3/3/58 पृष्ठ संख्या–77
382. सूत्र 3/1/106 पृष्ठ संख्या–50
383. सूत्र 3/3/90 पृष्ठ संख्या–72
384. सूत्र 3/1/138 पृष्ठ संख्या–53
385. सूत्र 3/2/61 पृष्ठ संख्या–58
386. सूत्र 3/4/54 पृष्ठ संख्या–83
387. सूत्र 3/2/168 पृष्ठ संख्या–65
388. सूत्र 3/2/57 पृष्ठ संख्या–58
389. सूत्र 3/2/44 पृष्ठ संख्या–56
390. सूत्र 3/3/23 पृष्ठ संख्या–55

391. सूत्र 3/2/89 पृष्ठ संख्या–60
392. सूत्र 3/2/21 पृष्ठ संख्या–55
393. सूत्र 4/1/6 पृष्ठ संख्या–88
394. सूत्र 3/2/83 पृष्ठ संख्या–59
395. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
396. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
397. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
398. सूत्र 3/2/44 पृष्ठ संख्या–56
399. सूत्र 3/2/21 पृष्ठ संख्या–55
400. सूत्र 3/2/1 पृष्ठ संख्या–54
401. सूत्र 3/1/133 पृष्ठ संख्या–53
402. सूत्र 3/2/3 पृष्ठ संख्या–54
403. सूत्र 3/2/129 पृष्ठ संख्या–62
404. सूत्र 3/3/10 पृष्ठ संख्या–67
405. सूत्र 3/3/115 पृष्ठ संख्या–74
406. सूत्र 3/3/94 पृष्ठ संख्या–72
407. सूत्र 3/3/18 पृष्ठ संख्या–68
408. सूत्र 3/3/10 पृष्ठ संख्या–67
409. सूत्र 3/1/134 पृष्ठ संख्या–53
410. सूत्र 3/2/16 पृष्ठ संख्या–55
411. सूत्र 7/1/37 पृष्ठ संख्या–232
412. सूत्र 3/2/16 पृष्ठ संख्या–55
413. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
414. सूत्र 3/2/17 पृष्ठ संख्या–55
415. सूत्र 3/2/18 पृष्ठ संख्या–55
416. सूत्र 3/2/20 पृष्ठ संख्या–55
417. सूत्र 3/3/18 पृष्ठ संख्या–68
418. सूत्र 3/2/21 पृष्ठ संख्या–55
419. सूत्र 3/1/197 पृष्ठ संख्या–50
420. सूत्र 3/2/1 पृष्ठ संख्या–54
421. सूत्र 3/2/124 पृष्ठ संख्या–62
422. सूत्र 3/3/110 पृष्ठ संख्या–67